SAMPLE QUESTION PAPER—2025 (Solved)

(Issued by Central Board of Secondary Education, New Delhi)

कक्षा—बारहवीं

विषय—राजनीतिक विज्ञान

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश—

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उनका पालन करें।

1. इस प्रश्न पत्र में **30** प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रश्न पत्र पांच खंडों **A, B, C, D** और **E** में विभाजित है।
3. **खंड A** के प्रश्न संख्या **1** से **12** तक बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न **1** अंक का है।
4. **खंड B** के प्रश्न संख्या **13** से **18** लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **50** से **60** शब्दों में लिखें।
5. **खंड C** के प्रश्न संख्या **19** से **23** दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **100** से **120** शब्दों में लिखें।
6. **खंड D** के प्रश्न संख्या **24** से **26** पैसेज, कार्टून और मानचित्र आधारित प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर तदनुसार दीजिए।
7. **खंड E** के प्रश्न संख्या **27** से **30** दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न **6** अंक का है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **170** से **180** शब्दों में लिखें।
8. प्रश्न पत्र में कोई समग्र विकल्प नहीं है। हालाँकि कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिया गया है। ऐसे प्रश्नों में से केवल एक विकल्प का ही प्रयास करना होगा।

खंड—A

(वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न)

(12 × 1 = 12 अंक)

प्रश्न 1. सोवियत संघ के पतन के बाद शॉक थेरेपी शुरू की गई। शॉख थेरेपी के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?

(A) इस परिवर्तन में सोवियत ब्लॉक के देशों के बीच मौजूदा व्यापार गठबंधनों का टूटना शामिल था।

(B) शॉक थेरेपी में इन अर्थव्यवस्थाओं के बाह्य अभिविन्यास में भारी परिवर्तन शामिल था।

(C) एफ० डी० आई० और मुक्त व्यापार मुख्य इंजन होने थे।

(D) पूर्वी पूंजीवादी राज्यों ने क्षेत्र के विकास को निर्देशित और नियंत्रित किया।

उत्तर—(D) पूर्वी पूंजीवादी राज्यों ने क्षेत्र के विकास को निर्देशित और नियंत्रित किया।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

अभिकथन (A)—दिसंबर 1991 में, येल्तसिन के नेतृत्व में, यूएस एस आर के तीन प्रमुख गणराज्यों रूस, युक्रेन और जॉर्जिया ने घोषणा की कि सोवियत संघ विघटित हो गया है।

कारण (R)—राष्ट्रवाद के उद्य के कारण उत्तर-सोवियत गणराज्यों में विभिन्न विरोध प्रदर्शन हुए।

विकल्प :

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(C) (A) सत्य है, परन्तु (R) असत्य है।

(D) (A) असत्य है, परन्तु (R) सत्य है।

उत्तर—(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

प्रश्न 3. कॉलम 'A' में दिए गए शब्दों को कॉलम 'B' में दिए गए अर्थ से सही ढंग से मिलाएं और सही उत्तर के रूप में उपयुक्त कोड चुनें :

दिए गए पदों का मिलान करें और उचित विकल्प चुनें।

स्तंभ 'ए'	स्तंभ 'बी'
(I) विश्वास निर्माण उपाय	(*i*) कुछ प्रकार के हथियारों का त्याग करना
(II) शस्त्र नियंत्रण	(*ii*) राष्ट्रों के बीच रक्षा मामलों पर नियमित आधार पर सूचनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया।
(III) गठबंधन	(*iii*) राष्ट्रों का एक गठबंधन जिसका उद्देश्य सैन्य हमलों को रोकना या उनसे बचाव करना है।
(IV) निरस्त्रीकरण।	(*iv*) हथियारों के अधिग्रहण या विकास को नियंत्रित करता है।

विकल्प—

(A) I-(*ii*), II-(*iv*), III-(*iii*), IV-(*i*)

(B) I-(*ii*), II-(*i*), III-(*iii*), IV-(1)

(C) I-(*ii*), II-(*i*), III-(*iv*), IV-(*iii*)

(D) I-(*iv*), II-(*ii*), III-(*iii*), IV-(*i*)

उत्तर—(A) (*ii*), (B) (*iv*), (C) (*iii*), (D), (*i*)

प्रश्न 4. हाल के समय में, अधिकांश सशस्त्र संघर्ष निम्नलिखित स्थानों पर हुए हैं :

(A) पूर्वी यूरोप (B) दक्षिण एशिया

(C) मध्य पूर्व एशिया (D) उप-सहारा अफ्रीका

उत्तर—(D) उप-सहारा अफ्रीका।

प्रश्न 5. नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन I : संसाधन भूराजनीतिक शीत युद्ध के दौरान संसाधनों के आबंटन से संबंधित है।

कथन II : वैश्विक राजनीति में तेल को सबसे महत्वपूर्ण संसाधन माना जाता है।

उपरोक्त कथनों के आधार पर, नीचे दिए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं

(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सत्य है।

उत्तर—(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं

प्रश्न 6. निम्नलिखित को उनके गठन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें :

(*i*) ऊर्जा संरक्षण अधिनियम

(*ii*) पेरिस जलवायु समझौता

(*iii*) विद्युत अधिनियम

(*iv*) मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल

सही विकल्प चुनें:

(A) (*i*), (*ii*), (*iii*), (*iv*) (B) (*ii*) (*iv*), (*i*), (*iii*)

(C) (*iv*), (*i*), (*iii*), (*ii*) (D) (*iii*) (*i*), (*ii*), (*iv*)

उत्तर—(D) (*iii*) (*i*), (*ii*), (*iv*)

प्रश्न 7. भारत में ''एक-पार्टी प्रभुत्व का युग'' से तात्पर्य किस काल से है?

(A) 1952 से 1962 तक (B) 1977 से 1984

(C) 1989 से 1996 (D) 1998 से 2004

उत्तर—(A) 1952 से 1962 तक

प्रश्न 8. गलत जोड़ी पहचानें और लिखें :

(A) डॉ० बी० आर० अंबेडकर-भारतीय संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष

(B) मौलाना अबदुल कलाम आज़ाद-भारत के पहले शिक्षा मंत्री

(C) राजकुमारी अमृत कौर भारत की पहली स्वास्थ्य मंत्री

(D) आचार्य नरेन्द्र देव-भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष।

उत्तर—(D) आचार्य नरेन्द्र देव-भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष।

प्रश्न 9. किस सम्मेलन ने नव स्वतंत्र एशियाई और अफ्रीकी देशों के साथ भारत के जुड़ाव को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया?

(A) मलेशियाई सम्मेलन

(B) सिंगापुर सम्मेलन

(C) बांडुंग सम्मेलन

(D) मिस्र सम्मेलन।

उत्तर—(D) मिस्र सम्मेलन।

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किस मुद्दे के कारण 1956 में ब्रिटेन ने मिस्र पर हमला किया?

(A) स्वेज नहर मुद्दा

(B) सूज़ौ नहर मुद्दा

(C) पनामा नहर मुद्दा

(D) ब्रुग्स नहर मुद्दा।

उत्तर—(A) स्वेज नहर मुद्दा

प्रश्न 11. 'बोडो' भारत के राज्य ..... में एक समुदाय है।

(A) अरुणाचल प्रदेश

(B) असम

(C) मणिपुर

(D) मिजोरम।

उत्तर—(A) अरुणाचल प्रदेश।

प्रश्न 12. 1953 में नियुक्त राज्य पुनर्गठन आयोग (एस आर सी) ने किस सिद्धांत के आधार पर राज्यों के प्रथम पुनर्गठन की सिफारिश की थी?

(A) आर्थिक व्यवहार्यता

(B) भौगोलिक सन्निहितता

(C) भाषाई एकता

(D) ऐतिहासिक महत्व

उत्तर—(C) भाषाई एकता।

खंड—B

(6 × 2 = 12 अंक)

प्रश्न 13. 'परमाणु हथियारों का राज्यों के लिए समकालीन सुरक्षा खतरों के विरुद्ध निवारण या बचाव के रूप में सीमित उपयोग है। 'कथन की व्याख्या करें।

उत्तर—एक निवारण के रूप में परमाणु हथियारों का समकालीन सुरक्षा खतरों के विरुद्ध निम्नलिखित राज्यों में सीमित उपयोग है—

(1) परमाणु हथियारों का उद्देश्य अन्य राज्यों को आक्रमण करने से रोकना है।

(2) हर कोई जानता है कि परमाणु हर किसी के लिए आपदा होगी।

प्रश्न 14. दो उदाहरणों की सहायता से दर्शाइए कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद दक्षिण एशिया में संयुक्त राज्य अमेरिका की भागीदारी बढ़ गई है।

उत्तर—(1) अमेरिका ने 2003 में अफगानिस्तान पर हमला किया।

(2) बी० एस० ए० ने भारत के साथ असैन्य परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

प्रश्न 15. अब यह लगभग सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत दृष्टिकोण बन गया है कि देशों को केवल सही कारणों से ही युद्ध करना चाहिए। उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर—हाँ, यह अब लगभग सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत दृष्टिकोण है कि देशों को केवल सही वास्तविकता के लिए युद्ध करना चाहिए। उदाहरण के लिए, रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध, जो फरवरी 2022 से चल रहा है, वास्तविक नहीं है।

कुछ देशों और विशेषज्ञों का मानना है कि इस युद्ध को बिना किसी सहयोग के रोका जाना चाहिए। भारत भी इस युद्ध के शांतिपूर्ण अंत के पक्ष में है।

प्रश्न 16. क्या भारत में 'एकदलीय प्रभुत्व' की व्यापकता ने भारतीय राजनीति की लोकतांत्रिक प्रकृति को प्रभावित किया? अपनी राय व्यक्त करें।

उत्तर—1967 से पहले केंद्र और राज्यों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दबदबा था। 'एक पार्टी के प्रभुत्व वाली व्यवस्था' के प्रचलन ने भारतीय राजनीति की लोकतांत्रिक प्रकृति पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। वास्तव में, एक पार्टी का प्रभुत्व लोकतंत्र के विरुद्ध है क्योंकि अन्य राजनीतिक दल पनप नहीं पाते। संगठित विपक्ष की कमी के कारण, कांग्रेस पार्टी ने लोगों से किए गए वादों को कभी पूरा नहीं किया। कांग्रेस लंबे समय तक सत्ता में रही और इसलिए किसी अन्य पार्टी को शासन करने का मौका नहीं मिला। इसका प्रशासन भी लगभग अक्षम हो गया है, जिससे व्यापक भ्रष्टाचार हो रहा है।

प्रश्न 17. भारत के 1952 के आम चुनाव विश्व भर में लोकतंत्र के इतिहास में मील का पत्थर क्यों बन गए? दो कारण बताइए।

उत्तर—1. पहला आम चुनाव लोकतंत्र के इतिहास में एक मील का पत्थर था क्योंकि इसमें 17 करोड़ से अधिक मतदाता थे, जो पूरे विश्व में अपने आप में एक रिकॉर्ड था।

(पहले आम चुनाव सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (टीडी) के आधार पर आयोजित किए गए थे, जबकि यूरोप के कई देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। भारत में सभी वयस्क नागरिकों को वोट देने का अधिकार दिया गया था।

प्रश्न 18. दो विकास मॉडलों की सूची बनाइए और बताइए कि भारत द्वारा अपनाए गए मॉडल ने भारत की आर्थिक नीतियों को किस प्रकार प्रभावित किया। **1+1 = 2**

उत्तर—स्वतंत्रता के समय भारत के सामने विकास के दो मॉडल थे: उदार-पूंजीवादी मॉडल और समाजवादी मॉडल। उदार-पुंजीवादी मॉडल का पालन यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका ने किया जबकि समाजवादी मॉडल का पालन यू० एस० एस० आर० और अन्य साम्यवादी देशों ने किया। भारत में कई नेता और विद्वान थे जो विकास के सोवियत मॉडल से बहुत प्रभावित थे। कम्युनिस्ट पार्टी, समाजवादी पार्टी और यहां तक कि कांग्रेस के भीतर पंडित नेहरू जैसे लोकतांत्रिक समाजवादी भी विकास के सोवियत मॉडल के समर्थक थे।

खंड— C

(5 × 4 = 20 अंक)

प्रश्न 19. राज्य नीति के चार निर्देशक सिद्धांतों की सूची बनाएं जिनका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना है।

उत्तर—भारतीय संविधान के अध्याय IV के अनुच्छेद 51 में कुछ सिद्धांत दिए गए हैं जो भारतीय विदेश नीति का आधार हैं। भारतीय विदेश नीति के संवैधानिक आधार निम्नलिखित हैं :

(1) अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना।

(2) विभिन्न राष्ट्रों के साथ न्यायपूर्ण एवं सम्मानजनक संबंध स्थापित करना।

(3) संगठित लोगों के बीच एक दूसरे के साथ व्यवहार में अंतर्राष्ट्रीय कानून और संधि दायित्वों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना।

(4) मध्यस्थता द्वारा अंतर्राष्ट्रीय विवादों के निपटारे को प्रोत्साहित करना।

प्रश्न 20. उन घटनाओं का वर्णन करें जिनके कारण सिक्किम का भारत में विलय हुआ।

उत्तर—स्वतंत्रता के समय सिक्किम भारत का 'संरक्षित राज्य' था। इसका मतलब है कि सिक्किम पूरी तरह से संप्रभु देश नहीं था लेकिन यह भारत का हिस्सा भी नहीं था। सिक्किम में चोग्याल के साथ राजशाही शासन था और रक्षा और विदेशी संबंधों की देखभाल भारत करता था। लोगों की लोकतांत्रिक आकांक्षा के कारण, चोग्याल राजाओं को लोगों के विरोध का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि वे लेप्चा-भूटिया समुदाय के एक छोटे समूह की मदद से शासन कर रहे थे, जबकि सिक्किम की अधिकांश आबादी नेपाली थी। चोग्याल विरोधी लोगों को भारत से समर्थन मिला और 1974 में सिक्किम विधानसभा का पहला लोकतांत्रिक चुनाव हुआ और बहुमत ने भारत के साथ अधिक एकीकरण की मांग की। अंतत: 1975 में विधानसभा ने संगठित जनमत संग्रह के साथ भारत के पूर्ण एकीकरण के लिए एक प्रस्ताव पारित किया और लोकप्रिय स्वीकृति की मुहर लगाई। भारतीय संसद ने अनुरोध स्वीकार कर लिया और सिक्किम को भारतीय संघ का 22 वां राज्य बना दिया गया।

प्रश्न 21. ''सोवियत संघ का विघटन कई अलग-अलग कारकों का परिणाम था।'' इस कथन का औचित्य सिद्ध करें।

उत्तर—निम्नलिखित मुख्य बाधाएं थीं।

(1) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ एक महान शक्ति बन गया। हथियारों की दौड़ में सोवियत संघ अमेरिकी ब्लॉक से बराबरी करने में कामयाब रहा, लेकिन उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। महाशक्ति की स्थिति बनाए रखने के लिए, यू एस एस आर को बड़ी सेना रखने और सहयोगियों को वित्तीय और सैन्य सहायता देने के लिए बहुत अधिक खर्च करना पड़ा। लेकिन यू एस एस आर की अर्थव्यवस्था ठीक नहीं थी। 1980 में सोवियत अर्थव्यवस्था बहुत निचले स्तर पर थी और स्थिर हो गई थी।

(2) सोवियत संघ प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे आदि में पश्चिम से पीछे था।

(3) सोवियत प्रणाली बहुत नौकरशाही और सत्तावादी थी और नागरिक राजनीतिक व्यवस्था से खुश नहीं थे। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजनीतिक अधिकारों के अभाव ने लोगों में निराशा पैदा की।

(4) कम्यूनिस्ट पार्टी सरकार और सभी संस्थाओं को नियंत्रित करती थी और लोगों के प्रति उत्तरदायी नहीं थी। कोई विपक्षी पार्टी नहीं थी और कोई लोकतांत्रिक (मूल्य) नहीं था।

अथवा

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P.) LTD.

'अधिकांश पूर्व सोवियत गणराज्यों में तनाव और संघर्ष थे। उदाहरणों के साथ इस कथन का समर्थन करें।

उत्तर—पूर्व सोवियत गणराज्य में तैनात और संघर्ष के मुद्दे निम्नलिखित हैं :

(*i*) अधिकांश पूर्व सोवियत गणराज्य संघर्ष, गृह युद्ध और विद्रोह से ग्रस्त थे।

(*ii*) मध्य एशिया में चेचन्या और दागेस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चल रहे थे।

(*iii*) अज़रबैजान और जॉर्जिया के बीच गृह युद्ध हुआ।

(*iv*) चेकोस्लोवाकिया को दो भागों में विभाजित कर दिया गया– चेक और स्लोवाकिया।

विशाल हाइड्रोकार्बन संसाधनों वाला मध्य एशिया बाहरी शक्तियों और तेल कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बन गया है।

प्रश्न 22. (A) वैश्वीकरण के किन्हीं दो राजनीतिक परिणामों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर—ग्लोबल शब्द का शाब्दिक अर्थ है, ग्लोब से संबंधित होना, जिसका अर्थ है 'मानव जाति के प्राकृतिक आवास यानी वैश्विक ग्रह पृथ्वी से जुड़ा हुआ होना।' वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ग्रह पृथ्वी को एक एकल इकाई माना जाता है जहाँ लोगों के बीच सामाजिक-आर्थिक संपर्क परस्पर निर्भरता पर आधारित होते हैं।

वैश्वीकरण के मुख्य राजनीतिक परिणाम निम्नलिखित हैं:

(*i*) वैश्वीकरण ने कुछ गतिविधियों को विनियमित करने की शक्ति सरकारों से अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को स्थानांतरित कर दी है, जो अप्रत्यक्ष रूप से बहुराष्ट्रीय गतिविधियों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

(*ii*) विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन सभी देशों के लिए नियम और विनियम बनाते हैं।

अथवा

(B) भारत में वैश्वीकरण के प्रतिरोध के किन्हीं दो कारणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर—वैश्वीकरण का भारत पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है और भारत ने भी वैश्वीकरण पर व्यापक प्रभाव डाला है।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक और प्रसंस्करण उद्योग के क्षेत्र में कई विदेशी कंपनियों ने भारत में अपनी इकाइयां स्थापित की हैं। कई उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें टी०वी०, रेडियो, एयर-कंडीशनर जैसी सुविधाएं कम हो गई हैं। दूरसंचार क्षेत्र ने जबरदस्त विकास किया है। लोग कई टी०वी० चैनल देख सकते हैं। मोबाइल फोन हर जगह और आम लोगों तक पहुँच गए हैं। दुनिया में वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ गई है।

लेकिन वैश्वीकरण का अनुसरण करने के कारण भारत में इसका विरोध किया गया।

(1) भारत में वैश्वीकरण का विरोध इसलिए किया गया क्योंकि अमीर और गरीब के बीच की खाई काफी बढ़ गई।

(2) अमेरिकी और यूरोपीय कम्पनियों द्वारा नीम जैसे कुछ पौधों के पेटेंट का विरोध शुरू हो गया।

प्रश्न 23. उन कारकों पर प्रकाश डालिए जिनके कारण 1989 के बाद से भारतीय राजनीति में बहुदलीय गठबंधन प्रणाली अस्तित्व में आई।

उत्तर—भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली में गठबंधन युग के उदय के निम्नलिखित कारण थे :

(1) कांग्रेस के विभाजन और बहुमत हासिल करने में विफलता के साथ भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में गठबंधन युग आया।

(2) कांग्रेस के विरुद्ध एक मजबूत मोर्चा बनाना, कई राजनीतिक दलों की बैठक हुई जिसके परिणामस्वरूप गठबंधन सरकार का गठन हुआ।

(3) सत्ता और पद के लालच के कारण गठबंधन युग का उदय हुआ।

(4) केन्द्र और राज्य के बीच विवाद भी भारतीय लोकतंत्र में गठबंधन युग के उदय का कारण बने।

खंड—D

(3 × 4 = 12 अंक)

प्रश्न 24. नीचे दिए चित्र का अध्ययन करें और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें—

सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें :

(*i*) कार्टून में लाइटर किसका प्रतीक है?

(A) पृथ्वी का ईंधन के स्रोत के रूप में उपभोग किया जा रहा है

(B) ऊर्जा के लिए जलाए जा रहे महाद्वीप

(C) दुनिया का उपयोग शक्ति के लिए किया जा रहा है।

(D) महासागरों का उसके संसाधनों के लिए दोहन किया जा रहा है।

उत्तर—(B)ऊर्जा के लिए जलाए जा रहे महाद्वीप

***(ii)* कार्टून में उंगलियों को चिमनी की तरह क्यों डिज़ाइन किया गया है?**

(A) यह दर्शाना कि मनुष्य पृथ्वी को सहारा दे रहे हैं

(B) यह दिखाने के लिए कि केवल मनुष्य ही ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार हैं

(C) कारखानों की सफाई में चिमनियों के महत्व को दर्शाना

(D) औद्योगिक क्रांति का महत्व दर्शाने के लिए

उत्तर—(D) औद्योगिक क्रांति का महत्व दर्शाने के लिए।

***(iii)* कार्टून का मुख्य विषय हो सकता है :**

(A) तकनीकी उन्नति का उत्सव

(B) वनों की कटाई का वन्य जीवों पर प्रभाव

(C) ग्लोबल वार्मिंग में औद्योगिक प्रदूषण की भूमिका

(D) ग्रह को बचाने के लिए अपशिष्ट को कम करने का महत्व

उत्तर—(C) ग्लोबल वार्मिंग में औद्योगिक प्रदूषण की भूमिका।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*iv*) लाइटर के पुश बटन पर मोटी चिमनी दिखाई गई है जिससे यह पता चलता है कि—

(A) केवल मनुष्य ही प्रदूषण रोक सकता है।

(B) केवल विकसित देश ही प्रदूषण में योगदान देते हैं

(C) कारखानों को बंद करके प्रदूषण पर अंकुश लगाया जा सकता है से

(D) पृथ्वी को बचाने के लिए चिमनियों को अधिक कुशल बनाने की आवश्यकता है।

उत्तर—(A) केवल मनुष्य ही प्रदूषण रोक सकता है।

प्रश्न 25. भारत के दिए गए रूपरेखा राजनीतिक मानचित्र में चार राज्यों को (A), (B), (C) और (D) के रूप में चिह्नित किया गया है। नीचे दी गई जानकारी के आधार पर इन राज्यों की पहचान करें और उनके सही नाम अपनी उत्तर पुस्तिका में इस्तेमाल की गई जानकारी से संबंधित क्रम संख्या और संबंधित वर्णमाला के साथ नीचे दिए गए प्रारूप के अनुसार लिखें :

प्रयुक्त जानकारी के लिए क्रमांक	मानचित्र में वर्णमाला दी गई है	राज्य का नाम
I		
II		
III		
IV		

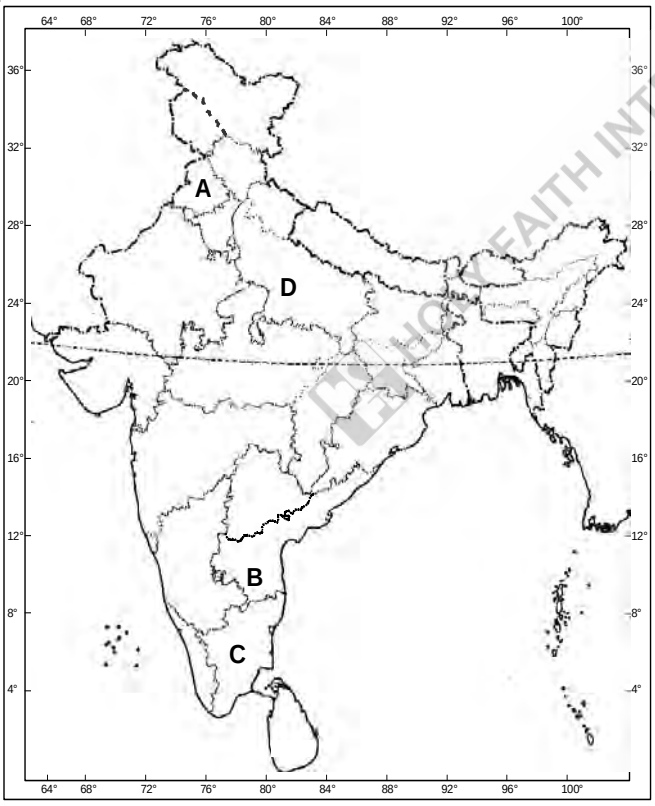

(*i*) वह राज्य जो उस नेता से संबंधित है जिसने प्रसिद्ध नारा 'जय जवान-जय किसान' गढ़ा था।

(*ii*) डीके, डीएमके और एआईएडीएमके के गठन से जुड़ा राज्य।

(*iii*) वह राज्य जहां 1967 के चुनाव के बाद 'लोकप्रिय संयुक्त मोर्चा' नामक गठबंधन सत्ता में आया।

(*iv*) 1969 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए आधिकारिक कांग्रेस उम्मीदवार इसी राज्य से थे।

उत्तर—प्रयुक्त जानकारी के लिए क्रमांक

प्रयुक्त जानकारी के लिए क्रमांक	मानचित्र में वर्णमाला दी गई है	राज्य का नाम
I	D	उत्तर प्रदेश
II	C	तमिलनाडु
III	A	पंजाब
IV	B	आंध्र प्रदेश

प्रश्न 26. निम्न स्रोत को पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्न के लिए सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें: **(1 + 1 + 2 = 4)**

अनेक संघर्षों के बावजूद, दक्षिण एशिया के देश आपस में सहयोग और मैत्रीपूर्ण संबंधों के महत्व को मसझते हैं। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) दक्षिण एशियाई देशों द्वारा बहुपक्षीय माध्यमों से सहयोग विकसित करने की एक प्रमुख क्षेत्रीय पहल है। इसकी शुरुआत 1985 में हुई थी। दुर्भाग्य से, राजनीतिक मतभेदों के चलते SAARC को ज़्यादा सफलता नहीं मिली है। SAARC सदस्यों ने दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार (SAFTA) समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें पूरे दक्षिण एशिया के लिए एक मुक्त व्यापार क्षेत्र के गठन का वादा किया गया था।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*i*) दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) की स्थापना का प्राथमिक लक्ष्य निम्नलिखित में से कौन सा था?

(A) एकीकृत सैन्य बल बनाना

(B) आपसी सहयोग बढ़ाना

(C) एक साझी मुद्रा विकसित करना

(D) सदस्य राज्यों के बीच क्षेत्रीय विवादों को हल करना।

उत्तर—(A) एकीकृत सैन्य बल बनाना

(*ii*) दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार समझौते (SAFTA) का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(A) निवेश के लिए सुरक्षित वातावरण बनाना।

(B) मुक्त एवं निष्पक्ष बाज़ार स्थापित करना।

(C) दक्षिण एशियाई वाणिज्य संघ का चैम्बर बनाना।

(D) सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा देना।

उत्तर—(B) मुक्त एवं निष्पक्ष बाज़ार स्थापित करना।

(*iii*) दक्षिण एशिया में सार्क के महत्व तथा सार्क की सीमित सफलता के लिए जिम्मेदार कारक की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—(*a*) सार्क ने 'खाद्य' भंडार पूल' बनाया है। इससे सार्क देशों में आत्मनिर्भरता और आत्म-सम्मान की भावना विकसित हुई है।

(*b*) सार्क ने अपने सदस्य देशों के बीच भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया है क्योंकि इसकी लगातार बैठकों ने उन्हें करीब आने और अपने विवादों को सुलझाने का मौका दिया है।

सार्क की सीमित सफलता के लिए जिम्मेदार कारक

(क) क्षेत्रीय संघर्ष (ख) आतंकवाद की समस्या।

खंड—E

(4 × 6 = 24 अंक)

प्रश्न 27. (A) 1989 से 1999 के बीच भारत में घटित किन्हीं तीन राजनीतिक घटनाक्रमों के प्रभाव का परीक्षण कीजिए।

उत्तर—1950 के दशक के अंत में घटित मुख्य घटनाक्रम जिनका भारत की राजनीति पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा, वे निम्नलिखित हैं:

(1) कांग्रेस प्रणाली का अंत : मुख्य घटना कांग्रेस के प्रभुत्व का अंत थी जो दो दशकों तक चली, क्योंकि पार्टी 1989 के चुनावों में हार गई। हालांकि पार्टी श्री राजीव गांधी की हत्या के बाद 1991 में सत्ता में वापस आ गई, लेकिन इसने पहले की तरह राजनीतिक परिदृश्य पर अपना प्रभुत्व खो दिया।

(2) मंडल मुद्दा : यह मुद्दा राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से शुरू हुआ जिसने 1990 में इसे लागू करने की सिफ़ारिश की थी, जिसके तहत केंद्र सरकार की नौकरियों में 27% आरक्षण केवल ओबीसी उम्मीदवारों के लिए था। इससे व्यापक आक्रोश पैदा हुआ और 1989 से राजनीति को आकार देने में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(3) नए आर्थिक सुधार : इन्हें संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम के रूप में घोषित किया गया था, जिसकी शुरुआत श्री राजीव गांधी ने की थी, लेकिन 1991 से श्री नरसिंह राव के कार्यकाल में ये अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे। उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को दुनिया के लिए खोल दिया और हमारे विदेशी भंडार में सुधार किया और उत्तरोत्तर सरकारों ने उनका व्यापक रूप से अनुसरण करना जारी रखा।

अथवा

(B) ''1989 के चुनावों ने कांग्रेस प्रणाली के अंत और गठबंधन युग के उद्य को चिह्नित किया।'' किसी भी तीन तर्कों के साथ कथन का समर्थन करें।

उत्तर—हाँ, यह सच है कि 1989 के चुनाव ने कांग्रेस प्रणाली के अंत और गठबंधन के उदय को चिह्नित किया, क्योंकि

(1) एकल पार्टी के प्रभुत्व का अंत। 1967 से पहले कांग्रेस पार्टी केंद्र के साथ-साथ राज्यों के राजनीतिक परिदृश्य पर हावी थी। 1977 में जनता पार्टी के गठन के साथ, कांग्रेस पार्टी का एकाधिकार थोड़े समय के लिए समाप्त हो गया। लेकिन जनवरी 1980 और दिसंबर 1984 के चुनावों में, कांग्रेस (आई) ने पूर्ण बहुमत हासिल किया।

हालाँकि, नवंबर 1989 में कांग्रेस का प्रभुत्व समाप्त हो गया, जब 9वें आम चुनावों में कांग्रेस बुरी तरह से पराजित हुई और अन्य पार्टियाँ पर्याप्त ताकत के साथ 9वीं लोकसभा में प्रवेश कर गईं। यह मई-जून 1991, अप्रैल-मई 1996, फरवरी-मार्च 1998 और इसी तरह दोहराया गया। 2014 में आयोजित 16वें लोकसभा चुनाव में, कांग्रेस को केवल 44 सीटें मिलीं। 17वीं लोकसभा चुनाव में, कांग्रेस पार्टी को केवल 52 सीटें मिलीं।

(2) राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के प्रभाव में कमी।

राष्ट्रीय राजनीति दलों का प्रभाव कम होता जा रहा है। 13वीं, 14 वीं और 15 वीं लोकसभा के चुनावों में किसी भी राष्ट्रीय राजनीतिक दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिला। इस प्रकार राष्ट्रीय दल केंद्र में सरकार बनाने के लिए क्षेत्रीय दलों पर निर्भर हो गए।

1989 के बाद क्षेत्रीय दलों का महत्व क्षेत्रीय दलों का बढ़ता प्रभाव भारतीय राजनीतिक का एक और बड़ा मुद्दा है। वर्तमान में 58 मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय दल हैं।

भारत में राष्ट्रीय राजनीति दलों के साथ-साथ कई क्षेत्रीय दल भी राज्य स्तर पर मौजूद हैं जो भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को बहुत प्रभावित करते हैं। आज भारत में शायद ही कोई ऐसा राज्य हो जहाँ क्षेत्रीय दल न हों। क्षेत्रीय दलों का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

प्रश्न 28. (A) 1947 में ब्रिटिश भारत के विभाजन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का वर्णन करें।

उत्तर—भारत का विभाजन निश्चित रूप से 1946 के मध्य तक संदेह में था। यहां तक कि कैबिनेट मिशन योजना ने भी स्पष्ट शब्दों में खारिज कर दिया था कि पाकिस्तान किसी भी तरह से भारत की सांप्रदायिक समस्या का समाधान नहीं है। लेकिन एक साल के भीतर ही यह एक स्थापित तथ्य बन गया। मौलाना आज़ाद सहित कुछ नेताओं का मानना था कि भारत का विभाजन पटेल और नेहरू की सोची-समझी पसंद थी। लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि जुलाई 1946 और मार्च 1947 के बीच कुछ घटनाओं के कारण भारत का विभाजन अपरिहार्य हो गया था।

1947 : अंतत : भारत का विभाजन 1997 में हुआ। विभाजन के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव निम्नलिखित हैं

(1) भारत और पाकिस्तान के बीच उपजाऊ भूमि के विभाजन के कारण देश में खाद्यान उत्पादन में कमी आई, और खाद्यान की कमी के साथ-साथ भारत को कच्चे कपास और कच्चे जूट के उत्पादन में भी कमी का सामना करना पड़ा।

(2) भ्रष्टाचार के कारण देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचा और गिरावट आई।

(3) मानव इतिहास में पार्टिशन के कारण ऑगर्ट मार्स का प्रवास हुआ।

अथवा

(B) भाषा ने हमेशा देश को एकजूट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के बाद भारत में राष्ट्र निर्माण की चुनौती के संदर्भ में इस कथन की व्याख्या करें।

उत्तर—भारत एक विशाल देश है, जिसमें विभिन्न जातियों, धर्मों और भाषाओं के लोग रहते हैं। ई० जी० रैपसन के शब्दों में, ''अब हम सामाजिक पैमाने के एक छोर पर से समुदाय पाते हैं, जिनके सदस्य 20वीं सदी के साहित्य और कला के विकास में योगदान दे रहे हैं और दूसरे छोर पर, जनजातियाँ अभी भी अपनी आदिम संस्थाओं द्वारा शासित हैं, अभी भी औजारों और हथियारों का उपयोग कर रही हैं और अभी भी दूर के पूर्वजों के धार्मिक विचारों और रीति-रिवाजों को बनाए हुए हैं।

पाषाण युग में। 'भारत अपनी सांस्कृतिक विविधताओं के साथ एक बहुभाषी राष्ट्र है।

1961 में दर्ज आंकड़ों के अनुसार भारत में 1081 भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें से 12 प्रमुख हैं। ये भाषाएँ हैं—हिंदी, पंजाबी, असमी, गुजराती, मराठी बंगाली उर्दू, सिंधी अंग्रेजी आदि।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

भारतीय भाषा समस्या की विशेषताएँ भाषा आयोग की रिपोर्ट के अनुसार समकालीन भारतीय भाषाओं की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) यद्यपि भारत में अनेक भाषाएँ हैं, फिर भी बारह मुख्य भाषाएँ हैं जो बड़ी संख्या में लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

(2) विविध समुदायों के बीच भाषाई एकता महत्वपूर्ण कारक है।

(3) हिंदी सभी भाषाओं में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत में अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है।

(4) यहां क्षेत्रीय भाषाएँ बोलने वाली लोगों की संख्या बहुत अधिक है।

स्वतंत्रता के बाद राज्यों का एकीकरण एक बड़ी समस्या थी क्योंकि भारतीय राज्यों को स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया था। सरदार पटेल ने अपने अथक प्रयासों से इन राज्यों को फिर से संगठित किया। लेकिन जलद ही भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग ने जोर पकड़ लिया। कांग्रेस ने जयपुर सम्मेलन में अपनी कार्यवाही के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के लिए एक समिति की स्थापना की। पंडित नेहरू ने इस मुद्दे पर निष्पक्ष विचार-विमर्श के लिए 2 दिसंबर, 1953 को लोकसभा में इस आयोग की नियुक्ति की घोषणा की। इस आयोग की अध्यक्षता फज्जल अली ने की और एसडी पन्निकर तथा हृदय मठ कुंजरू इसके सदस्य थे। आयोग ने भाषा और संस्कृति के आधार पर भी राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की।

सिफारिशें—राज्य पुनर्गठन आयोग की मुख्य सिफारिशें निम्न-लिखित थीं—

(1) एकभाषी राज्य में विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले अन्य समूदायों की सांस्कृतिक और संचार संबंधी आवश्यकताओं पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

(2) भाषाई अल्पसंख्यकों को अच्छी तरह से संरक्षित किया जाना चाहिए।

(3) हिंदी के अलावा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

(4) विश्वविद्यालयों और उच्च प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए।

(5) पृथक राष्ट्र के विचार को पूरी तरह से खारिज किया जाना चाहिए।

(6) 'एक भाषा, एक प्रांत' के विचार को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। एक भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन राष्ट्रीय एकीकरण के लिए घातक साबित होगा।

'राज्य पुनर्गठन आयोग' की रिपोर्ट पर विचार करने के बाद संघ सरकार ने 1956 में लोकसभा में 'राज्य पुनर्गठन विधेयक' प्रस्तुत किया, जिसे कुछ संशोधनों के बाद पारित कर दिया गया। राज्यों के पुनर्गठन के बाद भारतीय संघ में 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश शामिल हो गए।

प्रश्न 29. (A) सबसे प्रमुख क्षेत्रीय संगठन के रूप में यूरोपीय संघ की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें।

उत्तर—यूरोपीय संघ (ईयू) यूरोपीय देशों का एक बहुत मजबूत क्षेत्रीय संगठन है। यह विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यूरोपीय संघ को यूरोपीय कॉमन मार्केट या यूरोपीय कॉमन कम्यूनिटी भी कहा जाता है। थोड़े समय में ही यह एक बहुत शक्तिशाली आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रीय संगठन बन गया। वास्तव में यह एक सुपरनेशनल संगठन बन गया है। यूरोपीय संघ की अपनी संसद, अपना झंडा, राष्ट्रगान और अपनी मुद्रा है। यूरोपीय संघ का मुख्यालय ब्रुसेल्स (बेल्जियम) में है। यूरोपीय संघ की आधिकारिक भाषाओं में बल्गेरियाई, डेनिश, डच, इतालवी, रोमानियाई, स्पेनिश पोलिश स्वीडिश आदि (कुल 23) शामिल हैं।

***(i)* सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में यूरोपीय संघ**—यूरोपीय संघ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसका सकल घरेलू उत्पादन 2003 में 12 ट्रिलियन डॉलर से अधिक था, जो संयुक्त राज्य अमेरिका से थोड़ा बड़ा है। इसकी मुद्रा, यूरो अब अमेरिकी डॉलर के प्रभुत्व के लिए खतरा पैदा करने की स्थिति में है। विश्व व्यापार में इसका हिस्सा संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में तीन गुना अधिक है, जो इसे अमेरिका और चीन के साथ व्यापार विवादों में अधिक मुखर होने की अनुमति देता है। अपनी आर्थिक शक्ति के कारण, यह अपने पड़ोसियों के साथ-साथ एशिया और अफ्रीका पर भी बहुत प्रभाव डालता है। यह विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतराष्ट्रीय आर्थिक संगठन में एक महत्वपूर्ण ब्लॉक रूप में भी कार्य करता है।

***(ii)* यूरोपीय संघ का राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव**—यूरोपीय संघ राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव भी डालता है। फ्रांस संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य है। यूरोपीय संघ के कई सदस्य सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य हैं। इस प्रकार, यूरोपीय संघ सयुंकत राष्ट्र की नीतियों के साथ-साथ अमेरिका पर भी बहुत प्रभाव डालता है।

***(iii)* यूरोपीय संघ का सैन्य प्रभाव**—यूरोपीय संघ की संयुक्त सशस्त्र सेना दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी है। रक्षा पर इसका कुल खर्च अमेरिका, इंग्लैंड और फ्रांस के बाद दूसरे नंबर पर है, जिसके पास लगभग 550 परमाणु हथियार हैं।

इस प्रकार, यूरोपीय संघ एक सुपरनेशनल संगठन है और विश्व के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप कर सकता है।

अथवा

(B) इस तर्क के साथ समर्थन करें कि दक्षिण कोरिया एक नए वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में उभर रहा है।

उत्तर—दक्षिण कोरिया कोरियाई प्रायद्वीप का एक महत्वपूर्ण देश है। इसे कोरिया गणराज्य कहा जाता है। कोरियाई प्रायद्वीप को दक्षिण कोरिया और उत्तरी कोरिया में विभाजित किया गया था। दक्षिण कोरिया 1991 में संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन गया। इस बीच दक्षिण कोरिया निम्नलिखित कारणों से तेज़ी से एक शक्ति केंद्र के रूप में उभरा:

(1) दक्षिण कोरिया 1960 से 1980 तक तेजी से एक आर्थिक शक्ति के रूप में विकसित हुआ, जिसे ''हान नदी पर चमत्कार'' कहा जाता है।

(2) दक्षिण कोरिया 1996 में OCED का सदस्य बना।

(3) 2017 में दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था विश्व में 11 वें स्थान पर थी।

(4) दक्षिण कोरियाई सैन्य व्यव विश्व में 10वें स्थान पर है।

(5) मानव विकास रिपोर्ट 2016 में दक्षिण कोरिया 18वें स्थान पर है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(6) दक्षिण कोरिया ने सैमसंग, एलजी और हुंडई जैसी कुछ प्रसिद्ध कंपनियों का उत्पादन किया।

प्रश्न 30. (A) ''शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, संयुक्त राष्ट्र विश्व की बदली हुई वास्तविकताओं के अनुसार काम कर रहा है।'' इस कथन को छह तर्कों के साथ पुष्ट कीजिए।

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र युद्ध के प्रकोप से दुनिया को बचाने के लिए मनुष्य के प्रयासों का परिणाम है। संयुक्त राष्ट्र 24 अक्टूबर, 1945 को अस्तित्व में आया। संयुक्त राष्ट्र का मूल उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना है यद्यपि संयुक्त राष्ट्र दुनिया की सर्वांगीण प्रगति के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है, लेकिन यह कई मंचों पर विफल रहा है। यह कश्मीर समस्या को हल करने में विफल रहा है। इजरायल और अरब देशों के बीच विवाद अभी तक हल नहीं हुआ है। संयुक्त राष्ट्र अंगोला में गृह युद्ध की स्थिति से निपटने में भी विफल रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के समर्थन में निम्नलिखित है। इसका समाधान अभी तक नहीं हो पाया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के समर्थन में निम्नलिखित प्रमाण दिए जा सकते हैं।

(1) संयुक्त राष्ट्र संघ अमेरिका के सहयोग से विभिन्न ऑपरेटिंग सिस्टम समस्याओं को सुलझाने का प्रयास कर रहा है।

(2) संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व और क्षेत्रीय अंग के बीच समन्वय स्थापित करने का भी प्रयास कर रहा।

(3) संयुक्त राष्ट्र संघ अमेरिका की मदद से अविकसित देशों को सहायता देकर उनका विकास करने का प्रयास कर रहा है। यू-एनआर ओ अमेरिका की मदद से विभिन्न समस्याओं को सुलझाने की कोशिश कर रहा है।

(4) यूएनओ भी विश्व और क्षेत्रीय एंगान (रालेऑन) के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

(5) यू एन ओ दो देशों के बीच संघर्ष को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

(6) यू एन ओ अमेरिका की मदद से अविकसित देशों को सहायता देकर उनका विकास करने का प्रयास कर रहा है।

(7) संयुक्त राष्ट्र संघ अमेरिका की मदद से अविकसित देशों को सहायता देकर उनका विकास करने का प्रयास कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र विश्व के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए प्रयास कर रहा है।

अथवा

(B) ''संयुक्त राष्ट्र की स्थापना मानवता को स्वर्ग ले जाने के लिए नहीं, बल्कि उसे नरक से बचाने के लिए की गई थी।'' प्रासंगिक उदाहरणों के साथ कथन का समर्थन करें।

उत्तर—(1) संयुक्त राष्ट्र के दूसरे महासचिव डाग हैमरशॉल्ड रिहास ने सही कहा कि ''संयुक्त राष्ट्र की स्थापना मानवता को स्वर्ग तक ले जाने के लिए नहीं, बल्कि उसे नरक से बचाने के लिए की गई थी। हम उपरोक्त कथन के समर्थन में कुछ उदाहरण दे सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने 1946 में रूस-ईरान संघर्ष, 1946 में ग्रीस संघर्ष, 1956 में अरब इसराइल युद्ध, कांगो युद्ध और 1956 में कांगो युद्ध जैसे दो देशों के बीच संघर्ष और युद्ध को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लीबिया समस्या, पृथ्वी तिमुर समस्या और कुवैत-ट्रैकी संकट।

(2) संयुक्त राष्ट्र ने मानवता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(3) वी-एनओ ने शस्त्र नियंत्रण को समाप्त करने के लिए अथक प्रयास किए, इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए गए जैसे 1952 में पी-शस्त्रागर आयोग, 1966 में बाह्य अंतरिक्ष संधि, 1968 में एन० आर० टी० बी० टी० परमाणु ऊर्जा संधि आदि।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

MODEL ANSWERS

Holy Faith New Style Sample Paper–1

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उनका पालन करें।

1. इस प्रश्न पत्र में **30** प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रश्न पत्र पांच खंडों **A, B, C, D** और **E** में विभाजित है।
3. **खंड A** के प्रश्न संख्या **1** से **12** तक बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न **1** अंक का है।
4. **खंड B** के प्रश्न संख्या **13** से **18** लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **50** से **60** शब्दों में लिखें।
5. **खंड C** के प्रश्न संख्या **19** से **23** दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **100** से **120** शब्दों में लिखें।
6. **खंड D** के प्रश्न संख्या **24** से **26** पैसेज, कार्टून और मानचित्र आधारित प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर तदनुसार दीजिए।
7. **खंड E** के प्रश्न संख्या **27** से **30** दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न **6** अंक का है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **170** से **180** शब्दों में लिखें।
8. प्रश्न पत्र में कोई समग्र विकल्प नहीं है। हालाँकि कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिया गया है। ऐसे प्रश्नों में से केवल एक विकल्प का ही प्रयास करना होगा।
9. इसके अतिरिक्त, कृपया ध्यान दें दि दृश्य इनपुट, मानचित्र आदि वाले प्रश्नों के स्थान पर दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए एक अलग प्रश्न प्रदान किया गया है। ऐसे प्रश्न केवल दृष्टिबाधित उम्मीदवारों द्वारा ही हल किए जाने हैं।

खंड—क

1. (क) समाजवाद, समतावादी।

2. (ग) अमेरिका साम्यवाद को जड़ से उखाड़ने की योजना बना रहा है

3. (क) संयुक्त राष्ट्र ने ऑपरेशन डेजर्ट स्टॉर्म की अनुमति दे दी थी।

4. (ख) आसियान सदस्यों के बीच एक अनौपचारिक और सहयोगात्मक बातचीत है।

5. (घ) उपरोक्त सभी।

6. (क) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।

7. (घ) राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक।

8. (ग) सबसे पहले जूनागढ़ के शासक ने घोषणा की कि राज्य ने स्वतंत्रता का निर्णय ले लिया है।

9. (ग) विकासात्मक कार्यक्रमों के लिए धन की व्यवस्था करना।

10. (क) 1950 से 1970 के दशक तक।

11. (ख) असम।

12. (ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

खंड—ख

13. साम्यवादी देशों में अधिनायकवादी समाजवादी व्यवस्था विद्यमान थी। सोवियत संघ के विघटन के साथ ही देशों में सत्तावादी समाजवादी व्यवस्था से लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हुई और परिवर्तन को शॉक थेरेपी कहा जाता है।

14. शिमला तर्क की दो महत्वपूर्ण शर्तें नीचे दी गई हैं।

(1) दोनों देश विवादों और टकराव को द्विपक्षीय शांतिपूर्ण बातचीत से सुलझाएंगे।

(2) दोनों देश एक दूसरे की क्षेत्रीय अंखडता के विरूद्ध किसी भी प्रकार के मंच का प्रयोग नहीं करेंगे।

15. (1) भारत ने अपनी सैन्य शक्ति और क्षमताओं का निर्माण किया है।

(2) भारत ने अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों को मज़बूत किया है।

16. भारत का विभाजन सभी के लिए गलत/बुरा साबित हुआ क्योंकि उनमें से अधिकांश के लिए इसने दु:ख और समस्याओं का मार्ग प्रशस्त किया। विभाजन ने दंगों, लूट और हत्याओं की शुरुआत

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

की। सीमाओं के दोनों ओर जीवन और धन भौतिकवादी चीज़ों के लिए खतरों के साथ लगातार तनाव था।

17. विकास के पूंजीवादी और समाजवादी मॉडल के बीच अंतर इस प्रकार हैं—

(1) पूंजीवादी मॉडल बाज़ार में खुली प्रतिस्पर्द्धा में विश्वास करता है जबकि समाजवादी मॉडल उत्पादन और वितरण प्रणाली के राज्य नियंत्रण पर ज़ोर देता है।

(2) पूंजीवादी मॉडल अनुमति तथा लाइसेंस प्रणाली देने में विश्वास नहीं करता है जबकि समाजवादी मॉडल में अनुमति या लाइसेंस कारखाना मालिक को दिया जाता है।

18. (1) दल-बदल के कारण राजनीतिक व्यवस्था अस्थिर हो जाता है।

(2) दल-बदल के कारण राजनीतिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार बढ़ता है।

खंड—ग

19. (1) 1978 में डेंग जियाओपिंग ने चीन में 'ओपन डोर' नीति और आर्थिक सुधारों को अपनाया।

(2) चीन ने 1982 में कृषि क्षेत्र में निजीकरण शुरू किया।

(3) चीन ने 1998 में औद्योगिक क्षेत्र में निजीकरण शुरू किया।

(4) विशेष आर्थिक क्षेत्र से व्यापार बाधाएँ हटा दी गईं जहाँ विदेशी निवेशक अपने उद्यम स्थापित कर सकते थे।

अथवा

14 अप्रैल 2006 को नेपाल में लोकतंत्र की बहाली और राजा को उखाड़ फेंकने के लिए एक लोकप्रिय आंदोलन शुरू किए गया था।

देश के सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने सेवन पार्टी अलायंस (एसपीए) नामक एक गठबंधन बनाया और चार दिनों की हड़ताल का आह्वान किया। बाद में इसे अनिश्चित कालीन हड़ताल में बदल दिया गया और फिर इसमें माओवादी विद्रोही भी शामिल हो गये। सुरक्षा बल उन लाखों लोगों को तितर-बितर करने में असमर्थ रहे जिनकी मांग देश में लोकतंत्र बहाल करने की थी।

1 अप्रैल तक प्रदर्शनकारियों की संख्या 3-5 लाख हो गई और उन्होंने राजा को अल्टीमेटम दे दिया। उन्होंने आधे-अधूरे मन से उन मांगों को स्वीकार कर लिया और कुछ रियासतें दी लेकिन आंदोलन के नेताओं ने उन रियायतों को अस्वीकार कर दिया। 24 अप्रैल 2004 को किंग को दबाव के आगे झुकना पड़ा और उन्होंने उन सभी मांगों को स्वीकार कर लिया। संसद को बहाल किया गया। जिससे राजा की शक्तियां छीन ली गईं। इस तरह नेपाल में लोकतंत्र बहाल हो गया 20 सितंबर 2015 को नेपाल में नया संविधान लागू किया गया।

20. डब्ल्यूटीओ (विश्व व्यापार संगठन) का उदय वैश्वीकरण की एक और विशेषता है। W.T.O. 1 जनवरी, 1995 को माराकेश में अस्तित्व में आया। W.T.O. वैश्वीकरण प्रक्रिया का एक संकेत है। मार्टिन शॉ का मानना है कि हालांकि "W.T.O. पर पश्चिम का प्रभुत्व बना हुआ है और यह आंशिक रूप से अंतर-पश्चिमी आर्थिक मतभेदों को हल करने का एक मंच है, लेकिन इसे व्यापार को विनियमित करने के ढांचे के रूप में कमोबेश सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया गया है, जैसा कि 1996 में चीन के प्रवेश ने स्वीकार किया है।

वर्तमान में इसके 161 सदस्य हैं विश्व व्यापार संगठन प्रतिस्पर्धा, निवेश आदि से जुड़े व्यापार मुद्दों पर विचार विमर्श कर सर्वसम्मत सहमति प्राप्त कर विश्व व्यापार को एक आकार, क्रम और दिशा देने का प्रयास कर रहा है।

अथवा

गठबंधन का मतलब है जब दो या दो से अधिक देश सुरक्षा और आर्थिक विकास के लिए एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे के साथ गठबंधन करते हैं। गठबंधन के निम्नलिखित लाभ हैं—

(1) छोटे एवं अल्पविकसित राष्ट्र गंठबंधन या गठबंधनों द्वारा सुरक्षा प्राप्त करते हैं।

(2) गठबंधन के कारण अमित्र देश प्रतिद्वंद्वी पर हमला करने से हिचकिचाते हैं।

(3) कोई भी राष्ट्र गठबंधन के कारण अपने शत्रु का बहादुरी से सामना कर सकता है।

(4) गठबंधन के कारण जन एवं सामग्री की कमी हानि।

21. (1) अलग-अलग समय पर केंद्र सरकार को पूर्वोत्तर के लोगों द्वारा उठाई गई स्वायत्तता की मांग के जवाब में असम से मेघालय, मिज़ोरम और अरुणाचल प्रदेश का निर्माण करना पड़ा। त्रिपुरा और मणिपुर को भी राज्यों में अपग्रेड किया गया।

(2) उनकी स्वायत्तता की मांग को पूरा करने के लिए कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण प्रावधानों का इस्तेमाल किया गया। उदाहरण के लिए कार्बी और डिमासास को ज़िला परिषदों के तहत स्वायत्तता दी गई है जबकि बोडो को ज़िला परिषदों के तहत स्वायत्तता दी गई है। हाल ही में स्वायत्त परिषद् का दर्जा प्राप्त किया गया।

22. वैश्वीकरण के मुख्य राजनीतिक परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) वैश्वीकरण ने कुछ गतिविधियों को विनियमित करने की शक्ति सरकारों से अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को स्थानांतरित कर दी है जो अप्रत्यक्ष रूप से दुनिया भर में फैली हुई है।

(2) विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन सभी देशों के लिए नियम और विनियम बनाते हैं।

अथवा

वैश्वीकरण के खिलाफ जो तर्क दिए गए हैं वे इस प्रकार हैं—

(1) समकालीन वैश्वीकरण वैश्विक पूंजीवाद के एक विशेषचरण का प्रतिनिधित्व करता है जो अमीरों को अमीर बनाता है और गरीबों को गरीब बनाता है। यह तर्क वामपंथियों द्वारा दिया गया है।

(2) चूंकि वैश्वीकरण ने राज्य को कमज़ोर कर दिया है इसलिए वह गरीबों के हितों की रक्षा करने में असमर्थ है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (R) LTD.

23. पूर्व सोवियत संघ के एकात्मक विघटन के मुख्य कारण निम्नलिखित थे।

(1) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ एक महान शक्ति बन गया हथियारों की दौड़ में सोवियत संघ अमेरिकी बलों की बराबरी करने में कामयाब रहा लेकिन बड़ी कीमत पर। महाशक्ति की स्थिति बनाए रखने के लिए यूएसएसआर को बड़ी ताकतों को रखने और सहयोगियों को वित्तीय और सैन्य सहायता देने के लिए बहुत अधिक खर्च की आवश्यकता थी लेकिन यूएसएसआर की अर्थव्यवस्था अच्छी नहीं थी। 1980 में सोवियत अर्थव्यवस्था बहुत निचले स्तर पर थी और स्थिर हो गई थी।

(2) सोवियत संघ प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढाँचे आदि में पश्चिम से पिछड़ गया।

(3) सोवियत प्रणाली अत्यधिक नौकरशाही और सत्तावादी थी और नागरिक राजनीतिक व्यवस्था से खुश नहीं थे। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजनीतिक अधिकार के अभाव ने लोगों में निराशा पैदा की।

(4) कम्युनिस्ट पार्टी सरकार और सभी संस्थाओं को नियंत्रित करती हैं और लोगों के प्रति ज़िम्मेदार नहीं थी। वहां न तो कोई विपक्षी दल था और न ही कोई लोकतांत्रिक मूल्य।

(5) सोवियत संघ नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षा को पूरा करने में विफल रहा।

(6) अफगानिस्तान पर आक्रमण ने सोवियत संघ को आर्थिक और राजनीतिक रूप से कमज़ोर कर दिया।

अथवा

पूर्व सोवियत गणराज्य में तनाव और संघर्ष के मुद्दे निम्नलिखित हैं—

(1) अधिकांश पूर्व सोवियत गणराज्य संघर्ष, गृहयुद्धों और विद्रोहों से ग्रस्त थे।

(2) मध्य एशिया में चेंचन्या और दागेस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन थे।

(3) अजरबैजान और जॉर्जिया के बीच गृह युद्ध हुआ।

(4) चेकोस्लोवाकिया दो भागों चेक और स्लोवाकिया में विभाजित हो गया।

(5) विशाल हाइड्रोकार्बन संसाधनों वाला मध्य एशिया बाहरी शक्तियों और तेल कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा क्षेत्र बन गया।

(6) 9/11 के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका मध्य एशिया के क्षेत्र में सैन्य अड्डे स्थापित करने का इच्छुक था।

(7) हालाँकि, रूस चाहता है कि वे स्टा रूसी प्रभाव में रहें।

(8) चीन ने भी अपनी सीमाओं (एनए) के आसपास बसना शुरू कर दिया और अपने तेल संसाधनों तक पहुंच हासिल करने के लिए व्यापार करना शुरू कर दिया है।

खंड—घ

24. (A) (ख) सोवियत संघ का विघटन।

(B) (क) संयुक्त राज्य अमेरिका।

(C) (ग) रूस और यूक्रेन।

(D) (ग) सामूहिक कृषि प्रणाली मज़बूत हुई और खाद्य सुरक्षा सुनिशिचित हुई।

25. *i.* लाल बहादुर शास्त्री (उतर प्रदेश)

ii. तमिलनाडू

iii. पंजाब

iv. आन्दप्रदेश या कर्नाटक

26. (क) शांति, मित्रता और सहयोग की भारत-सोवियत संधि, 1971.

(ख) शांति, मित्रता सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद भी भारत एक गैर-देश बना रहा

(ग) भारत सोवियत मित्रता पर हस्ताक्षर किये गये। भारत की प्रतिद्वंदी ताकतें जैसे पाकिस्तान।

खंड—ङ

27. रूस के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण हैं। जनवरी 1993 में, अगले 20 वर्षों में भारत-रूस संबंधों की नई संधि तैयार की गई थी। दिसंबर 1994 रूस के प्रधानमंत्री भारत आए और उनकी यात्रा के दौरान भारत और रूस ने रक्षा, प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष अन्वेषण जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को कवर करते हुए 8 समझौते पर हस्ताक्षर किया।

जून 1998 में भारत और रूस ने परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए। 29 जून, 2000 को भारत और रूस ने भारत-रूस रक्षा सहयोग पर कई समझौते पर हस्ताक्षर किए। 2 अक्टूबर, 2000 को राष्ट्रपति पुतिन भारत आए। भारत और रूस ने 10 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

रूसी राष्ट्रपति पुतिन जनवरी 2007 में भारत आए थे। रूस के राष्ट्रपति की दो यात्राओं के दौरान, नौ बैठकें हुईं। दोनों देशों के बीच सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गये।

भारतीय प्रधानमंत्री की मास्को यात्रा दिसम्बर 2009— भारतीय प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने दिसम्बर 2009 में मास्को का दौरा किया। उनकी यात्रा के दौरान दोनों देशों ने व्यापक असैन्य परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किया।

रूसी राष्ट्रपति की भारत यात्रा दिसम्बर 2010—रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव 21 दिसम्बर, 2010 को भारत आए। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने रिकॉर्ड 29 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

भारतीय प्रधानमंत्री की रूस यात्रा—सितंबर 2019 में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रूस की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने 15 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

दिसंबर 2021 में रूसी राष्ट्रपति भारत आए। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने 28 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

जुलाई 2024 में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी रूस की यात्रा पर गए। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने 9 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

अथवा

(1) यूरोपीय संघ यूरोपीय देशों का एक बहुत मज़बूत संगठन है। यूरोपीय संघ को यूरोपियन कॉमन मार्केट या यूरोपियन कॉमन कम्युनिटी भी कहा जाता है।

(2) 2005 में 12 ट्रिलियन डॉलर से अधिक की जीडीपी के साथ यूरोपीय संघ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

(3) थोड़े ही समय में यह एक अत्यंत शक्तिशाली आर्थिक एवं राजनीतिक संगठन बन गया।

(4) इसकी अपनी संसद, अपना झंडा, गान और अपनी मुद्रा है। यूरोपीय संघ राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव भी रखता है।

28. 2006 में नेपाल में एक असाधारण लोकप्रिय आंदोलन शुरू हुआ था। दरअसल नेपाल एक राजशाही राज्य था जिसके राजा राजा बीरेंद्र थे। 1990 में उन्होंने संवैधानिक राजतंत्र को अपनी स्वीकृति दे दी। फिर भी राजा राज्य के औपचारिक प्रमुख बने रहे लेकिन वास्तविक शक्ति लोकतांत्रिक रूप से चुने गए लोगों के हाथों में थी। 2001 में एक रहस्यमय नरसंहार में राजा बीरेंद्र के शाही परिवार के अन्य 5 सदस्यों की हत्या कर दी गई। फिर राजा ज्ञानेंद्र ने कार्यभार संभाला जिन्हें संवैधानिक राजतंत्र का विचार पसंद नहीं था फरवरी 2005 में, उन्होंने कमज़ोर और अलोकप्रिय सरकार का फायदा उठाया और प्रधानमंत्री को बर्खास्त कर दिया फिर उन्होंने संसद को भी भंग कर दिया और देश की कमान संभाली। लेकिन अप्रैल 2006 में नेपाल में लोकतंत्र को बहाल करने और राजा को उखाड़ फेंकने के लिए एक लोकप्रिय आंदोलन शुरू हुआ।

देश के सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने सात पार्टी गंठबंधन (एसपीए) नामक गठबंधन बनाया और चार दिनों की हड़ताल का आह्वान किया। बाद में इसे अनिश्चितकालीन हड़ताल में बदल दिया गया और फिर इसमें माओवादी विद्रोही भी शामिल हो गए। सुरक्षा बल लाखों लोगों को तितर-बितर करने में असमर्थ थे। जिनकी मांग देश में लोकतंत्र बहाल करने की थी। 1 अप्रैल तक प्रदर्शनकारियों की संख्या 3-5 लाख हो गई थी। उन्होंने (एसए) ने राजा को अल्टीमेटम दिया। राजा ने आधे मन से उन मांगों को स्वीकार कर लिया और कुछ रियायतें दीं। लेकिन आंदोलन के नेताओं ने उन रियायतों को अस्वीकार कर दिया। 24 अप्रैल 2004 को राजा ने दबाव में आकर उन सभी मांगों को स्वीकार कर लिया। संसद को बहाल किया गया जिसने राजा की शक्तियों को छीन लिया। इस तरह नेपाल में लोकतंत्र बहाल हुआ। 20 सितंबर, 2015 को नेपाल में नया संविधान लागू किया गया।

अथवा

किसी देश की सुरक्षा देश और उसके लोगों की भलाई के लिए एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है सरल शब्दों में सुरक्षा का मतलब खतरों से मुक्ति है लेकिन हर तरह का खतरा सुरक्षा के लिए खतरा नहीं है केवल विश्व चीज़ें ही सुरक्षा के लिए खतरा हैं।

खतरे के नए स्रोत—खतरे के नए स्रोत हैं— आतंकवाद, मानव अधिकार, वैश्विक गरीबी, प्रवासी और स्वास्थ्य महामारी।

1. **आतंकवाद**—आतंकवाद मानव सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा है। आतंकवाद में वांछित उद्देश्यों को करने के लिए अवैध रूप से लोगों को निशाना बनाया जाता है। आतंकवाद से तात्पर्य हिंसा से है जो जानबूझकर और अंधाधुंध तरीके से नागरिकों को निशाना बनाती है। बम विस्फोट, अपहरण, मानव बम, हत्या आदि भी आतंकवाद के कार्य हैं।
2. **मानवाधिकार**—मानवाधिकार वे अधिकार हैं जो मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। मानवाधिकारों को आमतौर पर उन अधिकारों के रूप में समझा जाता है जिनका हर मनुष्य को अपने धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, राष्ट्रीयता या इनमें से किसी एक के बावजूद स्वतंत्र रूप से आनंद लेने का अधिकार है। दुनिया के अधिकांश देशों में मानवाधिकार उपलब्ध नहीं है मानवाधिकारों का उल्लंघन मानव सुरक्षा के लिए भी खतरा है।
3. **वैश्विक गरीबी**—वैश्विक गरीबी सुरक्षा के लिए एक और खतरा है। गरीब और तेज़ी से विकासशील आबादी वाले देशों में गरीबी बढ़ रही है जबकि स्थिर आबादी वाले अमीर देश और अधिक अमीर हो रहे हैं। वैश्विक गरीबी गरीब देशों की सुरक्षा को प्रभावित कर रही है उप-सहारा अफ्रीका में कई सशस्त्र संघर्ष हुए हैं जो दुनिया का सबसे गरीब क्षेत्र है।
4. **प्रवासी**—जो लोग स्वेच्छा से अपने देश को छोड़ देते हैं उन्हें प्रवासी कहा जाता है। प्रवासी मानव सुरक्षा के लिए भी समस्याएँ पैदा कर रहे हैं।

29. 14-15 अगस्त, 1947 को एक नहीं बल्कि दो राष्ट्र-राज्य अस्तित्व में आए, भारत और पाकिस्तान। यह ब्रिटिश भारत के भारत और पाकिस्तान में विभाजन के कारण हुआ था। भारत के विभाजन के परिणाम निम्नलिखित थे—

1. **जनसंख्या का स्थानांतरण और लोगों की हत्या**—विभाजन का पहला परिणाम मानव इतिहास में सबसे बड़ा अनियोजित और दुखद जनसंख्या स्थानांतरण था। सीमा के दोनों ओर बड़े पैमाने पर हत्याएं और अत्याचार हुए। धर्म के नाम पर एक समुदाय के लोगों ने दूसरे समुदाय के लोगों को मार डाला।

अल्पसंख्यकों को अपने घर छोड़कर सीमा पार जाने के लिए मज़बूर होना पड़ा। यहां तक कि अपनी यात्रा के दौरान भी उन पर अकसर हमला किया गया, उन्हें मार दिया गया और लूट लिया गया। दोनों तरफ हज़ारों महिलाओं का बलात्कार किया गया, उनका अपहरण किया गया और हत्या कर दी गई।

विभाजन के कारण लगभग 80 लाख लोगों को नई सीमा पार करनी पड़ी। विभाजन के कारण पांच लाख से अधिक लोग मारे गए।

2. **शरणार्थियों की समस्या**—विभाजन का एक और परिणाम ''शरणार्थियों की समस्या थी।'' सीमा पार करने वाले लोगों

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

को पता चला कि उनके पास कोई घर नहीं है। लाखों लोगों के लिए आज़ादी का मतलब शरणार्थी शिविरों में जीवन जीना था भारतीय नेतृत्व और भारत सरकार को इस तात्कालिक और अप्रत्याशित समस्या का सामना करना पड़ा। शरणार्थियों की समस्या इतनी गंभीर थी कि सरकार को इसे सुलझाने में कई साल लग गए।

3. **संपत्ति और वित्तीय परिसंपत्यिों का बंटवारा**—बंटवारे का मतलब संपत्ति, देनदारियों और वित्तीय परिसंपत्तियों का बंटवारा भी था सरकार और रेलवे के कर्मचारियों को भी बांटा गया।
4. **अल्पसंख्यकों की समस्याएँ**—मुसलमानों के बड़े पैमाने पर पाकिस्तान चले जाने के बाद भी भारत की कुल आबादी में लगभग 12 प्रतिशत मुसलमान थे। भारत सरकार के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि मुस्लिम अल्पसंख्यकों और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों से कैसे निपटा जाए।
5. **व्यापारिक नेटवर्क में व्यवधान**—विभाजन के आर्थिक नुकसान के बारे में सभी जागरूकता और सभी एहतियाती उपायों के बावजूद भारत और पाकिस्तान के निर्माण ने मौजूदा व्यापारिक नेटवर्क को बाधित कर दिया। उदाहरण के लिए विभाजन का प्रभाव जूट उद्योग के लिए विनाशकारी था।
6. **राज्यों का पुनर्गठन**—विभाजन के कारण बंगाल की पूर्वी बंगाल को (अब बांग्लादेश) और पश्चिम बंगाल में विभाजित किया गया। इस तरह, पंजाब को पश्चिम पाकिस्तान के पंजाब प्रांत और भारतीय राज्य पंजाब में विभाजित किया गया।

अथवा

भारत में 18वीं लोकसभा चुनाव अप्रैल-जून, 2024 में 7 चरणों में आयोजित किए गए। इस चुनाव की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं—

(1) 18वें लोकसभा चुनाव में 65.8% मतदान हुआ।
(2) 18वें लोकसभा चुनाव के दौरान कुल मतदाताओं की संख्या 97.6 करोड़ थी।
(3) पूरे भारत में ई.वी.एम के साथ वीवी. पैट का भी प्रयोग किया।
(4) भाजपा ने 240 सीटें हासिल की।
(5) कांग्रेस को 99 सीटें मिली।
(6) एन.डी.ए. को 293 सीटें प्राप्त हुईं।
(7) इंडिया एलायंस ने 232 अंक हासिल किये।
(8) 9 जून, 2024 को श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एन.डी.ए. की सरकार बनेगी।

30. आज़ादी के बाद, कांग्रेस पार्टी ने 1967 से पहले केंद्र और राज्यों में राजनीतिक परिदृश्य पर अपना दबदबा कायम रखा। कांग्रेस ने 1952, 1957, 1962 और 1967 के चुनावों में क्रमश: 364, 371, 361 और 283 सीटें हासिल कीं। कांग्रेस का दबदबा कई कारणों से था—

(1) कांग्रेस पार्टी की स्थापना 1885 में हुई थी और इसने राष्ट्रीय आंदोलन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वास्तव में राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास लगभग कांग्रेस पार्टी का इतिहास है। कांग्रेस पार्टी ने पूरे दिल से भारत की आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी और बलिदान की चिंता नहीं की।
(2) कांग्रेस ने 1885 से 1947 तक भारतीय जनता को सक्षम नेतृत्व प्रदान किया। कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व महात्मा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ-भाई पटेल, श्रीमती इंदिरा गांधी जैसे महान व्यक्तित्वों ने किया।
(3) कांग्रेस पार्टी एक सुव्यवस्थित पार्टी थी और अन्य राजनतिक पार्टी का संगठन इतना सुव्यवस्थित नहीं था।
(4) स्वतंत्रता के बाद, कांग्रेस पार्टी ने न केवल जनता की समस्याओं को हल करने की कोशिश की, बल्कि राष्ट्र के सामने चुनौतियों का भी सामना किया।

इसके अलावा, कांग्रेस पार्टी में लगभग सभी तरह के विचारों का मिश्रण है। यह वास्तव में एक 'महागठबंधन' है। स्वतंत्रता संग्राम की आड़ में सभी तरह की राजनीतिक विचारधाराओं को आश्रय देने वाली यह एक विशेषाधिकार प्राप्त पार्टी थी।

अथवा

भारत सरकार द्वारा 5-6 अगस्त, 2019 को अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद हुए महत्त्वपूर्ण परिवर्तन निम्नलिखित हैं—

(1) जम्मू-कश्मीर का कोई अलग झंडा या संविधान नहीं होगा। विधानसभा का कार्यकाल 5 साल का होगा। भारतीय दंड संहिता, रणबीर दंड संहिता का स्थान लेगा।
(2) दूसरे राज्यों के लोग जो ज़मीन और संपत्ति खरीदने से वंचित थे अब ऐसा कर सकते हैं अचल संपत्ति को ग़ैर-राज्य विषय में स्थानांतरित किया जा सकता है। ग़ैर-स्थायी निवासी राज्य में स्थायी रूप से बस सकते है।
(3) बाहरी लोग अब राज्य सरकार और कंपनियों में नौकरी पा सकेंगे और राज्य द्वारा संचालित संस्थानों में छात्रवृत्ति के लिए भी पात्र होंगे।
(4) जम्मू-कश्मीर में आर.टी.आई. कानून लागू होगा; अब अल्पसंख्यकों के लिए कोटा तय हो सकेगा।
(5) जो योजनाएं पहले कागज़ों पर थी उन्हें लागू किया जाएगा।
(6) बच्चों को शिक्षा का अधिकार मिलेगा।
(7) जम्मू-कश्मीर में लड़कियों को राज्य से बाहर शादी करने से वंचित रखा था लेकिन अब उन्हें बाकी भारतीय राज्यों की तरह समान अधिकार प्राप्त हैं।
(8) दलितों और अल्पसंख्यको को उनकी सुरक्षा के लिए बनाए गए कानूनों से समान लाभ दिए जाएंगे।
(9) केन्द्र सरकार द्वारा पारित आरक्षण कानून से लोगों को सभी लाभ मिलेंगे।
(10) दलितो, आदिवासियों, अनुसूचित जनजातियों, वनवासियों एवं अनुसूचित जातियों के अधिकारों का समुचित संरक्षण।
(11) लद्दाख को जम्मू-कश्मीर से अलग कर दिया गया। अब जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दोनों केंद्र शासित प्रदेश है।
(12) भारत में अब 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–2

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (ग) इज़राइल।
2. (घ) बड़ी जनसंख्या और बड़ी आर्थिक शक्ति।
3. (घ) विश्व स्वास्थ्य संगठन।
4. (ख) क्रूर हिंसा का उपयोग करके समाज में भय का माहौल पैदा करना।
5. (ख) न्यूयॉर्क।
6. (ख) 5 जून।
7. (घ) 1992.
8. (ग) सतत विकास।
9. (घ) अक्टूबर, 1951 से फरवरी, 1952 तक।
10. (क) (A) (*iii*), (B) (*iv*), (C) (*i*), (D) (*ii*).
11. (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।
12. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

खंड—ख

13. (1) आसियान अर्थव्यवस्था दुनिया में सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है।
    (2) आसियान की गतिविधियों का दायरा बहुत व्यापक है और वह चाहता है कि उसके सदस्य सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता और विकास करें।
14. संयुक्त राष्ट्र संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जिसकी स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 24 अक्तूबर, 1945 को हुई थी। संयुक्त राष्ट्र बीसवीं सदी में राज्यों के एक सामान्य अंतर्राष्ट्रीय संगठन के माध्यम से एक बेहतर दुनिया के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दूसरा प्रमुख प्रयास है। यू.एन.ओ. राज्यों का एक संघ है और इसका प्राथमिक उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना है।
15. (1) आदिवासी लोग अशिक्षित और गरीब हैं। वे नहीं जानते कि अपने अधिकारों की रक्षा कैसे करें?
    (2) ज़मीन ही उनकी आय का एकमात्र स्रोत है इस प्रकार ज़मीन के नुकसान का मतलब आर्थिक संसाधन आधार का नुकसान भी है।
16. (1) जनसंघ ने एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र के विचार पर ज़ोर दिया।
    (2) जनसंघ को भारतीय संस्कृति और परंपराओं में पूर्ण आस्था थी। जनसंघ धार्मिक और सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को रियायतें देने का विरोधी था।
17. (1) भारत ने एनपीटी और सीटीबीटी पर हस्ताक्षर नहीं किए क्योंकि भारत के अनुसार ये संधियाँ विवादास्पद थीं।
    (2) भारत के दोनों पड़ोसी देशों के पास परमाणु हथियार थे इसलिए भारत के लिए न्यूनतम निवारक क्षमता रखना आवश्यक था।
18. जनता पार्टी ने 1977 के लोकसभा चुनावों को आपातकाल पर जनमत संग्रह बना दिया क्योंकि शासन का चरित्र अलोकतांत्रिक था और आपातकाल के दौरान कई ज्यादतियाँ हुईं। हज़ारों लोगों की गिरफ्तारी और प्रेस पर सेंसरशिप के कारण जनता की राय सरकार के खिलाफ थी।

खंड—ग

19. वैश्वीकरण के युग से पहले, राष्ट्र-राज्य सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान था। हालाँकि वैश्वीकरण राष्ट्र-राज्य से ग्लोबल कॉमन्स में स्थानांतरित हो गया है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप राज्य प्राधिकार का क्षरण हुआ है। दुनियाभर में बहु-कार्यात्मक कंपनियों के प्रवेश और बढ़ती भूमिका के कारण सरकार की स्वयं निर्णय लेने की क्षमता में कमी आई है। दुनिया के लगभग सभी देश आईएमएफ और डब्ल्यूटीओ की सर्वोच्चता में शामिल हो गए हैं या स्वीकार कर चुके हैं और इस प्रकार राज्यों की शक्ति कम हो गई है क्योंकि इन संस्थाओं द्वारा बनाए गए सभी नियम और कानून सदस्य-राज्यों पर बाध्यकारी है।

अथवा

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ एक महान शक्ति बन गया लेकिन बहुत जल्दी ही यह व्यवस्था अत्यधिक नौकरशाही और सत्तावादी हो गई। मेरा दिए गए कथन के पक्ष में तर्क इस प्रकार है—

(1) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत अर्थव्यवस्था अमेरिका को छोड़कर शेष विश्व की तुलना में अधिक विकसित थी। इसमें एक जटिल संचार नेटवर्क और विशाल ऊर्जा

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

संसाधन थे। सोवियत राज्य ने सभी नागरिकों के लिए न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित किया और सरकार ने स्वास्थ शिक्षा, स्वास्थ देखभाल और अन्य कल्याणकारी योजनाओं सहित बुनियादी आवश्यकताओं पर सब्सिडी दी। हालाँकि सोवियत प्रणाली बहुत नौकरशाही और सत्तावादी हो गई जिससे उसके नागरिकों का जीवन बहुत कठिन हो गया।

(2) लोकतंत्र की कमी और बोलने की स्वतंत्रता की कमी ने उन लोगों को निराश किया जो अकसर चुटकुलों और कार्टूनों में अपनी असहमति व्यक्त करते थे।

(3) सोवियत राज्य की अधिकांश संस्थाओं में सुधार की आवश्यकता थी; सोवियत संघ की सोवियत पार्टी द्वारा प्रतिनिधित्व की जाने वाली एक पार्टी प्रणाली का सभी संस्थानों पर कड़ा नियंत्रण था और लोगों के लिए इसका कोई हिसाब नहीं था। पार्टी ने सोवियत संघ का गठन करने वाले 15 अलग-अलग गणराज्यों में लोगों के अपने सांस्कृतिक मामलों सहित अपने स्वयं के मामलों का प्रबंधन करने के आग्रह को पहचानने से इनकार कर दिया।

(4) यद्यपि कागज पर रूस उन 15 गणराज्यों में से केवल एक था जिन्होंने मिलकर यूएसएसआर का गठन किया था। वास्तव में रूस हर चीज़ पर हावी था और अन्य क्षेत्रों के लोग उपेक्षित और अकसर दबा हुआ महसूस करते थे।

20. आसियान आर्थिक समुदाय के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) आसियान देशों के लिए सामान्य उत्पादन और सामूहिक बाज़ार को प्रोत्साहित करना।

(2) आसियान आर्थिक समुदाय के सामाजिक और आर्थिक विकास में मदद करना।

(3) आसियान देशों के विवादों को सुलझाकर वर्तमान-स्थिति में सुधार लाना।

(4) आसियान देशों के लिए मुक्त व्यापार बाज़ार को प्रोत्साहित करना।

अथवा

भारत और बांग्लादेश के बीच सहयोग के क्षेत्र इस प्रकार हैं—

(1) आपदा प्रबंधन और पर्यावरण के मुद्दों पर सहयोग हमेशा से रहा है।

(2) आर्थिक संबंधों में काफ़ी सुधार हुआ है।

भारत और बांग्लादेश के बीच असहमति के क्षेत्र इस प्रकार हैं—

(1) नदी जल विवाद यानी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी के पानी का बंटवारा विवाद का विषय रहा है।

(2) भारत सरकार बांग्लादेश द्वारा अवैध आप्रवासन से इनकार करने से नाखुश है।

21. आपातकाल से निम्नलिखित दो सबक सीखे गए—

(1) नौकरशाही स्वतंत्र होनी चाहिए। नौकरीशाही स्वतंत्र और निष्पक्ष होनी चाहिए। उसे सत्ताधारी पार्टी की विचारधारा और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होना चाहिए बल्कि नौकरशाही को संविधान के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। न्यायपालिका को कार्यपालिका के अधीन नहीं होना चाहिए। न्यायपालिका स्वतंत्र होनी चाहिए और उसे नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।

(2) सरकार को संविधान के प्रावधानों के अनुसार प्रशासन चलाना चाहिए। न्यायपालिका संविधान की संरक्षक है।

22. (1) चीन ने 1950 में तिब्बत पर नियंत्रण लिया और तिब्बतियों का दमन शुरू कर दिया।

(2) 1958 में चीन के व्यवहार के खिलाफ तिब्बत में सशस्त्र विद्रोह शुरू हुआ जिसे चीनी सेनाओ ने दबा दिया।

तिब्बती शरणार्थियों की मदद करने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई—

(1) भारत में कोई राजनीतिक दलों जैसे सोशलिस्ट पार्टी और जनसंघ ने तिब्बत की स्वतंत्रता के मामले का समर्थन किया।

(2) भारत में दिल्ली और धर्मशाला जैसे कई स्थान तिब्बतियों के लिए सबसे बड़ी शरणार्थी बस्तियाँ बन गए।

23. वैश्वीकरण के मुख्य राजनीतिक परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) वैश्वीकरण ने कुछ गतिविधियों को विनियमित करने की शक्ति सरकारों से अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को स्थानांतरित कर दी है जो अप्रत्यक्ष रूप से दुनिया भर में फैली हुई है।

(2) विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन सभी देशों के लिए नियम और विनियम बनाते हैं।

(3) सरकारें कभी-कभी निजी क्षेत्रों के अनुरूप कानून और संविधान बदलने के लिए मज़बूर हो जाती हैं।

(4) कुछ सरकारें कुछ नियमों और विनियमों को खत्म करने के लिए मज़बूर हो जाती हैं जो कामकाजी लोगों और पर्यावरण अधिकारों की रक्षा करते हैं।

खंड—घ

24. (A) (ग) एम. ए. जिन्ना।

(B) (क) भारत में दो समूह के लोग रहते थे। हिंदू और मुसलमान, इसलिए दो राष्ट्र आवश्यक हैं।

(C) (ग) पंजाब और बंगाल।

(D) (ग) स्मारक।

25.

सीनियर उपयोग की गई जानकारी के लिए नंबर	राज्यों के नाम	वर्णमाला चिंतित
(*i*)	उत्तर प्रदेश	(D)
(*ii*)	तामिनाडू	(C)
(*iii*)	बिहार	(A)
(*iv*)	आंध्र प्रदेश	(B)

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

26. (क) कार्टून में दाईं ओर दिखाए गए नेता भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल हैं।

(ख) कार्टून शासक और जनता के बीच क्रमशः स्वामी और दास के रूप में संबंध को दर्शाता है।

(ग) देशी रियासतों के मुद्दे को सुलझाने के लिए कार्टून के दाईं ओर के नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 500 से अधिक स्वतंत्र राज्यों को सफलतापूर्वक भारत में विलय कराया।

खंड—ङ

27. पूर्व सोवियत संघ के एकात्मक विघटन के मुख्य कारण निम्नलिखित थे।

(1) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ एक महान शक्ति बन गया हथियारों की दौड़ में सोवियत संघ अमेरिकी बलों की बराबरी करने में कामयाब रहा लेकिन बड़ी कीमत पर। महाशक्ति की स्थिति बनाए रखने के लिए यूएसएसआर को बड़ी ताकतों को रखने और सहयोगियों को वित्तीय और सैन्य सहायता देने के लिए बहुत अधिक खर्च की आवश्यकता थी लेकिन यूएसएसआर की अर्थव्यवस्था अच्छी नहीं थी। 1980 में सोवियत अर्थव्यवस्था बहुत निचले स्तर पर थी और स्थिर हो गई थी।

(2) सोवियत संघ प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढाँचे आदि में पश्चिम से पिछड़ गया।

(3) सोवियत प्रणाली अत्यधिक नौकरशाही और सत्तावादी थी और नागरिक राजनीतिक व्यवस्था से खुश नहीं थे। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजनीतिक अधिकार के अभाव ने लोगों में निराशा पैदा की।

(4) कम्युनिस्ट पार्टी सरकार और सभी संस्थाओं को नियंत्रित करती हैं और लोगों के प्रति ज़िम्मेदार नहीं थी। वहां न तो कोई विपक्षी दल था और न ही कोई लोकतांत्रिक मूल्य।

(5) सोवियत संघ नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षा को पूरा करने में विफल रहा।

(6) अफगानिस्तान पर आक्रमण ने सोवियत संघ को आर्थिक और राजनीतिक रूप से कमज़ोर कर दिया।

अथवा

सुरक्षा परिषद् संयुक्त राष्ट्र का सबसे महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली अंग है। इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की कार्यकारी शाखा भी माना जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है। इसमें 15 सदस्य होते हैं जिनमें से पांच सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य होते हैं। स्थायी सदस्य अमेरिका, ब्रिटेन, चीन गणराज्य, फ्रांस और रूस हैं। दस सदस्य अस्थायी होते हैं। इन अस्थायी सदस्यों को महासभा द्वारा दो साल की अवधि के लिए चुना जाता है। कोई भी राज्य लगातार दो कार्यकाल के लिए निर्वाचित सदस्य नहीं हो सकता।

(1) **आर्थिक रूप से मज़बूत**—संयुक्त राष्ट्र परिषद् के स्थायी सदस्य के लिए सदस्य राष्ट्र को आर्थिक रूप से समृद्ध और समृद्ध होना चाहिए।

(2) **सैन्य रूप से मज़बूत**—एक राष्ट्र जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता की इच्छा रखता है स्थायी सदस्य को सैन्य दृष्टि से मज़बूत होना चाहिए ताकि वह राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में निर्णायक भूमिका निभा सकें।

(3) तीसरा, इच्छुक राष्ट्र को संयुक्त राष्ट्र संघ के कामकाज के लिए अधिकतम बजट का भुगतान या योगदान करना चाहिए।

(4) जनसंख्या की दृष्टि से एक बड़ा राष्ट्र।

(5) लोकतांत्रिक देश जिसमें लोकतंत्र और मानवाधिकारों के प्रति बहुत सम्मान हो।

(6) किसी देश की परिषद् को भूगोल, आर्थिक प्रणाली और संस्कृति के संदर्भ में विश्व की विविधता का अधिक प्रतिनिधि बनाना होगा।

27. ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ—ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है पृथ्वी के वायुमंडल के तापमान में वृद्धि, जो पिछले 50 वर्षों में कुछ गैसों की वृद्धि के कारण हुई है। औसत वैश्विक तापमान रिकॉर्ड किए गए इतिहास में सबसे तेज़ दर से बढ़ा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह तेज़ हो रही है। नासा के 134 साल के रिकॉर्ड में 16 सबसे गर्म वर्षों में से एक को छोड़कर सभी वर्ष 2000 के बाद से हुए हैं।

जलवायु परिवर्तन पर आईपीसीसी—अंतर्राष्ट्रीय पैनल ने निष्कर्ष निकाला है कि ''जलवायु पर मानवीय प्रभाव 20वीं सदी के मध्य से देखी गई गर्मी का प्रमुख कारण रहा है। सबसे बड़ा मानवीय प्रभाव ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन रहा है जिसमें 90% से अधिक प्रभाव कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन का है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड आदि की मात्रा में वृद्धि।

(2) वाहन, हवाई जहाज़ और उद्योग से निकलने वाली प्रदूषित गैसें।

(3) विकास के लिए पड़े पैमाने पर वनों की कटाई।

(4) ए० सी० और फ्रिज का बड़ा पैमाने पर उपयोग।

(5) शहरीकरण ग्लोबल वार्मिंग का एक अन्य कारण है।

अथवा

पक्ष में तर्क/सकारात्मक पहलू/लाभ—

(1) अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण की प्रगति के लिए वैश्वीकरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है। विकासशील देशों के लिए इस नीति में शामिल होने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है।

(2) वैश्वीकरण से पूंजी की गतिशीलता बढ़ी है तथा इसका उपयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ है जिससे विकासशील देश अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व बैंक पर निर्भर हो गए हैं।

(3) हालाँकि, इस नीति में कुछ खामियाँ हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह कम उपयोगी है। वास्तव में यह नीति अभी प्राथमिक चरण में है जब यह वैश्विक प्रक्रिया बन जाएगी, तो यह निरंतर विकास में मदद करेगी। इसकी स्थायित्वता ही सतत विकास की ओर से जा सकती है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(4) विश्व व्यापार संगठन को वैश्वीकरण के साधन के रूप में समझा जाना चाहिए। यदि इस नीति को निष्पक्ष रूप से नियंत्रित किया जाए तो यह लाभदायक नीति होगी।
(5) प्रौद्योगिकी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है लेकिन वैश्वीकरण की प्रक्रिया से वे विकसित प्रौद्योगिकी से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
(6) वैश्वीकरण से विश्वव्यापी सूचना का प्रसार हुआ है जिसने गतिशीलता को बढ़ावा मिला है।

विपक्ष में तर्क / नकारात्मक पहलू / दोष

(1) वैश्वीकरण का समर्थन अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जापान, जर्मनी आदि विकसित देशों द्वारा किया जाता है। उन्हें अपने उत्पादों के लिए एक बाज़ार की आवश्यकता होती है जो केवल वैश्वीकरण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
(2) ये बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे या विकासशील देशों को राजनीतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप कर रही हैं।
(3) इस नीति ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया है जिससे तीसरी दुनिया के देशों में बेरोज़गारी बढ़ गई है।
(4) आलोचकों का कहना है कि यह नीति लागू करने लायक तो है लेकिन स्वीकार्य नहीं है। इसमें सभी के कल्याण जैसी उद्देश्य की बात ही नहीं की गई है।
(5) यह एक अलोकतांत्रिक प्रक्रिया है जिसने श्रम पर अंकुश लगाकर कल्याणकारी राज्य की सीमित भूमिका के द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमज़ोर किया है।
(6) सरकार द्वारा सब्सिडी आदि में कटौती ने अप्रत्यक्ष रूप से गरीब वर्ग को प्रभावित किया है।

29. स्वतंत्रता के बाद भारत ने भारत के लोगों के विकास के लिए आर्थिक नियोजन को अपनाया। वास्तव में नियोजित विकास पर आम सहमति थी। नियोजित विकास के लिए भारत सरकार के एक साधारण प्रस्ताव द्वारा मार्च 1950 में योजना आयोग की स्थापना की गई थी। योजना आयोग ने पंचवर्षीय योजनाओं का विकल्प चुना। पहली पंचवर्षीय योजना 1951 में शुरू की गई थी जिसमें बांध और सिंचाई में निवेश सहित कृषि पर मुख्य ज़ोर दिया गया था। दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-1961) में मुख्य रूप से भारी उद्योगों पर ज़ोर दिया गया था। दूसरी पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य तीव्र औद्योगीकरण था। भारत में नियोजन के परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) नियोजन के माध्यम से भारत के भावी आर्थिक विकास की नींव रखी गई।
(2) कुछ भारी उद्योग शुरू किये गये।
(3) नियोजन के माध्यम से विनिर्माण का विकास बढ़ रहा था।
(4) भूमि सुधार योजना के माध्यम बने।
(5) नियोजन देश की आर्थिक वृद्धि को बढ़ाता है।
(6) भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बने।

अथवा

1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर भारत के मित्रतापूर्ण रवैये का बदला लिया। 1965 में पुनः भारत-पाक युद्ध के दौरान चीन ने शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया। लेकिन भारत ने 1966 में इंदिरा के शासनकाल में पुनः भारत चीन सीमा विवाद को सुलझाने का प्रयास किया। हालाँकि 1976 में भारत-चीन संबंधों में थोड़ा सुधार हुआ। 1976 में श्री के०आर० नारायणन तथा 1978 और 1979 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने शांति और मित्रता के दूत के रूप में चीन का दौरा किया। 1988 में प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की चीन यात्रा ने भारत-चीन संबंधों में एक नए युग की शुरुआत की तथा दोनों देशों द्वारा की गई राजनयिक यात्राओं ने दोनों देशों के संबंधों को और बेहतर बनाया। भारत-चीन संबंधों के इन वर्षों के दौरान दोनों देशों के बीच आपसी विश्वास का स्तर बढ़ा है।

30. फरवरी 1971 में लोकसभा के लिए पाँचवाँ आम चुनाव हुआ। श्रीमती इंदिरा गांधी ने एक बहुत लोकप्रिय नारा दिया 'गरीबी हटाओ'। इस नारे से उन्हें पिछड़े वर्गों आदिवासियों, बेरोजगार युवाओं, अल्पसंख्यकों, महिलाओं, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का समर्थन मिला।

इंदिरा गांधी द्वारा गोरिल हतास कार्यक्रम को लागू करने के लिए निम्नलिखित चार प्रयास किये गये थे—

(1) इंदिरा गांधी ने सार्वजनिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया।
(2) उन्होंने ग्रामीण भूमि जोत और शहरी संपत्ति पर सीलिंग लगाई।
(3) उन्होंने आय और अवसर में होने वाली कमी को दूर करने पर ज़ोर दिया।
(4) उन्होंने प्रिवी पर्स या राजसी विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया।

अथवा

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की सलाह पर राष्ट्रपति ने आंतरिक आपातकाल की घोषणा की। 25 जून 1975 को हज़ारो कार्यकर्ता और नेता विपक्षी दलों के कई नेताओं को मीसा के तहत जेलों में डाल दिया गया। प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया गया। गुजरात और तमिलनाडु की विधानसभाए भंग कर दी गईं। आपातकाल के दौरान श्रीमती गांधी के पुत्र संजय गांधी ने उन्हें गोली मार दी थी। इंदिरा गांधी बहुत शक्तिशाली हो गईं। श्रीमती इंदिरा गांधी ने जनवरी 1977 में लोकसभा चुनावों की घोषणा की और जेल में बंद राजनीतिक नेताओं को रिहा कर दिया। आपातकाल से निम्नलिखित तीन सबक सीखे गए—

(1) नौकरशाही और न्यापालिका स्वतंत्र होनी चाहिए— नौकरशाही स्वतंत्र और निष्पक्ष होना चाहिए। उसे सत्ताधारी पार्टी की विचारधारा और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होना चाहिए बल्कि नौकरशाही को संविधान के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए न्यायपालिका को कार्यपालिका के अधीन नहीं होना चाहिए। न्यायपालिका स्वतंत्र होना चाहिए और नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।

(2) सरकार को संविधान के प्रावधानों के अनुसार प्रशासन चलाना चाहिए। संविधान सर्वोच्च है और इसकी सर्वोच्चता की रक्षा न्यायपालिका द्वारा की जानी चाहिए।

(3) प्रेस की स्वतंत्रता को कुचला नहीं जाना चाहिए लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए प्रेस की स्वतंत्रता बहुत आवश्यक है। प्रेस के द्वारा लोगों में राजनीतिक चेतना पैदा की जाती है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–3

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (क) संयुक्त राष्ट्र ने ऑपरेशन डेजर्ट स्टॉर्म की अनुमति दे दी थी।
2. (ग) लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम को सार्क देशों का समर्थन प्राप्त था।
3. (ग) गैर-सरकारी संगठन।
4. (क) (*iii*), (*iv*), (*ii*), (*i*).
5. (ग) अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी।
6. (ग) वैश्विक गरीबी।
7. (ग) शक्ति संतुलन।
8. (ख) नव-उदारवादी वैश्वीकरण का विरोध।
9. (ख) 15 अगस्त, 1947 से पहले।
10. (ख) नीति आयोग सहकारी संघवाद की भावना को सुनिश्चित नहीं करता है।
11. (ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
12. (क) (*iii*), (B)-(*i*), (C)-(*iv*), (D)-(*ii*)

खंड—ख

13. भारत और हुसैन दोनों द्वारा परिकल्पित बहुध्रुवीय विश्व की विशेषताएं हैं। सामूहिक सुरक्षा और सामूहिक प्रतिक्रिया के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में कई शक्तियों का सह-अस्तित्व।
14. (1) स्थिर और सफल संबंध बनाने के लिए दोनों देशों को अधिक शांति वार्ता और सम्मेलन आयोजित करने का प्रयास करना चाहिए।
    (2) दोनों देशों को अपने आर्थिक वाणिज्यिक और व्यापारिक हितों को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।
15. (1) आर्थिक वैश्वीकरण आईएमएफ और डब्ल्यूटीओ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका को सामने लाता है।
    (2) आर्थिक वैश्वीकरण आर्थिक लाभ का वितरण दर्शाता है अर्थात किसे अधिक मिलता है और किसे कम।
16. स्वतंत्रता के पश्चात् राज्यों का पुनर्गठन भाषाई आधार पर 1956 में राज्य पुनर्गठन पर अधिनियम पारित किया गया जिसके परिणामस्वरूप 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेशों का निर्माण हुआ।
17. पूर्वोत्तर का पुनर्गठन 1972 तक पूरा हो गया था। एक आदिवासी राज्य के बजाय, असम से कई राज्य बनाए गए। केंद्र सरकार को असम से मेघालय, मिज़ोरम और अरुणाचल प्रदेश बनाना पड़ा। त्रिपुरा और मणिपुर को भी राज्य में अपग्रेड किया गया।
18. गठबंधन सरकार तब बनती है जब सदन में कोई छोटे राजनीतिक दल या समूह अपने व्यापक मतभेदों को भुलाकर एक सांझा मंच पर मिलकर सदन में बहुमत बनाते हैं।

खंड—ग

19. आतंकवाद से तात्पर्य राजनीतिक हिंसा से है जो जानबूझ कर और अंधाधुंध तरीके से नागरिकों को निशाना बनाती है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद में एक से अधिक राज्यों में अधिक देशों का क्षेत्र शामिल होता है। 'वर्तमान में' अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद दुनिया के सामने एक बड़ी समस्या है। यह कई राज्यों की सुरक्षा के लिए बहुत गंभीर खतरा बन गया है। वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद विश्व शांति और सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है। आतंकवाद के क्लासिक मामलों में विमानों का अपहरण या ट्रेनों कैफे, बाज़ारों, उत्सव स्थलों और धार्मिक स्थानों पर बम लगाना शामिल हैं। 11 सितंबर, 2001 को आतंकवादियों ने अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला किया। दिसंबर, 2001 में आतंकवादियों ने भारतीय संसद् पर हमला किया। 26 नवंबर, 2008 को आतंकवादियों ने मुंबई पर हमला किया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अब अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी समूहों की गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए भारत जैसे देशों के साथ हाथ मिलाया है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन, यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विकास की जाँच करने के लिए विभन्न कदम उठा रहे हैं।

अथवा

जलवायु परिवर्तन एक खतरनाक विकास बन गया है। यह हमारे लिए समस्या बन गई है। जलवायु परिवर्तन का अर्थ है किसी क्षेत्र में लंबे समय तक तापमान और वर्षा जैसी औसत स्थितियों में परिवर्तन। जलवायु परिवर्तन की वैश्विक घटना है जो ग्रह के सामान्य जलवायु में तापमान, वर्षा और हवा के संबंध में होने वाले परिवर्तनों की विशेषता है। जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप, पृथ्वी के मौसम में असंतुलन, ग्रह के पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता खतरे में है। साथ ही मानव जाति का भविष्य और वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिर भी खतरे में हैं।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

20. राजनीतिक और वैश्विक रूप से आर्थिक प्रभावशाली समाज की संस्कृति कम शक्तिशाली समाज पर अपनी छाप छोड़ती है क्योंकि
(1) वैश्वीकरण का प्रसार
(2) वस्तुओं की आवश्यकता
(3) अन्य वस्तुओं का कोई विकल्प नहीं
(4) वैश्विकता का राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव गरीब और कमज़ोर देश पर हावी देश है।

अथवा

(1) सोवियत अर्थव्यवस्था ने परमाणु और सैन्य शस्त्रागार बनाए रखने में अपने अधिकांश संसाधनों का उपयोग किया। अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा सैन्य सक्ति के निर्माण पर खर्च किया गया था इससे आर्थिक स्थिरता पैदा हुई।
(2) पूर्वी यूरोप में इसके उपग्रह राज्यों के विकास से भारी आर्थिक बोझ पड़ा।

21. अर्थव्यवस्था को आमतौर पर दो प्रकार का माना जाता है—एक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और दूसरी समाजवादी अर्थव्यवस्था। मिश्रित अर्थव्यवस्था इन दो प्रकार की अर्थव्यवस्था के सह-अस्तित्व पर आधारित है। दुनिया के अधिकांश गरीब देशों में मिश्रित अर्थव्यवस्था सबसे अधिक प्रचलित है। मिश्रित अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जहां सार्वजनिक और निजी स्वामित्व है। उत्पादन कल्याण और लाभ दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता है निजी क्षेत्र में उत्पादन लाभ के उद्देश्य से होता है जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में यह कल्याण के उद्देश्य से होता है। इस प्रकार मिश्रित अर्थव्यवस्था का पैटर्न सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की इकाइयों का सह अस्तित्व है।

22. (1) 1978 में डेंग जियाओपिंग ने चीन में 'ओपन डोर' नीति और आर्थिक सुधारों को अपनाया।
(2) चीन ने 1982 में कृषि क्षेत्र में निजीकरण शुरू किया।
(3) चीन ने 1998 में औद्योगिक क्षेत्र में निजीकरण शुरू किया।
(4) विशेष आर्थिक क्षेत्र से व्यापार बाधाएँ हटा दी गईं जहाँ विदेशी निवेशक अपने उद्यम स्थापित कर सकते थे।

23. (1) दल-बदल के कारण राजनीतिक व्यवस्था अस्थिर हो जाता है।
(2) दल-बदल के कारण राजनीतिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार बढ़ता है।

खंड—घ

24. (A) (घ) 24 अक्टूबर, 1945.
(B) (क) अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखना और सुरक्षा
(C) (ग) 193.
(D) (घ) न्यूयॉर्क।

25.

सीनियर उपयोग की गई जानकारी के लिए नंबर	राज्यों के नाम	वर्णमाला चिंतित
(*i*)	उत्तर प्रदेश	(D)
(*ii*)	तामिनाडू	(C)
(*iii*)	बिहार	(A)
(*iv*)	आंध्र प्रदेश	(B)

26. (*i*) शांति, मित्रता और सहयोग की भारत-सोवियत संधि, 1971.
(*ii*) शांति, मित्रता सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद भी भारत एक गैर-देश बना रहा
(*iii*) भारत सोवियत मित्रता पर हस्ताक्षर किये गये। भारत की प्रतिद्वंदी ताकतें जैसे पाकिस्तान।

खंड—ङ

27. सोवियत संघ के विघटन के साथ साम्यवादी का पतन हो गया। साम्यवादी के पतन के बाद इन देशों में सत्तावादी समाजवादी व्यवस्था से लोकतांत्रिक पूंजीवादी व्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हुई। रूस, मध्य एशिया और पूर्वी यूरोप में परिवर्तन का मॉडल जो विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से प्रभावित था, उसे 'शॉक थेरेपी के रूप में जाना जाने लगा। हालांकि पूर्व साम्यवाद देशों में शॉक थेरेपी की तीव्रता और गति अलग-अलग थी लेकिन इसकी दिशा और विशेषताएं काफ़ी समान थीं। 'शॉक थेरेपी' के परिणाम निम्नलिखित हैं—
(1) इनमें से प्रत्येक देश को समाजवादी अर्थव्यवस्था से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में पूर्ण परिवर्तन करना पड़ा।
(2) इनमें से प्रत्येक देश को संपत्ति के स्वामित्व के प्रमुख स्वरूप के रूप में निजी स्वामित्व को अपनाना पड़ा।
(3) इन देशों को सभी राज्य परिसंपत्तियों का निजीकरण करना पड़ा और कॉर्पोरेट स्वामित्व पैटर्न स्थापित करना पड़ा।
(4) सामूहिक खेती का स्थान पूंजीवादी निजी खेती ने ले लिया।

अथवा

पाकिस्तान के संविधान के निर्माण के बाद जनरल अयूब खान ने प्रशासन संभाला और बाद में खुद को पाकिस्तान का राष्ट्रपति चुन लिया। लेकिन जनता उनके शासन से खुश नहीं थी। अंतत: सैन्य शासन स्थापित हुआ और जनरल याह्या खान को बांग्लादेश संकट का सामना करना पड़ा। 1971 में बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा। इसके बाद पाकिस्तान में लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना हुई और 1971 से 1977 तक जुल्फिकार अली भुट्टो प्रधानमंत्री बने। लेकिन 1977 में जनरल जिया-उल-हक ने जुल्फिकार भुट्टों को हटा दिया। 1988 में फिर से लोकतांत्रिक सरकार बनी।

बेनजीर भुट्टो के नेतृत्व में सरकार की स्थापना हुई। 1988 से 1999 तक पाकिस्तान में लोकतंत्र कायम रहा। 1999 में प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को हटा दिया गया और जनरल मुशर्रफ पाकिस्तान के शासक बन गए। 2001 में जनरल मुशर्रफ ने खुद को पाकिस्तान का राष्ट्रपति चुन लिया। सितंबर 2008 में चुनाव हुए और लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना हुई।

लोकतंत्र की विफलता और स्थिर और मज़बूत लोकतंत्र की स्थापना में कई कारक जिम्मेदार हैं। सेना, पादरी और जमींदार अभिजात वर्ग का सामाजिक प्रभुत्व लोकतांत्रिक सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए जिम्मेदार है भारत के साथ युद्धों ने सैन्य शासकों और समर्थक सैन्य समूहों को बहुत शक्तिशाली बना

दिया है। इस तथ्य के बावजूद कि पाकिस्तान में लोकतंत्र सफल नहीं हुआ है वहां लोकतंत्र के पक्ष में मज़बूत भावनाएं रही हैं। इसके अलावा, अमेरिका और अन्य पश्चिम देशों ने अपने हितो के लिए सैन्य शासकों को प्रोत्साहित किया है।

28. किसी देश की सुरक्षा देश और उसके लोगों की भलाई के लिए एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है सरल शब्दों में सुरक्षा का मतलब खतरों से मुक्ति है लेकिन हर तरह का खतरा सुरक्षा के लिए खतरा नहीं है केवल विश्व चीज़ें ही सुरक्षा के लिए खतरा हैं।

खतरे के नए स्रोत—खतरे के नए स्रोत हैं— आतंकवाद, मानव अधिकार, वैश्विक गरीबी, प्रवासी और स्वास्थ्य महामारी।

1. **आतंकवाद**—आतंकवाद मानव सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा है। आतंकवाद में वांछित उद्देश्यों को करने के लिए अवैध रूप से लोगों को निशाना बनाया जाता है। आतंकवाद से तात्पर्य हिंसा से है जो जानबूझकर और अंधाधुंध तरीके से नागरिकों को निशाना बनाती है। बम विस्फोट, अपहरण, मानव बम, हत्या आदि भी आतंकवाद के कार्य हैं।
2. **मानवाधिकार**—मानवाधिकार वे अधिकार हैं जो मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। मानवाधिकारों को आमतौर पर उन अधिकारों के रूप में समझा जाता है जिनका हर मनुष्य को अपने धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, राष्ट्रीयता या इनमें से किसी एक के बावजूद स्वतंत्र रूप से आनंद लेने का अधिकार है। दुनिया के अधिकांश देशों में मानवाधिकार उपलब्ध नहीं है मानवाधिकारों का उल्लंघन मानव सुरक्षा के लिए भी खतरा है।
3. **वैश्विक गरीबी**—वैश्विक गरीबी सुरक्षा के लिए एक और खतरा है। गरीब और तेज़ी से विकासशील आबादी वाले देशों में गरीबी बढ़ रही है जबकि स्थिर आबादी वाले अमीर देश और अधिक अमीर हो रहे हैं। वैश्विक गरीबी गरीब देशों की सुरक्षा को प्रभावित कर रही है उप-सहारा अफ्रीका में कई सशस्त्र संघर्ष हुए हैं जो दुनिया का सबसे गरीब क्षेत्र है।
4. **प्रवासी**—जो लोग स्वेच्छा से अपने देश को छोड़ देते हैं उन्हें प्रवासी कहा जाता है। प्रवासी मानव सुरक्षा के लिए भी समस्याएँ पैदा कर रहे हैं।

अथवा

पक्ष में तर्क/सकारात्मक पहलू/लाभ—

(1) अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण की प्रगति के लिए वैश्वीकरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है। विकासशील देशों के लिए इस नीति में शामिल होने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है।

(2) वैश्वीकरण से पूंजी की गतिशीलता बढ़ी है तथा इसका उपयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ है जिससे विकासशील देश अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व बैंक पर निर्भर हो गए हैं।

(3) हालाँकि, इस नीति में कुछ खामियाँ हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह कम उपयोगी है। वास्तव में यह नीति अभी प्राथमिक चरण में है जब यह वैश्विक प्रक्रिया बन जाएगी, तो यह निरंतर विकास में मदद करेगी। इसकी स्थायित्वता ही सतत विकास की ओर से जा सकती है।

(4) विश्व व्यापार संगठन को वैश्वीकरण के साधन के रूप में समझा जाना चाहिए। यदि इस नीति को निष्पक्ष रूप से नियंत्रित किया जाए तो यह लाभदायक नीति होगी।

(5) प्रौद्योगिकी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है लेकिन वैश्वीकरण की प्रक्रिया से वे विकसित प्रौद्योगिकी से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

(6) वैश्वीकरण से विश्वव्यापी सूचना का प्रसार हुआ है जिसने गतिशीलता को बढ़ावा मिला है।

विपक्ष में तर्क / नकारात्मक पहलू / दोष

(1) वैश्वीकरण का समर्थन अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जापान, जर्मनी आदि विकसित देशों द्वारा किया जाता है। उन्हें अपने उत्पादों के लिए एक बाज़ार की आवश्यकता होती है जो केवल वैश्वीकरण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

(2) ये बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे या विकासशील देशों को राजनीतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप कर रही हैं।

(3) इस नीति ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया है जिससे तीसरी दुनिया के देशों में बेरोज़गारी बढ़ गई है।

(4) आलोचकों का कहना है कि यह नीति लागू करने लायक तो है लेकिन स्वीकार्य नहीं है। इसमें सभी के कल्याण जैसी उद्देश्य की बात ही नहीं की गई है।

(5) यह एक अलोकतांत्रिक प्रक्रिया है जिसने श्रम पर अंकुश लगाकर कल्याणकारी राज्य की सीमित भूमिका के द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमज़ोर किया है।

(6) सरकार द्वारा सब्सिडी आदि में कटौती ने अप्रत्यक्ष रूप से गरीब वर्ग को प्रभावित किया है।

29. भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। भारतीय संविधान के तहत भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारत का चुनाव आयेगा जनवरी, 1950 में स्थापित किया गया था। सुकुमार सेन भारत के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त थे। देश के पहले आम चुनाव 1952 में हुए थे। 1952 के पहले आम चुनाव की पूरी दुनिया में लोकतंत्र के इतिहास में मील का पत्थर माना जाता है।

(1) पहला आम चुनाव लोकतंत्र के इतिहास में एक मील का पत्थर था क्योंकि इसमें 17 करोड़ से अधिक मतदाता थे, जो पूरे विश्व में अपने आप में एक रिकार्ड था।

(2) लोकसभा की सदस्य संख्या 489 थी तथा भारत की सभी विधान-सभाओं के विधायकों की संख्या लगभग 3,200 थी। इन सदस्यों को एकल सदस्य निर्वाचन क्षेत्रों के आधार पर मतदाताओं द्वारा सीधे चुना जाता था।

(3) पहले आम चुनाव करने के लिए 3 लाख से अधिक अधिकारियों और मतदान कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

(4) पहला आम चुनाव एक गरीब और अशिक्षित देश में लोकतंत्र की पहली बड़ी परीक्षा भी थी। इससे पहले यूरोप और उत्तरी अमेरिका के समृद्ध और साक्षर देशों में चुनाव होते थे।

HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

(5) पहले आम चुनाव सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर आयोजित किए गए थे जबकि यूरोप के कई देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। भारत में सभी वयस्क महिलाओं को मताधिकार प्राप्त था नागरिकों को वोट देने का अधिकार दिया गया।

इस प्रकार, 1952 का पहला आम चुनाव पूरी दुनिया में लोकतंत्र के इतिहास में एक बड़ी उपलब्धि थी।

अथवा

2014 के बाद भारतीय राजनीति में बहुत बड़ा बदलाव आया है। पहले राजनीति जाति और धर्म पर आधारित थी लेकिन अब विकास और शासन पर अधिक जोर दिया जा रहा है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए III सरकार ने ''सबका साथ सबका विकास'' का नारा दिया है और विकास के लिए काम किया है और साथ ही आम जनता के लिए शासन भी बनाया है। आम जनता के लिए कई नई योजनाएं शुरू की गई हैं। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत अभियान, जन-धन योजना, किसान फसल बीमा योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, आयुष्मान भारत योजना आदि देश के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण योजनाएं हैं।

इन सभी उपर्युक्त योजनाओं के माध्यम से सरकार प्रशासन को आम ग्रामीण परिवारों के दरवाज़े तक ले जाना चाहती है। सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में वास्तविक लाभ विशेष रूप से महिलाओं को देना चाहती है। हम 2019 के लोकसभा चुनावों के परिणामों से इन योजनाओं की सफलता का आसानी से अनुमान लगा सकते हैं। मतदाताओं ने जाति, वर्ग, समुदाय, लिंग और क्षेत्र की परवाह किए बिना विकास और शासन के मुद्दों को महत्व दिया। इस प्रकार भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने 'सबका साथ सबका विकास' और सबका विश्वास'' के साथ लोकतांत्रिक परिवर्तन को चिह्नित किया।

30. नीति आयोग एक नई संरचना और नीति पर ध्यान केंद्रित करने के साथ 64 साल पुराने योजना आयोग की जगह लेगा जिसे समाजवादी युग के अवशेष के रूप में देखा जाता था। योजना आयोग की जगह एक नई संस्था की स्थापना की मांग लंबे समय से की जा रही थी और उम्मीद थी कि यह देश में मौजूदा आर्थिक ज़रूरतों और माहौल के लिए अधिक प्रांसगिक और उत्तरदायी होगी। 1990 के बाद से सरकार योजना आयोग को खारिज करती रही है क्योंकि लाइसेंस प्राप्त सरकार की बर्खास्तगी के बाद आयोग केवल एक सलाहकार बोर्ड की तरह काम कर रहा था। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने आयोग को जोकर का समूह कहा था। यहां तक कि मनमोहन सिंह और पूर्व योजना आयोग के उपाध्यक्ष के०सी० पंत ने भी कुछ बदलावों की संभावना तलाशने का प्रयास किया था। पूर्व केन्द्रीय मंत्री कमल नाथ ने इस आयोग को 'आर्म चेयर एडवाइजर' और नौकरशाहों के लिए पार्किंग स्थल का नाम दिया था योजना आयोग के सदस्य अरूण मारिया, जिन्होंने भारत में बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (बीसीजी) का नेतृत्व किया था, ने संरचना, भूमिका, कार्य और संसाधनों में बदलावों की सिफारिश की थी। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने कई बार योजना आयोग की कमियों की ओर ध्यान दिलाया था। इसलिए मई 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार ने 65 साल पुराने योजना आयोग की जगह नीति आयोग नामक एक नई संस्था की घोषणा की। उन्होंने 7 दिसंबर 2014 को दिल्ली में मुख्यमंत्रियों की एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई और नीति निर्माण में राज्य सरकारों की अधिक भागीदारी पर ज़ोर दिया। उन्होंने भारत की विविधता और बहुलता पर ज़ोर देते हुए कहा कि आयोग सहकारी संघवाद की भावना को बढ़ावा देगा और सहभागी विकास एजेंडा विकसित करना है जिसमें सशक्तिकरण और समानता पर ज़ोर दिया जाएगा।

नीति आयोग की संरचना—

नीति आयोग—राष्ट्रीय परिवर्तन संस्थान भारत की स्थापना नीति निर्माण में राज्य सरकारों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए की गई है जिससे सहकारी संघावद को बढ़ावा मिलेगा और यह राष्ट्र की समकालीन आवश्यकताओं के प्रति अधिक सजग होगा।

(1) अध्यक्ष — प्रधानमंत्री
(2) उपाध्यक्ष — प्रधानमंत्री द्वारा नामित
(3) मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी०ई०ओ०) — प्रधानमंत्री द्वारा नामित
(4) गवर्निंग कांउसिल — केंद्र शासित प्रदेशों में मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल
(5) क्षेत्रीय परिषद (आवश्यकतानुसार गठित)— केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल।
(6) पूर्णकालिक सदस्य — अधिकतम पाँच सदस्य
(7) अल्पकालिक सदस्य — दो पदेन सदस्य
(8) पदेन सदस्य — चार केंद्रीय मंत्री।

विशेष आमंत्रित— विशेषज्ञ, डोमेन ज्ञान वाले व्यवसायी। 5 जनवरी 2015 को महान अर्थशास्त्री अरविंद पनगढ़िया को नीति आयोग का पहला उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया और फिर सिंधुश्री खुल्लर को नीति आयोग का पहला सीईओ नियुक्त किया गया। अप्रैल 2022 में श्री सुमन बेरी को नीति आयोग का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। फरवरी 2023 में श्री बी०वी०आर० सुब्रह्मण्यम को नीति आयोग का सीईओ नियुक्त किया गया।

विभाग—

(1) यह अंतर्राज्यीय समस्याओं और उनके संबंधों आदि की एक सभा की तरह काम करता है।
(2) यह दीर्घकालिक योजनाओं की जांच और योजना बनाता है।
(3) तीसरा, यह प्रत्यक्ष लाभ, हस्तांतरण और यूआईडीएआई से संबंधित है।

उद्देश्यों का उद्देश्य—नए निकाय का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास, प्राथमिकता वाले क्षेत्रों और रणनीतियों का साझा दृष्टिकोण विकसित करना है। प्रभावी शासन के लिए विचारों का इनक्यूबटर बनना नीति आयोग की मुख्य मिशन भूमिका होगी नए राष्ट्रीय

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

एजेंडे के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) तत्व नीति और आर्थिक मामलों पर रणनीतिक और तकनीकी सलाह की सिफारिश करना।

(2) ग्राम स्तरीय योजनाओं के लिए तंत्र विकसित करना तथा इन्हें सरकार के उच्च स्तरों पर उत्तरोत्तर एकीकृत करना।

(3) सरकार के लिए एक थिंक टैंक एक दिशा-निर्देशक और नीति-निर्माता के रूप में कार्य करना तथा निजी क्षेत्र सहित अर्थव्यवस्था के लिए सुझाव प्रदान करना।

(4) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों तथा अन्य साझेदारों के लिए ज्ञान, नवाचार और उद्यमशीलता सहायता प्रणाली तैयार करना।

(5) देश के विकास एजेंडे के लिए एक मंच प्रदान करना।

(6) कार्यक्रमों और पहलों के कार्यान्वयन का प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करना।

कार्य— राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान

(1) राष्ट्रीय उद्देश्यों के आलोक में राज्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं, क्षेत्रों और रणनीतियों का साझा दृष्टिकोण विकसित करना।

(2) राज्यों के साथ सतत आधार पर संरचित समर्थन पहलों और तंत्रों के माध्यम से सहकारी कृषिवाद को बढावा देना, यह स्वीकार करते हुए कि मज़बूत राज्य ही मज़बूत राष्ट्र बनाते हैं।

(3) ग्राम स्तर पर विश्वसनीय योजनाएँ तैयार करने के लिए तंत्र विकसित करना तथा इन्हें सरकार के उच्च स्तरों के उत्तरोत्तर एकीकृत करना।

(4) यह सुनिश्चित करना कि जो क्षेत्र विशेष रूप से उसके पास भेजे गए हैं उनमें राष्ट्रीय सुरक्षा के हितों को आर्थिक रणनीति और नीति में शामिल किया जाए।

नीति आयोग मुख्यमंत्रियों और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की देखरेख में काम करेगा। आयोग नीति निर्माण में राज्य सरकारों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा, जिससे सहकारी संघवाद को बढ़ावा मिलेगा और यह देश की समकालीन जरूरतों के प्रति अधिक सजग होगा।

नीति आयोग की पहली बैठक 6 फरवरी 2015 को हुई और इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, वित्त मंत्री अरुण जेटली और उपाध्यक्ष श्री अरविंद पनगढ़िया ने भाग लिया। अन्य पूर्णकालिक सदस्य वी०के० सारस्वत, नितिन गडकरी, थावर चंद गहलोत, जी०एन० वाजपेयी, राजीव कुमार, राजीव लाल, आर वैदनाथन पार्थसारथी सोमे, सुबीर गोकर्ण, मुकेश बुरानी आदि बैठक में शामिल है।

नीति आयोग की दूसरी बैठक 15 जुलाई 2015 को हुई जिसमें प्रधानमंत्री ने इच्छा जताई कि गरीबी को खत्म करने के लिए केंद्र और राज्यों को मिलकर काम करना चाहिए। टीम इंडिया के हिस्से के रूप में सभी विकासों का केंद्र राज्य इकाइयां होनी चाहिए। परिषद ने भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्स्थापन अधिनियम में उचित मुआवजे और पारदर्शिता के अधिकार पर विचार-विमर्श किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीबी उन्मूलन के लिए केंद्र और राज्यों को मिलकर काम करना चहिए। मंत्री ने ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और किसानों की समृद्धि के लिए मुख्यमंत्री की भागीदारी और सुझावों के लिए उनका स्वागत किया और उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना, स्मार्ट सिटी, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत आदि योजनाओं की सफलता के लिए सुझाव भी मांगे।

विपक्ष ने नीति आयोग की स्थापना के निर्णय की आलोचना करते हुए इसे नौटंकी बताया और इसका नाम बदलकर अनीति एवं दुर्नीति आयोग रख दिया। हालाँकि किसी नए संस्थान के कामकाज का मूल्यांकन तभी किया जा सकता है जब वह पर्याप्त समय तक काम कर चुका हो। नीति आयोग की कार्यकुशलता मुख्य रूप से विशेषज्ञों की गुणवत्ता और उन्हें किस तरह से काम करने दिया जाता है इस पर निर्भर करेगी। साथ ही नीति आयोग की सफलता नियोजन प्रक्रिया के तकनीकी और राजनीतिक चालकों के बीच संतुलन बहाल करने में निहित है।

प्रशासनिक क्षमताओं के बारे में सोचना अभी बहुत जल्दी है जब तक यह नीचे तक नहीं पहुंचेगा ''अच्छे दिन'' आम आदमी को शायद ही महसूस होंगे। संविधान की नियति और नीति एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। आयोग के लिए सबसे अच्छी बात यह कही जा सकती है कि हमें इसे खुद को प्रकट करने और इसके परिणामों पर निर्भर होने के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए। आयोग का कामकाज भविष्य में भारत के आर्थिक विकास को बना या बिगाड़ सकता है।

अथवा

राज्य स्वायत्तता का अर्थ है ''न्यूनतम राजनीतिक शक्ति जिसे इकाइयों को प्रदान किया जाना है ताकि उन्हें अपने स्वयं के साधनों और आवश्यकताओं के अनुसार और अपने तरीके से अपने संसाधनों को विकसित करने के लिए पर्याप्त सुविधा मिल सके। दूसरे शब्दों में एक प्रांतीय स्वायत्तता का अर्थ यथार्थवादी शब्दों में एक विशेष चुनाव कार्यक्रम के तहत राज्य विधान सभा में बहुमत के साथ निर्वाचित एक राजनीतिक दल का अधिकार और क्षमता है उस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने और केंद्र द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बाधा डाले बिना इसे सफल बनाने का।

भारत में राज्य स्वायत्तता की मांग बढ़ने के मुख्य कारण—

(1) विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की अलग-अलग सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने की इच्छा।

(2) राज्य के पास पर्याप्त शक्तियों और वित्तीय संसाधनों का अभाव।

(3) बड़े अनुपात में क्षेत्रीय असंतुलन का विकास।

(4) अत्यधिक केन्द्रीकरण का उदय।

(5) बड़ी संख्या में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उदय।

(6) केंद्रीकृत योजना।

(7) केन्द्र सरकार द्वारा राजनीतिक उद्देश्य के लिए अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग।

(8) राज्यपाल का पक्षपातपूर्ण शासन।

(9) अखिल भारतीय सेवाओं के सदस्यों का राज्य सरकार के पदों पर नियोजन।

(10) संविधान संशोधन के संबंध में राज्यों की भूमिका नगण्य।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–4

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (ख) डेनमार्क और स्वीडन।
2. (ख) अपने सदस्यों द्वारा अनुपालन की जाने वाली रक्षा नीति बनाना।
3. (क) चीन।
4. (घ) रूस।
5. (क) चीन।
6. (ग) यह बच्चों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए काम करता है।
7. (घ) *i, ii* और *iv.*
8. (घ) अधिक भिन्न एवं विशिष्ट।
9. (ख) जम्मू और कश्मीर विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार था।
10. (क) राष्ट्रीय एकता।
11. (ख) *ii* और *iv.*
12. (ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R) अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

खंड—ख

13. (1) 1978 में चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था में ''खुले द्वार'' की नीति अपनाई।
    (2) 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बन गया और उसने अपनी अर्थव्यवस्था को दुनिया के अन्य देशों के लिए खोल दिया।
14. (1) आई०एल०ओ० पूरे विश्व में सामाजिक न्याय और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य श्रम अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए काम करता है।
    (2) यह काम के घंटों और काम की शर्तों के संबंध में नियम और विनियम तैयार करता है।
15. ग्लोबल कॉमन्स में पृथ्वी का वायुमंडल शामिल है। ग्लोबल कॉमन्स का उपयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए सीमित तरीके से ग्लोबल कॉमन्स की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि ग्लोबल कॉमन्स के बारे में जनता में जागरूकता पैदा की जाए।
16. (1) प्रथम आम चुनाव में इन पात्र मतदाताओं में से केवल 15 प्रतिशत ही साक्षर थे।
    (2) चुनाव आयोग को इस बारे में मतदान की कुछ विशेष विधियाँ सोचनी पड़ी ।
17. पूर्वोत्तर भारत की राजनीति में दो मुद्दे हावी हैं—
    (1) स्वायत्तता की मांग
    (2) अलगाव और बाहरी लोगों के विरोध के लिए आंदोलन।
18. धर्मनिरपेक्षता का शब्दकोश अर्थ राजनीति है। धर्म और धार्मिक विचारों के प्रति उदासीनता या अस्वीकृति या बहिष्कार। धर्मनिरपेक्षता धर्म को पूरी तरह से खारिज करती है बल्कि यह धर्म-विरोधी भावनाओं का समर्थन करती है। धर्मनिरपेक्षता का तात्पर्य भौतिकवादी विचारों द्वारा निर्देशित जीवन और आचरण का एक तरीका है। यह मानता है कि केवल भौतिकवाद ही मानव जाति को लाभ पहुँचाता है जबकि धार्मिक भावनाएँ इसे धीमा कर देती हैं लेकिन अपने आधुनिक अर्थ में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है धर्म की स्वतंत्रता और धार्मिक गतिविधि में राज्य की ग़ैर-हस्तक्षेप नीति।

खंड—ग

19. निम्नलिखित कारणों से दक्षिण एशिया को संघर्ष प्रवण क्षेत्र के रूप में जाना जाता है -
    (1) कुछ दक्षिण एशियाई देशों में लोकतांत्रिक स्थिर सरकार का अभाव है।
    (2) कुछ दक्षिण एशियाई देशों में धार्मिक कट्टरवाद दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।
    (3) आतंकवाद को समर्थन देने की पाकिस्तान की नीति दक्षिण एशियाई देशों के लिए खतरनाक है।
    (4) चीन अपने आर्थिक निवेश के जरिए लगातार दक्षिण एशियाई देशों के राजनीतिक क्षेत्र में दखल देता रहता है।

अथवा

इस तथ्य के कई कारण हैं कि संयुक्त राष्ट्र एक अपूर्ण संस्था है लेकिन इसके बिना विश्व की स्थिति बदतर हो जाएगी।

(1) संयुक्त राष्ट्र एक ऐसा क्षेत्र प्रदान करता है जिसमें अन्य देशों के दृष्टिकोण और नीतियों को संशोधित करना संभव है। संयुक्त राष्ट्र यह स्थान और नीतियां प्रदान करता है जिसमें विशिष्ट अमेरिकी दृष्टिकोण के विरुद्ध तर्क सुने जाते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(2) संयुक्त राष्ट्र के बिना विश्व की स्थिति बदतर हो जाएगी क्योंकि युद्धों और संघर्ष का खतरा बढ़ जाएगा।

(3) यह चर्चा और समझौते के माध्यम से संतुलन प्रदान करके अंतर्राष्ट्रीय युद्धों या तीसरे युद्ध की संभावनाओं को टालता है।

(4) आतंकवाद को भी बढ़ावा मिलेगा।

20. खतरे के नए स्रोत आतंकवाद, मानवाधिकार, वैश्विक गरीबी और प्रवासी हैं।

1. **आतंकवाद**—आतंकवाद मानव सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा है। आतंकवाद गैरकानूनी गतिविधियाँ हैं जिनका उपयोग वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
2. **मानवाधिकारों का अभाव**—अधिकांश देशों में दुनिया के कई देशों में मानवाधिकारों को लेकर कोई मतभेद नहीं हैं। अपने नागरिकों के लिए उपलब्ध है मानव अधिकारों का उल्लंघन।
3. **वैश्विक गरीबी**—वैश्विक गरीबी मानव सुरक्षा के लिए एक और बड़ा खतरा है।
4. **प्रवासी**—जो लोग स्वेच्छा से अपने देश को छोड़कर चले जाते हैं उन्हें प्रवासी कहा जाता है। ये प्रवासी मानव सुरक्षा के लिए भी समस्याएँ पैदा कर रहे हैं।

अथवा

ग्लोबल वार्मिंग का मतलब है पृथ्वी के वायुमंडल के तापमान में वृद्धि, जो कुछ गैसों की वृद्धि के कारण होती है। पिछले 50 वर्षों में, औसत वैश्विक तापमान रिकॉर्ड किए गए इतिहास में सबसे तेज़ दर से बढ़ रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह प्रवृत्ति धीमी हो रही है। नासा के 134 साल के रिकॉर्ड में 16 सबसे गर्म वर्षों में से एक छोड़कर सभी वर्ष 2000 के बाद से हुए हैं। आईपीसीसी (जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय पैनल) ने निष्कर्ष निकाला है कि, ''जलवायु पर मानवीय प्रभाव 20वीं सदी के मध्य से देखी गई गर्मी का प्रमुख कारण रहा है। सबसे बड़ा मानवीय प्रभाव ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन रहा है जिसमें 90% से अधिक प्रभाव कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन का है।

21. स्वतंत्रता के पश्चात् राज्यों का पुनर्गठन भाषाई आधार कर किया गया। प्रधानमंत्री नेहरू ने इस मुद्दे पर निष्पक्ष विचार-विमर्श के लिए 2 दिसंबर, 1953 को लोकसभा में राज्य पुनर्गठन आयोग की नियुक्ति की घोषणा की। आयोग ने भाषा और संस्कृति के आधार पर भी राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की। राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट पर विचार विमर्श के पश्चात्, केंद्र सरकार ने 1956 में लोकसभा में राज्य पुनर्गठन विधेयक प्रस्तुत किया जिसे कुछ संशोधनों के पश्चात् पारित कर दिया गया। राज्यों के पुनर्गठन के पश्चात् भारतीय संघ में 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेश शामिल किए गए। इसके पश्चात्, गुजराती और मराठी भाषा को लेकर आपसी विवाद हुआ जिसके परिणामस्वरूप बाम्बे-महाराष्ट्र और गुजरात का विभाजन हुआ था। 1961 में नागालैंड राज्य अस्तित्व में आया।

22. (1) स्थिर और सफल संबंध बनाने के लिए दोनों देशों को अधिक शांति वार्ता और सम्मेलन आयोजित करने का प्रयास करना चाहिए।

(2) दोनों देशों को अपने आर्थिक वाणिज्यिक और व्यापारिक हितों को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।

23. (1) भारत ने अपनी सैन्य शक्ति और क्षमताओं का निर्माण किया है।

(2) भारत ने अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों को मज़बूत किया है।

24. (*i*) सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के बीच संतुलन बनाए रखने वाले व्यक्ति भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू हैं।

(*ii*) कार्टून में सार्वजनिक क्षेत्र की ओर बड़ा झुकाव दिखाया गया है क्योंकि उस समय अधिकांश नेता सार्वजनिक क्षेत्र के पक्ष में थे।

(*iii*) प्रतिस्पर्द्धा की कमी के कारण सार्वजनिक क्षेत्र पर अत्यधिक ज़ोर देने से भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

25.

प्रयुक्त जानकारी के लिए क्रमांक	वर्णमाला	राज्यों के नाम
(*i*)	(C)	केरल
(*ii*)	(D)	पश्चिम बंगाल
(*iii*)	(A)	बिहार
(*iv*)	(B)	तमिलनाडु

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

26. (A) (क) भारत
(B) (ग) भारत
(C) (ख) चीन
(D) (क) क्यूबा।

खंड—घ

27. मिखाइल गोर्बाचेव 1985 में यूएसएसआर की जनरल पार्टी के महासचिव बने। उन्होंने राजनीतिक और आर्थिक सुधार शुरू किया। निम्नलिखित कारकों ने गोर्बाचेव को यूएसएसआर में सुधार शुरू करने के लिए मज़बूर किया।

(1) सोवियत संघ प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे आदि में पश्चिम से पीछे था।

(2) सोवियत प्रणाली निरंकुश थी। प्रशासन में भ्रष्टाचार व्याप्त था और लोग सरकार से विमुख थे। नागरिक राजनीतिक व्यवस्था से खुश नहीं थे।

(3) कम्युनिस्ट पार्टी सरकार और सभी संस्थाओं को नियंत्रित करती थी और लोगों के प्रति उत्तरदायी नहीं थी न तो कोई विपक्षी पार्टी थी और न ही कोई लोकतांत्रिक मूल्य थे।

(4) सोवियत संघ नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा करने में विफल रहा।

(5) अफगानिस्तान पर आक्रमण ने सोवियत संघ को आर्थिक और राजनीतिक दोनों रूप से कमज़ोर कर दिया।

गोर्बाचेव ने इस व्यवस्था में सुधार करने की कोशिश की उन्होंने पुनर्गठन और ग्लासनोस्त (खुलेपन) की आर्थिक और राजनीतिक सुधार नीतियों की शुरूआत की।

ये सुधार सोवियत संघ को सूचना और प्रौद्योगिकी क्रांतियो से अवगत रखने के लिए आवश्यक थे।

हालाँकि सत्ता और विशेषाधिकार कम होते जा रहे लेकिन गोर्बाचेव ने जल्दबाजी में नीतियाँ लागू होने के परिणामस्वरूप, उसने लोकप्रिय समर्थन खो दिया। इस कारण पूर्वी यूरोपीय देशों के लोगों ने अपनी सरकारों और सोवियत नियंत्रण के खिलाफ विरोध करना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया के साथ ही सोवियत संघ के भीतर संकट तेज़ी से बढ़ने लगा जिसने इसके विघटन को गति दी।

चूंकि नैतिक रूप से विविधतापूर्ण छोटे राज्यों द्वारा राष्ट्रवाद के उदय के कारण सोवियत संघ के भीतर आंतरिक संघर्ष था। इस प्रकार सोवियत संघ का विघटन हुआ और समाजवादी व्यवस्था का पतन हुआ। सोवियत संघ के विघटन का अर्थ है कई नए स्वतंत्र देशों का उदय। यूएसएसआर के सभी 15 संघ गणराज्य स्वतंत्र राज्य बन गए हैं। प्रत्येक देश की अपनी राजनीतिक आकांक्षाएँ हैं। उनमें से कुछ विशेष रूप से बाल्टिक और पूर्वी यूरोपीय राज्य, यूरोपीय संघ में शामिल हो गए और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO) के सदस्य बन गए।

अथवा

सुरक्षा दो प्रकार की होती है—पारंपरिक और ग़ैर-पारंपरिक। सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणा मुख्य रूप से सैन्य बलों के उपयोग के खतरे से संबंधित है ग़ैर-पारंपरिक सुरक्षा में अस्तित्व की स्थितियों को प्रभावित करने वाले खतरों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। सुरक्षा के ग़ैर-पारंपरिक दृष्टिकोण को ''मानव सुरक्षा'' या 'वैश्विक सुरक्षा' के रूप में भी जाना जाता है जिसमें व्यक्ति और पूरी मानवता शामिल हैं।

सुरक्षा के लिए खतरे के ग़ैर-पारंपरिक स्त्रोतों के अंतर्गत स्वास्थ्य-महामारी खतरे का नया स्त्रोत है तथा एचआईवी-एड्स, बर्डफ्लू, गंभीर श्वसन सिंड्रोम (SARS) और कोरोना जैसी स्वास्थ्य महामारियाँ प्रवास, व्यापार पर्यटन और सैन्य अभियानों के कारण तेज़ी से फैली है। इबोला-वायरस और हंटा-वायरस हेपेटाइटिस सी जैसी बीमारी उभरी है और उनका इलाज करना मुश्किल है। जानवरों में होने वाली महामारियाँ जैसे कि पागल-गाय रोग, बर्ड फ्लू आदि का बड़ा आर्थिक प्रभाव पड़ता है। साथ ही तेज़ी से हो रहा पर्यावरण क्षरण सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण सभी विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएँ और मानव सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं।

28. जापान एक द्वीप समूह शांतिपूर्वक स्थित है। प्रशांत महासागर के सुदूर पूर्व में स्थित इस देश का इतिहास और संस्कृति बहुत समृद्ध है और एक ऐसी सदी जो अपने छोटे से पदचिह्न को सही ठहराने में विफल रही। प्रथम विश्व युद्ध में भारी तबाही का सामना करने के बावजूद यह 60 के दशकों के अंत में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा और चार दशको से अधिक समय तक उस स्थान पर बनी रही। हालाँकि चीन 2011 में जापान से आगे निकलकर दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। यह जापान ही था जिसने 1950 के दशक में निर्यात आधारित मॉडल अपनाकर एशिया के विकास की मिसाल कायम की। जापान का राष्ट्रीय नाम निप्पान है जिसका अर्थ है उगते सूरज की भूमि। इसकी राजधानी टोक्यो 30 मिलियन से अधिक निवासियों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा महानगरीय क्षेत्र है।

(1) चीन और जापान के बीच पहले से ही प्रतिद्वंदिता थी। चीन की आर्थिक और सैन्य शक्ति बढ़ने से जापान को नुकसान हो सकता था। इसलिए जापान ने चीन से लड़ने के लिए अपनी सैन्य शक्ति के साथ-साथ आर्थिक शक्ति भी बढ़ानी शुरू कर दी।

(2) कोरिया जो एक परमाणु शक्ति संपन्न देश है की ओर से बार-बार परमाणु बमों की धमकियाँ दिए जाने से जापान का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। इसी कारण जापान एक शक्ति केंद्रित राष्ट्र के रूप में उभरना चाहता था।

(3) चीन के वन बेल्ट वन रोड सिद्धान्त ने जापान को सचेत करने का प्रयास किया जो अपने राज्यों की रक्षा के लिए एक शक्तिशाली राष्ट्र बनना चाहता था।

(4) तब मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य ने भी मज़बूर किया जापान एक शक्तिशाली राष्ट्र बन गया।

उपयोक्त कारणों से जापान एक शक्तिशाली राष्ट्र बन गया और उसका उत्थान हुआ।

2017 में ग्लोबल ट्राइपॉवर इंडेम्स के अनुसार सैन्य शक्ति के मामले में जापान 7वां सबसे बड़ा देश था। केवल अमेरिका, रूस, चीन, भारत, फ्रांस और इंग्लैंड ही जापान से आगे थे।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

सैन्य खर्च के मामले में जापान दुनिया के शीर्ष दस देशों में शुमार है। जिसमें अमेरिका चीन, रूस, भारत, सऊदी अरब, फ्रांस, इंग्लैंड, जापान और जर्मनी शामिल हैं।

अथवा

ग्लोबल कॉमन्स का अर्थ—वैश्विक कॉमन्स दुनिया के वे क्षेत्र, वस्तुएँ या संसाधन हैं जो किसी एक राज्य या व्यक्ति के अनन्य अधिकार क्षेत्र का हिस्सा नहीं हैं। ग्लोबल कॉमन्स के उदाहरण हैं पार्क या नदी, पृथ्वी का वायुमंडल, महासागर तल, वायु क्षेत्र, बाहरी अंतरिक्ष अंटार्कटिका। ग्लोबल कॉमन्स और वैश्विक पर्यावरण को विश्व धरोहर भी कहा जाता है क्योंकि इन्हें वर्तमान पीढ़ी द्वारा अगली पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है और इस तरह। वैश्विक राजनीति में पर्यावरण संबंधी चिंताएं महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। वैश्विक पर्यावरण संरक्षण से संबंधित मुद्दे निम्नलिखित कारणों से 1990 के बाद से यह राज्यों की प्राथमिकता बन गया है।

(1) कृषि भूमि की उर्वरता में काफी कमी आ रही है अत्यधिक चराई के कारण घास के मैदान समाप्त हो गए हैं तथा अत्यधिक कटाई के कारण मछलियों की आपूर्ति कम हो गई है। अत्यधिक प्रदूषण के कारण जल निकायों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

(2) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की मानव विकास रिपोर्ट 2006 के अनुसार विकासशील देशों में लगभग 1.2 बिलियन लोगों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है और लगभग 2.6 बिलियन लोगों के पास स्वच्छता सुविधाएं नहीं हैं।

(3) प्राकृतिक वनों को बड़े पैमाने पर काटा जा रहा है और लोगों को विस्थापित किया जा रहा है जिससे जैव विविधता को नुकसान हो रहा है।

(4) पृथ्वी के समताप मंडल में ओज़ोन की कुल मात्रा में लगातार कमी हो रही है जिससे पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा हो रहा है।

(5) तटीय प्रदूषण विश्व स्तर पर बढ़ रहा है भूमि आधारित गतिविधियों के कारण तटीय जल प्रदूषित हो रहा है।

29. 2006 में नेपाल में एक असाधारण लोकप्रिय आंदोलन शुरू हुआ था। दरअसल नेपाल एक राजशाही राज्य था जिसके राजा राजा बीरेंद्र थे। 1990 में उन्होंने संवैधानिक राजतंत्र को अपनी स्वीकृति दे दी। फिर भी राजा राज्य के औपचारिक प्रमुख बने रहे लेकिन वास्तविक शक्ति लोकतांत्रिक रूप से चुने गए लोगों के हाथों में थी। 2001 में एक रहस्यमय नरसंहार में राजा बीरेंद्र के शाही परिवार के अन्य 5 सदस्यों की हत्या कर दी गई। फिर राजा ज्ञानेंद्र ने कार्यभार संभाला जिन्हें संवैधानिक राजतंत्र का विचार पसंद नहीं था फरवरी 2005 में, उन्होंने कमज़ोर और अलोकप्रिय सरकार का फायदा उठाया और प्रधानमंत्री को बर्खास्त कर दिया फिर उन्होंने संसद को भी भंग कर दिया और देश की कमान संभाली। लेकिन अप्रैल 2006 में नेपाल में लोकतंत्र को बहाल करने और राजा को उखाड़ फेंकने के लिए एक लोकप्रिय आंदोलन शुरू हुआ। देश के सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने सात पार्टी गंठबंधन (एसपीए) नामक गठबंधन बनाया और चार दिनों की हड़ताल का आह्वान किया। बाद में इसे अनिश्चितकालीन हड़ताल में बदल दिया गया और फिर इसमें माओवादी विद्रोही भी शामिल हो गए। सुरक्षा बल लाखों लोगों को तितर-बितर करने में असमर्थ थे। जिनकी मांग देश में लोकतंत्र बहाल करने की थी। 1 अप्रैल तक प्रदर्शनकारियों की संख्या 3-5 लाख हो गई थी। उन्होंने (एसए) ने राजा को अल्टीमेटम दिया। राजा ने आधे मन से उन मांगों को स्वीकार कर लिया और कुछ रियायतें दीं। लेकिन आंदोलन के नेताओं ने उन रियायतों को अस्वीकार कर दिया। 24 अप्रैल 2004 को राजा ने दबाव में आकर उन सभी मांगों को स्वीकार कर लिया। संसद को बहाल किया गया जिसने राजा की शक्तियों को छीन लिया। इस तरह नेपाल में लोकतंत्र बहाल हुआ। 20 सितंबर, 2015 को नेपाल में नया संविधान लागू किया गया।

अथवा

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की सलाह पर राष्ट्रपति ने आंतरिक आपातकाल की घोषणा की। 25 जून 1975 को हज़ारो कार्यकर्ता और नेता विपक्षी दलों के कई नेताओं को मीसा के तहत जेलों में डाल दिया गया। प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया गया। गुजरात और तमिलनाडु की विधानसभाए भंग कर दी गईं। आपातकाल के दौरान श्रीमती गांधी के पुत्र संजय गांधी ने उन्हें गोली मार दी थी। इंदिरा गांधी बहुत शक्तिशाली हो गईं। श्रीमती इंदिरा गांधी ने जनवरी 1977 में लोकसभा चुनावों की घोषणा की और जेल में बंद राजनीतिक नेताओं को रिहा कर दिया। आपातकाल से निम्नलिखित तीन सबक सीखे गए—

(1) नौकरशाही और न्यापालिका स्वतंत्र होनी चाहिए— नौकरशाही स्वतंत्र और निष्पक्ष होना चाहिए। उसे सत्ताधारी पार्टी की विचारधारा और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होना च+ाहिए बल्कि नौकरशाही को संविधान के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए न्यायपालिका को कार्यपालिका के अधीन नहीं होना चाहिए। न्यायपालिका स्वतंत्र होना चाहिए और नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।

(2) सरकार को संविधान के प्रावधानों के अनुसार प्रशासन चलाना चाहिए। संविधान सर्वोच्च है और इसकी सर्वोच्चता की रक्षा न्यायपालिका द्वारा की जानी चाहिए।

(3) प्रेस की स्वतंत्रता को कुचला नहीं जाना चाहिए लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए प्रेस की स्वतंत्रता बहुत आवश्यक है। प्रेस के द्वारा लोगों में राजनीतिक चेतना पैदा की जाती है।

30. हमारे देश में लोकतांत्रिक राजनीति के पहले चरण में विपक्षी दलों की भूमिका काफ़ी अनोखी थी। तब भी भारत में कई अन्य बहुदलीय लोकतंत्रों की तुलना में बड़ी संख्या में विविध और जीवंत विपक्षी दल थे।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

आज़ादी के बाद भारतीय राजनीति में कांग्रेस पार्टी का दबदबा रहा। पहले तीन चुनावों में कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा में दो तिहाई से ज़्यादा सीटें हासिल कीं। फिर भी लोकसभा में कई विपक्षी दल उभरें। हालाँकि लोकसभा में कोई आधिकारिक और मान्यता प्राप्त विपक्ष नहीं था। फिर भी कई छोटे-छोटे विपक्षी दल थे जिन्होंने व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र की अहम् भूमिका निभाई। आज की लगभग सभी ग़ैर-कांग्रेसी पार्टियों की जड़ें 1950 के दशक की किसी-न-किसी विपक्षी दल पार्टी में देखी जा सकती है। यद्यपि विपक्षी दलों का लोकसभा में नाममात्र का प्रतिनिधित्व था फिर भी विपक्षी नेता अपनी स्थिति और व्यक्तित्व के कारण बहुत प्रभावी थे। विपक्षी दलों ने कांग्रेज पार्टी की नीतियों की आलोचना की और सत्तारूढ़ दल को नियंत्रण में रखा। विपक्षी दल स्वस्थ और सकारात्मक आलोचना में विश्वास करते हैं। इस प्रकार, विपक्षी दलों ने व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अथवा

मंडल आयोग की स्थापना अनता सरकार ने 1 जनवरी, 1979 को की थी। मंडल आयोग की स्थापना बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री बी.पी. मंडल ने की थी। मंडल आयोग को सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों को परिभाषित करने के लिए आवश्यक उपायों की सिफ़ारिश की थी। मंडल आयोग ने 3,743 अन्य पिछड़े वर्गों की पहचान की। मंडल आयोग की सिफारिशें इस प्रकार हैं—

(1) सार्वजनिक सेवाओं में ओबीसी के लिए 27 प्रतिशत पद आरक्षित किए जाने चाहिए। वे कुल जनसंख्या का 52 प्रतिशत है फिर भी उनके लिए आरक्षण कोटा इस सीमा से अधिक नहीं हो सकता।

(2) अन्य पिछड़े वर्गों के लिए विशेष रूप से बनाए गए कल्याणकारी कार्यक्रमों को भारत सरकार द्वारा उसी तरीके से और उसी सीमा तक वित्तपोषित किया जाना चाहिए, जैसा कि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के मामले में पहले ही किया जा चुका है।

(3) छोटे भूमि धारकों को अपने जीवन-यापन के लिए धनी किसानों पर भारी निर्भरता से मुक्त करने के लिए राज्यों में आमूलचूल भूमि सुधार लागू किए जाने चाहिए।

(4) अन्य पिछड़े वर्गों को लघु उद्योग स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और उनकी मदद की जानी चाहिए।

(5) ओबीसी के लिए व्यावसायिक शिक्षण पर ज़ोर देते हुए विशेष शैक्षणिक योजनाएं शुरू की जानी चाहिए। उन्हें तकनीकी और व्यावसायिक संस्थानों में विशेष कोचिंग भी दी जानी चाहिए ताकि वे ओपन कोटा के छात्रों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकें।

मंडल रिपोर्ट का कार्यान्वयन—जन आयोग ने दिसंबर 1980 में अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी। इसे 30 अप्रैल, 1982 को संसद् के दोनों सदनों में प्रस्तुत किया गया। तब से लगातार यह मांग उठती रही है कि इसकी सिफारिशों को बिना किसी जांच-पड़ताल के पूरी तरह स्वीकार कर लिया जाए। राष्ट्रीय मोर्चा ने अपने चुनावी घोषणापत्र में मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू करने का वादा किया था लेकिन सत्तारूढ़ पार्टी के नेताओं ने इस बारे में परस्पर विरोधी विचार व्यक्त किए हालाँकि, प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह राजनीतिक लाभ के कारणों से अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों को भी विश्वास में लिए बिना संसद् में 7 अगस्त, 1990 को अचानक मंडल रिपोर्ट को स्वीकार करने की घोषणा कर दी। लेकिन श्री वी.पी. सिंह के इस कदम से लोगों में निराशा फैल गई।

अपने वरिष्ठतम सहयोगियों को अलग-थलग कर दिया, भारतीय जनता पार्टी और सी.पी.एम. को इस जल्दबाजी भरे फैसले की सार्वजनिक रूप से निंदा करने का मौका दिया। रिपोर्ट के क्रियान्वयन से गंभीर रूप से प्रभावित छात्र समुदाय ने पूरे देश में एक व्यापक आंदोलन शुरू किया और शुरू में सरकार को गिरने के कगार पर ला खड़ा किया। आरक्षण विरोधी आंदोलन विशेष रूप से नई दिल्ली, चंडीगढ़, कुरुक्षेत्र, जम्मू, जयपुर और उत्तर भारत के कई अन्य शहरों में उन्मादी हिंसा के नए शिखर पर पहुंच गया था।

नवंबर, 1992 में सुप्रीम कोर्टई ने वी.पी. सिंह की सरकार के आदेश को वैध और लागू करने योग्य माना, बशर्ते कि चार महीने के भीतर क्रीमी लेयर या लाभार्थी पिछड़े वर्गों के अधिक उन्नत वर्ग को बाहर रखा जाए। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी माना कि सभी आरक्षणों का अधिकतम आकार 50 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

Holy Faith New Style Sample Paper–5

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए नमूना पेपर-1 देखें।

खंड—क

1. (ख) सोवियत संघ 1992 में विघटित हो गया।
2. (घ) रूस।
3. (ग) वैश्विक गरीबी।
4. (ग) सतत विकास।
5. (घ) 1991.
6. (घ) अधिक भिन्न एवं विशिष्ट।
7. (ख) नव-उदारवादी वैश्वीकरण का विरोध।
8. (क) जनवरी, 2007 में नैरोबी।
9. (ग) रियासतों की संख्या-512.
10. (घ) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
11. (ख) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
12. (क) A-(*iii*), (B)-(*i*), (C)-(*iv*), (D)-(*ii*).

खंड—ख

13. मिखाइल गोर्बाचेव देश के अंतिम राष्ट्रपति थे। सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे। वे 1985 से 1991 तक राष्ट्रपति रहे।
14. अस्थिरता के दो कारण हैं—
    (1) पाकिस्तान ने लोकतंत्र की राह में सेना एक बड़ी बाधा है।
    (2) पाकिस्तान में लोकतंत्र के रास्ते में एक और बाधा धार्मिक कट्टरवाद है।
15. शांति और सुरक्षा मानव जाति के सभी प्रकार के विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। 'सुरक्षा' का मतलब सरल शब्दों में खतरों से मुक्ति है लेकिन हर प्रकार का खतरा सुरक्षा के लिए खतरा नहीं है। केवल वे चीज़ें ही सुरक्षा के लिए खतरा है जो मूल मूल्यों को खतरा पहुँचाती हैं।
16. स्वतंत्रता के पश्चात् राज्यों का पुनर्गठन भाषाई आधार पर 1956 में राज्य पुनर्गठन पर अधिनियम पारित किया गया जिसके परिणामस्वरूप 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेशों का निर्माण हुआ।
17. (1) नीति आयोग उचित और महत्वपूर्ण रणनीति और दिशा-निर्देश प्रदान कर सकता है जिसके तहत विकास प्रक्रिया आगे बढ़ सकती है।
    (2) राष्ट्रीय उद्देश्यों के आलोक में राज्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ राष्ट्रीय विकास का प्राथमिकताओं, क्षेत्रों और रणनीतियों का एक साझा दृष्टिकोण विकसित करना।
18. लाल बहादुर शास्त्री 1964 से 1966 तक भारत के प्रधानमंत्री थे। उन्होंने 1930 से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने प्रसिद्ध नारा दिया : 'जय जवान, जय किसान' ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद, प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का 10 जनवरी को ताशकंद में अचानक निधन हो गया।

खंड—ग

19. अधिकांश साम्यवादी देश अधिनायकवादी व्यवस्था से लोकतांत्रिक पूंजीवादी व्यवस्था में परिवर्तित हो गये। विश्व बैंक और आई०एम०एफ० के माध्यम से सत्तावादी समाजवादी वय्वस्था से लोकतांत्रिक पूंजीवादी व्यवस्था में संक्रमण की प्रक्रिया को शॉक थेरेपी कहा जाता है। शॉक थेरेपी के मुख्य परिणाम निम्नलिखित थे—
    (1) इन देशों में राज्य के स्वामित्व से निजी स्वामित्व में परिवर्तन के कारण उद्योग कुछ समय के लिए ठप्प पड़ गए और उत्पादन में भारी गिरावट आई।
    (2) शॉक थेरेपी के कारण उपभोक्ता वस्तुओं की भारी कमी हो गई। यहाँ तक कि जीवन की दैनिक आवश्यकता भी उपलब्ध नहीं थी।
    (3) कालाबाज़ारियो और स्टॉकिस्टो ने स्थिति का पूरा फायदा उठाया और वे फलने-फूलने लगे।
    (4) कीमतें बहुत अधिक थीं यह जनता की क्षमता से परे थी।

    अथवा

    (1) 1978 में डेंग जियाओपिंग ने चीन में 'ओपन डोर' नीति और आर्थिक सुधारों को अपनाया।
    (2) चीन ने 1982 में कृषि क्षेत्र में निजीकरण शुरू किया।
    (3) चीन ने 1998 में औद्योगिक क्षेत्र में निजीकरण शुरू किया।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(4) विशेष आर्थिक क्षेत्र से व्यापार बाधाएँ हटा दी गईं जहाँ विदेशी निवेशक अपने उद्यम स्थापित कर सकते थे।

20. स्थिर लोकतंत्र के निर्माण में पाकिस्तान की विफलता में योगदान देने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

(1) पाकिस्तान में लोकतांत्रिक शासन के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन के अभाव ने सैन्य प्रभुत्व को बढ़ावा दिया है।

(2) अमेरिका और अन्य देशों ने भी अपने हित के लिए पाकिस्तान में सैन्य शासन का समर्थन किया।

(3) पाकिस्तान और भारत विरोधी रुख ने प्री-मिलिट्री ग्रुप को और अधिक शक्तिशाली बना दिया है।

अथवा

(1) भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है जिसमें विश्व की लगभग पांचवीं जनसंख्या निवास करती है।

(2) भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है।

(3) भारत को संयुक्त राष्ट्र पर पूरा भरोसा है और उसने संयुक्त राष्ट्र के सभी पहलुओं में सक्रिय रूप से भाग लिया है।

(4) भारत ने संयुक्त राष्ट्र के शांति प्रयासों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

21. राजगोपालाचारी ने 1959 में स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की।

(1) स्वतंत्र पार्टी का दृढ़ विश्वास था कि सरकार को आर्थिक गतिविधियों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

(2) पार्टी केंद्रीकृत योजना के खिलाफ थी।

(3) यह कृषि में भूमि की अधिकतम सीमा के भी खिलाफ था और सरकारी खेती का विरोध करता था।

22. 15 अगस्त, 1947 को सर्वोच्चता की समाप्ति के साथ भारतीय रियासतों को अपने भाग्य का फैसला खुद करने के लिए छोड़ दिया गया। वे चाहें तो किसी भी डोमिनियन (भारत या पाकिस्तान) में शामिल हो सकते थे या स्वतंत्र रह सकते थे। इस तथ्य को देखते हुए कि 565 राज्यों में से 10 को छोड़कर बाकी सभी उस क्षेत्र में थे जो अंततः उससे अधिकार क्षेत्र में आता था, भारत के सामने एक कठिन चुनौती थी। इन राज्यों को ब्रिटिश सरकार ने भारत के बाकी हिस्सों में फैल रही राजनीतिक अशांति के खिलाफ सुरक्षा कवच के रूप में काम करने के लिए तैयार किया था। वे प्रतिक्रिया के गढ़ बन गए थे। निरंकुश शासन की उनकी परंपराओं ने स्वतंत्रता के लिए किसी भी आंदोलन को सिर उठाने की भी अनुमति नहीं दी। राष्ट्र निर्माण और देश एकता के लिए इन रियासतों को भारतीय संघ में शामिल करना आवश्यक था।

सरकार के विचार तीन बिंदुओं पर आधारित थे। सबसे पहले तो अधिकांश रियासतों के लोग भारत में विलय चाहते थे दूसरे सरकार का रुख बहुत लचीला था और तीसरे विभाजन की पृष्ठभूमि में भूमि के सीमांकन को लेकर विवाद सामने आया। जो भारतीय राष्ट्रीय एकता के पक्ष में नहीं था।

लेकिन, एक राजनेता के रूप में अपने श्रेय के लिए, राज्य मंत्रालय के निर्देशन प्रतिभावान सरदार वल्लभभाई पटेल ने एक साल के भीतर उनकी समस्या का समाधान कर दिया। इसके अलावा, कश्मीर और हैदराबाद के अपवादों को छोड़कर किसी की जान नहीं गई। सरदार पटेल एक मज़बूत और एकजुट भारत बनाने के लिए दृढ़ थे इसलिए उन्होंने राज्यों को शेष भारत के साथ जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया। उन्होंने शासकों को मनाया, उन्हें बहलाया और अनिच्छुक लोगों को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी भी दी। लार्ड माउंटबेटन ने भी इस कठिन कार्य में उनकी मदद की।

सबसे पहले सरदार पटेल ने राजाओं से सहयोग की अपील की। उनसे देशभक्त की तरह व्यवहार करने की अपील की और उन्हें चेतावनी दी कि यह विकल्प उनके हित में नहीं होगा। उन्होंने राजाओं को उदार प्रिवी पर्स और पूर्ण स्वामित्व का आश्वासन दिया। सरदार पटेल ने अपने नागरिकों को भारत के नागरिकों के समान अधिकार, स्वतंत्रता और विशेषाधिकार की गारंटी भी दी। प्रतिक्रिया बहुत अच्छी थी। एक के बाद एक राजकुमारों ने विलय के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किया। 15 अगस्त, 1947 तक इसकी भौगोलिक सीमा के भीतर तीन राज्यों को छोड़कर सभी भारतीय प्रभुत्व में शामिल हो गए थे। जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर अपवाद थे।

23. शीत युद्ध के बाद निम्नलिखित परिवर्तन हुए जिनके कारण संयुक्त राष्ट्र को बेहतर ढंग से कार्य करने के लिए सुधार की आवश्यकता पड़ी—

(*i*) सोवियत संघ के लुप्त होने के बाद अमेरिका एकमात्र महाशक्ति के रूप में खड़ा है।

(*ii*) 9/11 की आतंकवादी घटना ने संयुक्त राष्ट्र को शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए बेहतर काम करने के लिए मज़बूर किया।

(*iii*) चीन का एक बड़ी शक्ति के रूप में उबरना भी अमेरिकी नीति पर अंकुश था।

(*iv*) संयुक्त राष्ट्र भी विश्वव्यापी समस्याओं जैसे एड्स, आतंकवाद, परमाणु हथियार, पर्यावरण वैश्वीकरण, गृह युद्ध आदि से प्रभावित है।

(*v*) शीत युद्ध की समाप्ति के बाद कई नए स्वतंत्र देश उभरे।

(*vi*) शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत जैसे नए विकासशील राष्ट्र आर्थिक रूप से विकासशील राष्ट्र के रूप में उभरे और पूरी तरह से आर्थिक रूप से संयुक्त राष्ट्र पर निर्भर नहीं रहे।

खंड—घ

24. (A) (घ) उपरोक्त।

(B) (क) नागरिक।

(C) (घ) मानव विकास के साथ आर्थिक विकास।

(D) (क) सुरक्षा।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD

25.

(क)	(ख)
(A) स्वीडन	(*i*) स्वीडन
(B) घाना	(*ii*) ऑस्ट्रिया
(C) ऑस्ट्रिया	(*iii*) मिस्र
(D) मिस्र	(*iv*) घाना।

26. (*i*) इस कार्टून में ड्रेगन चीन से संबंधित है।

(*ii*) चीन एक महान शक्ति के रूप में उभर रहा है अनुमति है कि 2040 तक यह अमेरिका को पीछे छोड़कर दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जागा। हालांकि, भारत के लिए यह उपयुक्त परिस्थितियाँ नहीं हैं।

(*iii*) (*a*) आर्थिक क्षेत्र में, चीन की अर्थव्यवस्था बहुत तेज़ी से बढ़ रही है।

(*b*) चीन की सैन्य शक्ति बहुत मज़बूत है।

खंड—ङ

27. पाकिस्तान के संविधान के निर्माण के बाद जनरल अयूब खान ने प्रशासन संभाला और बाद में खुद को पाकिस्तान का राष्ट्रपति चुन लिया। लेकिन जनता उनके शासन से खुश नहीं थी। अंतत: सैन्य शासन स्थापित हुआ और जनरल याह्या खान को बांग्लादेश संकट का सामना करना पड़ा। 1971 में बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा। इसके बाद पाकिस्तान में लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना हुई और 1971 से 1977 तक जुल्फिकार अली भुट्टो प्रधानमंत्री बने। लेकिन 1977 में जनरल जिया-उल-हक ने जुल्फिकार भुट्टों को हटा दिया। 1988 में फिर से लोकतांत्रिक सरकार बनी।

बेनजीर भुट्टो के नेतृत्व में सरकार की स्थापना हुई। 1988 से 1999 तक पाकिस्तान में लोकतंत्र कायम रहा। 1999 में प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को हटा दिया गया और जनरल मुशर्रफ पाकिस्तान के शासक बन गए। 2001 में जनरल मुशर्रफ ने खुद को पाकिस्तान का राष्ट्रपति चुन लिया। सितंबर 2008 में चुनाव हुए और लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना हुई।

लोकतंत्र की विफलता और स्थिर और मज़बूत लोकतंत्र की स्थापना में कई कारक जिम्मेदार हैं। सेना, पादरी और जमींदार अभिजात वर्ग का सामाजिक प्रभुत्व लोकतांत्रिक सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए जिम्मेदार है भारत के साथ युद्धों ने सैन्य शासकों और समर्थक सैन्य समूहों को बहुत शक्तिशाली बना दिया है। इस तथ्य के बावजूद कि पाकिस्तान में लोकतंत्र सफल नहीं हुआ है वहां लोकतंत्र के पक्ष में मज़बूत भावनाएं रही हैं।

इसके अलावा, अमेरिका और अन्य पश्चिम देशों ने अपने हितो के लिए सैन्य शासकों को प्रोत्साहित किया है।

अथवा

वैश्वीकरण के परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) इससे दुनिया के विभिन्न देशों में वस्तुओं, पूंजी, लोगों और विचारों का प्रवाह हुआ है जिससे आर्थिक विकास और लोगों की बेहतर भलाई हुई है।

(2) खान-पान की आदतें, पहनावे की आदत तथा संगीत और फिल्मों में रुचि में बदलाव आया है।

(3) उपग्रहों के उद्‌भव जैसी प्रौद्योगिकी के आविष्कार ने संचार में क्रांति ला दी है। विश्व के विभिन्न भागों के बीच समन्वय बढ़ रहा है।

(4) समरूप संस्कृति विकसित हो रही है।

(5) कुछ आलोचकों का तर्क है कि वैश्वीकरण के कारण सरकार की कार्य करने की क्षमता कम हो गई है और इस प्रकार कल्याणकारी राज्य का पतन हो गया है उनके अनुसार बाज़ार और बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वैश्वीकरण की शुरुआत कर दी है।

(6) विभिन्न देशों की स्वदेशी संस्कृति चुनौतियेम और खतरों का सामना कर रही है।

28. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, सोवियत संघ एक महाशक्ति बन गया और यूएसएसआर समाजवादी गुट का नेता बन गया। निम्नलिखित कारक थे जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ को महाशक्ति बनने में मदद की।

(1) यूएसएसआर में अर्थव्यवस्था की योजना बनाई गई थी और पूरी तरह से राज्य द्वारा नियंत्रित किया गया था।

(2) सोवियत संघ के पास पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन थे।

(3) इसमें परिवहन और दूरसंचार के आधुनिक साधन थे।

(4) सोवियत संघ के नागरिकों को जीवन के लिए आवश्यक सभी बुनियादी ज़रूरतें प्राप्त थीं।

(5) इसके पास एक शक्तिशाली और बड़ी सेना थी।

(6) उसके पास परमाणु हथियार थे और सोवियत संघ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य था।

अथवा

वैश्विक शब्द का शाब्दिक अर्थ है ग्लोब से संबंधित होना जिसका तात्पर्य मानव जाति के प्राकृतिक आवास यानी वैश्विक ग्रह पृथ्वी से जुड़ा होना है। वैश्वीकरण को सामाजिक और आर्थिक संपर्क एक प्रक्रिया एक एकल इकाई माना जाता है जहाँ लोगों के बीच है जो अन्योन्याश्रितता पर आधारित हैं। दुनिया को वैश्विक गाँव माना जाता है जहाँ वैश्विक मुद्दे और समस्याएँ वैश्विक प्रयासों और सहयोग से हल की जा सकती है। वैश्वीकरण के रूप में भी समझाया जा सकता है। सरल शब्दों में वैश्वीकरण का अर्थ है राष्ट्रीय सीमाओं के पार वस्तुओं, सेवाओं, लोगों, पूंजी और संस्कृतियों का मुक्त प्रवाह इसने वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक संचार का निर्माण किया है। वैश्वीकारण एक कदम है।

विश्व को एक राष्ट्र बनाने तथा विश्व को मज़बूत बनाने के लिए वैश्वीकरण के लिए ज़िम्मेदार कारक—

(1) वैश्वीकरण विश्व की बदलती परिस्थितियों और राष्ट्रों की आर्थिक परस्पर निर्भरता के कारण है।

(2) वैश्वीकरण ने विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा पर निर्भरता को कम करने के लिए भी प्रोत्साहित किया है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(3) अधिक आर्थिक विकास और जनसंख्या के बड़े हिस्से के कल्याण के लिए वैश्वीकरण आवश्यक है।

आर्थिक वैश्वीकरण अपरिहार्य है और विकास की गति का विरोध करना बुद्धिमानी नहीं है।

29. 14-15 अगस्त 1947 को एक नहीं बल्कि दो राष्ट्र स्वतंत्रता के बाद भारत को तीन मुख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

1. **सबसे पहले—**सबसे महत्वपूर्ण चुनौती एक ऐसे राष्ट्र को आकार देना था जो एकजुट हो और साथ ही हमारे समाज में विविधता को भी समायोजित कर सके। भारत में अलग-अलग भाषाएँ, अलग-अलग धर्म, अलग-अलग संस्कृतियाँ और अलग-अलग रीति-रिवाज़ वाले लोग रहते हैं एक बड़ा सवाल था। क्या भारत एक एकीकृत देश के रूप में जीवित रह पाएगा ?
2. **दूसरी चुनौती—**लोकतंत्र की स्थापना करना था। नए संविधान के तहत भारत में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की शुरुआत की गई। संविधान ने नागरिकों को मौलिक अधिकारों की गारंटी दी। भारत ने संसदीय सरकार पर आधारित प्रतिनिधित्व लोकतंत्र को अपनाया हालाँकि, चुनौती संविधान के अनुसार लोकतांत्रिक परंपराओं को विकसित करना था।
3. **तीसरी चुनौती—**सम्पूर्ण समाज का विकास और कल्याण था न कि विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग का समाज के विभिन्न वर्गों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराए गए है। संविधान में समानता के सिद्धांत पर जोर दिया गया है और अनुसूचित जातियों और अनूसूचित जनजातियों को विशेष सुरक्षा प्रदान की गई है। असल चुनौती गरीबी और बेरोज़गारी को दूर करना था। आर्थिक विकास एक और चुनौती थी।

अथवा

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इसलिए भारत के चुनाव आयोग द्वारा नियमित रूप से चुनाव करवाए जाते हैं। समय के साथ चुनाव की मतदान पद्धति में भी बदलाव होता रहा है।

2019 के आम चुनावों में मतदाताओं की पसंद दर्ज करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) का इस्तेमाल किया गया था जबकि पहले आम चुनाव में प्रत्येक मतदान केंद्र में प्रत्येक उम्मीदवार के लिए उस उम्मीदवार के चुनाव चिह्न के साथ एक बॉक्स रखा गया था। प्रत्येक मतदाता को एक खाली मतपत्र दिया गया था जिसे उन्हें उस उम्मीदवार की भूमिका के बॉक्स में डालना था जिसे वे वोट देना चाहते थे।

लेकिन यह बहुत समय लेने वाली और महंगी विधि थी। बूथ कैप्चरिंग बैलेट पेपर प्रणाली का एक और दोष था। इसलिए भारत सरकार और भारत के चुनाव आयोग ने 2004, 14, 2019 और 2024 के लोकसभा चुनावों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में ईवीएम के साथ जाने का फैसला किया। पूरा चुनाव ईवीएम और वी०वी०पैट (वोटर वेरिफिएबल पेपर ऑडिट (ट्रायल) के साथ हुआ।

30. 1979 से 1985 तक चला असम आंदोलन 'बाहरी लोगों' के खिलाफ आंदोलन का सबसे अच्छा उदाहरण है। इस आंदोलन के कुछ कारण इस प्रकार हैं—

(1) वे बंगालिया और अन्य बाहरी लोगों के सांस्कृतिक वर्चस्व के खिलाफ हैं।

(2) वे त्रुटिपूर्ण मतदाता रजिस्टरों के खिलाफ है जिनमें लाखों अप्रवासियों के नाम शामिल है।

(3) आंदोलन में विभिन्न तरीके अपनाए गए और असमिया जनता के सभी वर्गों को संगठित किया गया।

(4) 6 वर्षों की उथल-पुथल के बाद राजीव गांधी के नेतृत्व वाली सरकार ने 1985 में AASU नेताओं के साथ बातचीत की।

(5) इसके बाद, आसू ने खुद को मूल राजनीतिक दल के रूप में संगठित किया और उनकी समस्याओं को हल करने और 'स्वर्णिम असम' बनाने के वादे के साथ सत्ता में आया।

(6) उन्हें नौकरी छूटने और गरीबी फैलने का डर है।

अथवा

कड़ी प्रतिस्पर्धा और अनेक संघर्षों के बीच निम्नलिखित मुद्दों पर आम सहमति बनी है।

1. **संवैधानिक व्यवस्था में पूर्ण आस्था—**सभी राजनीतिक दलों को भारत की संवैधानिक व्यवस्था में पूर्ण आस्था है राजनीतिक दलों के पंजीकरण के लिए यह आवश्यक है कि दल को भारत के संविधान में सच्ची आस्था और निष्ठा हो।
2. **लोकतंत्र और धर्मनिपेक्षता में आस्था—**सभी राजनीतिक दलों का लोकतांत्रिक मूल्यों में पूरा विश्वास है। राजनीतिक दल राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने में रुचि रखते हैं लेकिन लोकतांत्रिक तरीके से। श्रीमती इंदिरा गांधी ने 25 जून, 1975 को आपातकाल लगाया, लेकिन अंतत: उन्होंने स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से चुनाव कराए। कांग्रेस पार्टी चुनाव में हार गई क्योंकि वे लोगों के अधिकारों और स्वतंत्रता पर आपातकालीन प्रतिबंधों के लिए ज़िम्मेदार थे।
3. **गुटनिरपेक्षता की नीति—**गैर-कांग्रेसी सरकारों की नीति पर आम सहमति है क्योंकि केंद्र ने भी गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया था।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–6

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (ख) अपने सदस्यों द्वारा अनुपालन की जाने वाली रक्षा नीति बनाना।
2. (ख) विश्व बैंक।
3. (ग) भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ दो लड़ाइयाँ जीती हैं।
4. (ग) शक्ति संतुलन।
5. (घ) 181.
6. (ग) यह हथियारों के अधिग्रहण या विकास को नियंत्रित करता है।
7. (ख) न्यूयॉर्क।
8. (घ) 1992.
9. (ग) केवल *i*, *ii* और *iii*.
10. (ग) अभिकथन (A) गलत है परन्तु कारण (R) सही है।
11. (क) कथन (*i*) और (*ii*) कथन दोनों सत्य है।
12. (क) (*iii*), (B) (*iv*), (C) (*ii*), (D) (*i*).

खंड—ख

13. (1) फ्रांस (2) जर्मनी (3) इटली (4) डेनमार्क।
14. (1) अंतर्राष्ट्रीय संगठन विश्व में युद्धों को रोकने और कानून एवं व्यवस्था स्थापित करने में सहायक होते हैं।
    (2) अंतर्राष्ट्रीय संगठन उन समस्याओं को सुलझाने में सहायक है जो किसी राष्ट्र द्वारा हल नहीं की जा सकी।
15. (1) पृथ्वी का वायुमंडल (2) अंटार्कटिका
    (3) महासागर (4) बाहरी स्थान।
16. (1) जनसंघ ने एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र के विचार पर ज़ोर दिया।
    (2) जनसंघ को भारतीय संस्कृति और परंपराओं में पूर्ण आस्था थी। जनसंघ धार्मिक और सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को रियायतें देने का विरोधी था।
17. भारत की विदेश नीति की मुख्य विशेषता गुटनिरपेक्षता है। गुटनिरपेक्षता का अर्थ है कि भारत किसी भी समूह में शामिल न होकर स्वतंत्र रहेगा। गुटनिरपेक्षता शांति की नीति है जिसका अर्थ यह नहीं है कि अंतर्राष्ट्रीय मामलों में तटस्थता। भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति सकारात्मक है। भारत पूर्वी और पश्चिमी विचारधाराओं के बीच की खाई को पाटना चाहता है।
18. (1) विपक्ष पर भरोसा बढ़ गया था अब उन्हें विश्वास हो गया था कि वे भी सरकार बनाने में सक्षम हैं।
    (2) स्वतंत्रता और अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करने वाले कई संगठनों की उत्पत्ति।

खंड—ग

19. मेगा बाधों के निर्माण के दो प्रतिकूल प्रभाव निम्नलिखित हैं—
    (*i*) बड़े बांधों से कई मछलियों और वैकल्पिक जलीय प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है।
    (*ii*) बड़े बांधों के निर्माण के कारण वनों की भारी क्षति, बाढ़ के मैदानों में पक्षियों का लुप्त होना, डेल्टा, आर्द्रभूमि और कृषि भूमि का क्षरण तथा कई अन्य अपरिवर्तनीय प्रभाव।

    अथवा

    (1) वैश्वीकरण ने भारत में आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया है जिससे बेरोज़गारी बढ़ी है।
    (2) आलोचकों ने वकालत की कि यह नीति लागू करने योग्य है लेकिन स्वीकार्य नहीं है। इससे सर्वजन हिताय जैसा उद्देश्य दृश्य से बाहर हो गया है।
    (3) यह एक अलोकतांत्रिक प्रक्रिया है जिसने श्रम को सीमित करके कल्याणकारी राज्य की भूमिका को सीमित करके लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमज़ोर कर दिया है।
    (4) सरकार द्वारा सब्सिडी आदि में कटौती ने अप्रत्यक्ष रूप से गरीब वर्ग पर प्रभाव डाला है।
20. स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रमंडल का गठन 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद किया गया था। यह यूरेशिया में सोवियत गणराज्य के बाद के नौ सदस्यों और दो संस्थापक ग़ैर-सदस्यों का एक क्षेत्रीय अंतरसरकारी संगठन है। इसके सदस्य देश आर्मेनिया, अजरबैजान, बेलारूस, जॉर्जिया, कजाकिस्स्तान, किर्गिस्तान,

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

मोल्दोवा, रूस, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, यूक्रेन और उज्बेकिस्तान है। इसका क्षेत्रफल 20,368,759 किमी है और इसकी अनुमानित जनसंख्या 239,796.010 है। स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रमंडल (सीआईएस) नौ सदस्यों (मूल रूप से दस) राज्यों और दो सहयोगी सदस्य राज्यों का एक ढीला संघ है। यह एक क्षेत्रीय अंतरसरकारी संगठन है जो पूर्व सोवियत गणराज्यों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, पर्यावरण, मानवीय संस्कृतिक और अन्य मुद्दों पर सहयोग पर केंद्रित है।

अथवा

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत-चीन संबंधों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए—

(1) दोनों देशों ने न केवल राजनीति में बल्कि आर्थिक क्षेत्र में भी अपने संबंध बेहतर किये हैं। उनके संबंधों का अब रणनीतिक और आर्थिक आयाम भी हो गया। भारत के और चीन ने विश्व व्यापार संगठन जैसी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्था को अपनाया है।

(2) दोनों सरकारें संघर्षों को रोकने और सीमाओं पर शांति बनाए रखने पर सहमत हुई हैं।

(3) चीन और भारत ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग पर भी समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं उन्होंने व्यापार के लिए पारस्परिक रूप से चार सीमा चौकियाँ खोलीं।

(4) 1999 से भारत-चीन व्यापार प्रति वर्ष 30% बढ़ रहा है।

21. 1967 के आम चुनाव को कांग्रेस के लिए राजनीतिक भूकंप कहा गया।

(1) चौथे आम चुनाव में करिश्माई नेता के अभाव के कारण कांग्रेस पार्टी कई राज्यों में हार गयी। कांग्रेस ने सात राज्यों में बहुमत खो दिया।

(2) कांग्रेस पार्टी के भीतर गुटबाजी और इसकी हार के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार थी।

(3) 1967 के चुनाव के साथ गठबंधन सरकार की घटना शुरू हुई । कई राज्यों में संयुक्त मोर्चा का गठन किया गया।

(4) चौथे आम चुनाव के बाद कांग्रेस पार्टी के भीतर सिंडिकेट का महत्व बढ़ गया। सिंडिकेट नेताओं का एक समूह था जो कांग्रेस पार्टी को नियंत्रित करता था।

22. 15 अगस्त, 1947 को सर्वोच्चता की समाप्ति के साथ भारतीय रियासतों को अपने भाग्य का फैसला खुद करने के लिए छोड़ दिया गया। वे चाहें तो किसी भी डोमिनियन (भारत या पाकिस्तान) में शामिल हो सकते थे या स्वतंत्र रह सकते थे। इस तथ्य को देखते हुए कि 565 राज्यों में से 10 को छोड़कर बाकी सभी उस क्षेत्र में थे जो अंतत: उससे अधिकार क्षेत्र में आता था, भारत के सामने एक कठिन चुनौती थी। इन राज्यों को ब्रिटिश सरकार ने भारत के बाकी हिस्सों में फैल रही राजनीतिक अशांति के खिलाफ सुरक्षा कवच के रूप में काम करने के लिए तैयार किया था। वे प्रतिक्रिया के गढ़ बन गए थे। निरंकुश शासन की उनकी परंपराओं ने स्वतंत्रता के लिए किसी भी आंदोलन को सिर उठाने की भी अनुमति नहीं दी। राष्ट्र निर्माण और देश एकता के लिए इन रियासतों को भारतीय संघ में शामिल करना आवश्यक था।

सरकार के विचार तीन बिंदुओं पर आधारित थे। सबसे पहले तो अधिकांश रियासतों के लोग भारत में विलय चाहते थे दूसरे सरकार का रुख बहुत लचीला था और तीसरे विभाजन की पृष्ठभूमि में भूमि के सीमांकन को लेकर विवाद सामने आया। जो भारतीय राष्ट्रीय एकता के पक्ष में नहीं था।

लेकिन, एक राजनेता के रूप में अपने श्रेय के लिए, राज्य मंत्रालय के निर्देशन प्रतिभावान सरदार वल्लभभाई पटेल ने एक साल के भीतर उनकी समस्या का समाधान कर दिया। इसके अलावा, कश्मीर और हैदराबाद के अपवादों को छोड़कर किसी की जान नहीं गई। सरदार पटेल एक मज़बूत और एकजुट भारत बनाने के लिए दृढ़ थे इसलिए उन्होंने राज्यों को शेष भारत के साथ जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया। उन्होंने शासकों को मनाया, उन्हें बहलाया और अनिच्छुक लोगों को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी भी दी। लार्ड माउंटबेटन ने भी इस कठिन कार्य में उनकी मदद की।

सबसे पहले सरदार पटेल ने राजाओं से सहयोग की अपील की। उनसे देशभक्त की तरह व्यवहार करने की अपील की और उन्हें चेतावनी दी कि यह विकल्प उनके हित में नहीं होगा। उन्होंने राजाओं को उदार प्रिवी पर्स और पूर्ण स्वामित्व का आश्वासन दिया। सरदार पटेल ने अपने नागरिकों को भारत के नागरिकों के समान अधिकार, स्वतंत्रता और विशेषाधिकार की गारंटी भी दी। प्रतिक्रिया बहुत अच्छी थी। एक के बाद एक राजकुमारों ने विलय के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किया। 15 अगस्त, 1947 तक इसकी भौगोलिक सीमा के भीतर तीन राज्यों को छोड़कर सभी भारतीय प्रभुत्व में शामिल हो गए थे। जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर अपवाद थे।

23. हमारे देश में लोकतांत्रिक राजनीति के पहले चरण में विपक्षी दलों की भूमिका काफ़ी अनोखी थी। तब भी भारत में कई अन्य बहुदलीय लोकतंत्रों की तुलना में बड़ी संख्या में विविध और जीवंत विपक्षी दल थे।

आज़ादी के बाद भारतीय राजनीति में कांग्रेस पार्टी का दबदबा रहा। पहले तीन चुनावों में कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा में दो तिहाई से ज़्यादा सीटें हासिल कीं। फिर भी लोकसभा में कई विपक्षी दल उभरें। हालाँकि लोकसभा में कोई आधिकारिक और मान्यता प्राप्त विपक्ष नहीं था। फिर भी कई छोटे-छोटे विपक्षी दल थे जिन्होंने व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र की अहम् भूमिका निभाई। आज की लगभग सभी ग़ैर-कांग्रेसी पार्टियों की जड़ें 1950 के दशक की किसी-न-किसी विपक्षी दल पार्टी में देखी जा सकती है। यद्यपि विपक्षी दलों का लोकसभा में नाममात्र का प्रतिनिधित्व था फिर भी विपक्षी नेता अपनी स्थिति और व्यक्तित्व के कारण बहुत प्रभावी थे। विपक्षी दलों ने कांग्रेज पार्टी की नीतियों की आलोचना की और सत्तारूढ़ दल को नियंत्रण में रखा। विपक्षी दल स्वस्थ और सकारात्मक आलोचना में विश्वास करते हैं। इस प्रकार, विपक्षी दलों ने व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

खंड—घ

24. (A) (क) योजना आयोग।
(B) (ग) पंचवर्षीय योजना।
(C) (घ) 1991.
(D) (क) 2015.

25.

प्रयुक्त जानकारी के लिए क्रमांक	वर्णमाला चिंतित	राज्यों के नाम
(*i*)	(C)	पंजाब
(*ii*)	(D)	कर्नाटक
(*iii*)	(A)	बिहार
(*iv*)	(B)	तमिलनाडु

26. (*i*) (*a*) अटल बिहारी वाजपेयी
(*b*) चौ. चरण सिंह
(*ii*) मीसा आपातकाल के दौरान लागू आंतरिक सुरक्षा अधिनियम का रखरखाव।
(*iii*) (*a*) आपातकाल के दौरान अधिकता।
(*b*) मीसा जैसे काले कानून लागू करना।

खंड—ङ

27. दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान) की स्थापना 8 अगस्त 1967 को बैंकॉक में हुई थी। बैंकॉक (थाइलैंड) घोषणापत्र पर इस क्षेत्र के पांच मूल सदस्य देशों : इंडोनेशिया, मलेशिया, फलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड ने हस्ताक्षर किए थे ब्रुनेई दारूस्सलाम 8 जनवरी 1984 को संघ में शामिल हुआ। 28 जुलाई 1995 को वियतनाम आसियान का सातवाँ सदस्य बना। लाओस और म्यांमार को 20 जुलाई 1997 को आसियान में शामिल किया गया।

30 अप्रैल 1999 को कम्बोडिया आसियान में शामिल हुआ। आसियान के उद्देश्य इस प्रकार है—

(1) सदस्य देशों के आर्थिक विकास में तेज़ी लाना।
(2) सहकारी कार्यक्रमों के माध्यम से क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देना।
(3) बड़ी शक्तियों के बीच प्रतिद्वंदिता के विरुद्ध क्षेत्र की राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता की रक्षा करना।
(4) दक्षिण एशिया के देशों के बीच सामूहिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना और मज़बूत करना।
(5) अन्य विकासशील देशों के साथ सहयोग को मज़बूत करना।

आसियान की गतिविधियां और उपलब्धियां

आसियान की स्थापना 1967 में दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र के एक आर्थिक संघ के रूप में की गई थी और आज भी यह एक आर्थिक संघ है। आसियान शिखर सम्मेलन नियमित रूप से आयोजित नहीं किए जाते थे। लेकिन सदस्य देशों के मंत्रियों की बैठकें सालाना होती हैं। आसियान एक सैन्य गठबंधन नहीं है। 1977 में आयोजित दूसरे शिखर सम्मेलन के अंत में जारी विज्ञप्ति में घोषणा की गई थी। आसियान न तो एक सैन्य गुट है और न ही भविष्य में ऐसा बनने की इसकी कोई इच्छा है। दूसरे शिखर सम्मेलन में नेताओं ने क्षेत्र के सभी देशों के साथ शांतिपूर्ण और परस्पर लाभकारी संबंध रखने की इच्छा पर ज़ोर दिया। उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर ज़ोर दिया कि वे भारत चीन संघर्ष में किसी का पक्ष नहीं लेना चाहते हैं।

आसियान में दुनिया की लगभग 8% आबादी शामिल है और 2003 में इसका संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद लगभग 8,700 बिलियन डॉलर था। 2003 तक आसियान ने कई समझौते किए और इन समझौतों के तहत सदस्य देशों ने शांति, तटस्थता, सहयोग, गैर-हस्तक्षेप और संप्रभु अधिकारों के सम्मान को बनाए रखने का वादा किया।

आसियान ने निवेश, श्रम और सेवा के लिए एक मुक्त व्यापार क्षेत्र (F.T.A.) बनाने पर ध्यान केंद्रित किया है। अमेरिका और चीन पहले ही आसियान के साथ F.T.A. पर बातचीत करने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ चुके हैं। भारत और चीन के आसियान में संवाद साझेदार के रूप में शामिल होने के बाद, आसियान ने विश्व के आर्थिक और राजनीतिक शक्ति केंद्रों को सफलतापूर्वक चुनौती दी।

20 दिसंबर 2012 को भारत और 10 एशियाई देशों ने विवादित समुद्री सुरक्षा और नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए द्विपक्षीय सहयोग को मज़बूत करने का संकल्प लिया भारत और आसियान ने सेवाओं और निवेश में मुक्त व्यापार समझौते को भी अंतिम रूप दिया।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

वर्तमान में आसियान सदस्य देशों के बीच विकास के लिए क्षेत्रीय सहयोग की एक महत्वपूर्ण और उपयोगी एजेंसी के रूप में विकसित हो रहा है।

अथवा

ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ—ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है पृथ्वी के वायुमंडल के तापमान में वृद्धि, जो पिछले 50 वर्षों में कुछ गैसों की वृद्धि के कारण हुई है। औसत वैश्विक तापमान रिकॉर्ड किए गए इतिहास में सबसे तेज़ दर से बढ़ा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह तेज़ हो रही है। नासा के 134 साल के रिकॉर्ड में 16 सबसे गर्म वर्षों में से एक को छोड़कर सभी वर्ष 2000 के बाद से हुए हैं।

जलवायु परिवर्तन पर आईपीसीसी—अंतर्राष्ट्रीय पैनल ने निष्कर्ष निकाला है कि ''जलवायु पर मानवीय प्रभाव 20वीं सदी के मध्य से देखी गई गर्मी का प्रमुख कारण रहा है। सबसे बड़ा मानवीय प्रभाव ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन रहा है जिसमें 90% से अधिक प्रभाव कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन का है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड आदि की मात्रा में वृद्धि।
(2) वाहन, हवाई जहाज़ और उद्योग से निकलने वाली प्रदूषित गैसें।
(3) विकास के लिए पड़े पैमाने पर वनों की कटाई।
(4) ए० सी० और फ्रिज का बड़ा पैमाने पर उपयोग।
(5) शहरीकरण ग्लोबल वार्मिंग का एक अन्य कारण है।

28. बांग्लादेश पाकिस्तान का एक हिस्सा था और इसे पूर्वी पाकिस्तान (1947 से 1971) के रूप में जाना जाता था। पाकिस्तान के नियमों के अनुसार पूर्वी बंगाल के साथ उचित व्यवहार नहीं किया गया और इसे वस्तुत: एक उपनिवेश बना दिया गया। इस क्षेत्र के लोग पश्चिमी पाकिस्तान के पतन और उर्दू भाषा को थोपने से नाराज़ थे। 1971 की शुरुआत में पाकिस्तान में हुए चुनाव में शेख मुजीब की अवामी लीग को पाकिस्तान संसद में बहुमत मिला। लेकिन शेख मुजीव को सरकार बनाने के लिए नहीं बुलाया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पूर्वी बंगाल ने स्वतंत्रता की घोषणा और पाकिस्तान के बीच युद्ध और युद्ध में पाकिस्तान की हार हुई। भारत मान्यता देने बांग्लादेश जनवादी गणराज्य के रूप में, बांग्लादेश ने अपना संविधान तैयार किया तथा लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद में पूर्ण आस्था व्यक्त की। शेख मुजीब बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति थे। 1975 में बांग्लादेश के संविधान में संशोधन किया गया और संसदीय सरकार के स्थान पर राष्ट्रपति शासन प्रणाली को अपनाया गया। शेख मुजीब ने अपनी पार्टी यानी अवामी लीग को छोड़कर सभी पार्टियों को समाप्त कर दिया। अगस्त 1975 में एक सैन्य विद्रोह में उनकी हत्या कर दी गई। सैन्य शासक जिया रहमान ने अपनी पार्टी बनाई और 1979 में चुनाव जीते। उनकी हत्या कर दी गई और लेफ्टिनेंट जनरल एच० एम० इरशाद बांग्लादेश के शासक बने। बाद में उन्हें बांग्लादेश का राष्ट्रपति चुना गया। राष्ट्रपति इरशाद ने 1990 में इस्तीफा दे दिया।

अथवा

भारत की सुरक्षा रणनीति की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं—

1. **सैन्य शक्ति और क्षमताओं को मज़बूत करना**—स्वतंत्रता के समय भारत को पड़ोसी राज्यों के साथ-साथ सांप्रदायिक हिंसा के कारण अपनी सुरक्षा के लिए खतरों का सामना करना पड़ा। भारत को अपनी सैन्य शक्ति और अपनी क्षमताओं का निर्माण करना होगा। भारत ने अपनी सुरक्षा को सुरक्षित रखने के लिए परमाणु परीक्षण करने की नीति अपनाई। भारत ने 1974 और 1998 में सफलतापूर्वक परमाणु परीक्षण किए।
2. **अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों और कानूनों को मज़बूत करना**—भारत ने अपने सुरक्षा हितों की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडो, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों आदि को मज़बूत किया है। भारत को संयुक्त राष्ट्र में पूर्ण विश्वास है और उसने हमेशा संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों का समर्थन किया है। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अतत: एशियाई एकजुटता उपनिवेशवाद निरस्त्रीकरण आदि के कारण का समर्थन किया। अधिक प्रभावी होने के लिए भारतीय नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र की संरचना और कार्यप्रणाली में कई सुधारों का सुझाव दिया है। भारत ने एक न्यायसंगत नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के लिए तर्क दिया : किसी भी ब्लॉक में शामिल होने के बजाय, भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन करना पसंद किया। भारत उन 160 देशों में शामिल हुआ जिन्होंने 1997 के क्योंटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर और पुष्टि की है। भारतीय सैनिकों को संयुक्त राष्ट्र के शांति रक्षा मिशन पर अन्य देशों में भेजा गया है।
3. **आंतरिक खतरों से निपटने की नीति**—भारत ने मिजोरम, नागालैंड, पंजाब, जम्मू और कश्मीर के आतंकवादी समूहों अलगाववादियों आदि से निपटने के लिए दृढ़ नीति अपनाई। अलगाववादियों ने भारत से अलग होने की कोशिश की है। उन्होंने देश की एकता और अखंडता को खतरा बताया। भारत सरकार ने अलगाववादियों से निपटने के लिए लोकतांत्रिक तरीका अपनाया, लेकिन उन्हें दृढ़ता से बताया कि देश की एकता और सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

29. केंद्र में योजना आयोग देश की योजना बनाने वाली सर्वोच्च संस्था है। योजना आयोग की स्थापना मार्च 1950 में भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा नेहरू जी की अध्यक्षता में योजना आयोग की स्थापना की गई है।

योजना आयोग का संगठन—योजना आयोग की संरचना समय की आवश्यकताओं और सरकार की इच्छा के अनुसार बदलती रही है। पहले योजना आयोग में एक अध्यक्ष एक उपाध्यक्ष और पाँच सदस्य होते थे। प्रधानमंत्री अध्यक्ष होते हैं

और योजना राज्यमंत्री उपाध्यक्ष होते हैं। पहले सावधानीपूर्वक रचना की गई थी बाद में पंडित नेहरू ने प्रशासकों, अर्थशास्त्रियों और तकनीकी विशेषज्ञों जैसे जनता के कुछ सदस्यों को इसमें शामिल किया। इस प्रकार योजना आयोग में राजनीतिक और ग़ैर-राजनीतिक लोगों का एक साथ समावेश हो गया। अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के अलावा, इसमें दस से बारह अन्य सदस्य होते हैं, इनमें पाँच से छह मंत्री होते हैं। जैसे मानव संसाधन विकास मंत्री, वित्त मंत्री, गृह मंत्री, कृषि मंत्री और योजना राज्य मंत्री। इसके अलावा, कुछ और सदस्य होते हैं।

आयोग तीन प्रमुख भागों में विभाजित है—

(1) कार्यक्रम सलाहकार

(2) महासचिव और तकनीकी प्रभाग।

योजना आयोग के कार्य—योजना आयोग के गठन हेतु पारित प्रस्ताव में योजना आयोग के निम्नलिखित कार्यों का उल्लेख किया गया था—

(1) देश के संसाधनों का मूल्यांकन—देश के भौतिक पूंजीगत और मानव संसाधनों का मूल्यांकन करना, जिसमें तकनीकी कार्मिक भी शामिल है तथा उन संसाधनों को बढ़ाने की संभावनाओं की जांच करना, जो राष्ट्र की आवश्यकताओं के संबंध में अपर्याप्त पाए जाते हैं।

(2) योजना का निर्माण—देश के संसाधनों के सर्वाधिक प्रभावी और संतुलित उपयोग के लिए योजना तैयार करना।

(3) प्राथमिकताएँ निर्धारित करना—योजना के चरणों को परिभाषित करना तथा प्राथमिकताओं के निर्धारण पर संसाधनों के आवंटन का प्रस्ताव करना। नौवीं योजना में बिजली क्षेत्र, परिवहन और संचार को प्राथमिकता दी गई है।

(4) उन कारकों को इंगित करना जो आर्थिक विकास को धीमा कर रहे हैं और उन स्थितियों को निर्धारित करना जो वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को देखते हुए योजना के सफल निष्पादन के लिए स्थापित की जानी चाहिए।

(5) योजना के प्रत्येक चरण के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए तंत्र का सुझाव देना।

(6) योजना के प्रत्येक चरण के क्रियान्वयन में हुई प्रगति का समय-समय पर मूल्यांकन करना तथा ऐसे मूल्यांकन के आलोक में नीति और उपायों में आवश्यक समायोजन की सिफारिश करना।

(7) प्रचलित आर्थिक स्थितियों, वर्तमान नीतियों आदि के आधार पर ऐसी अंतरिम सिफारिशें करना, जो उचित प्रतीत हों।

(8) ऐसी विशिष्ट समस्याओं की जाँच करना जो केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा सलाह के लिए उसे भेजी जाएं।

उपयुक्त कार्यों के अलावा, योजना आयोग का एक और सबसे महत्वपूर्ण कार्य विकास के लिए योजनाएं बनाना और उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन करना है। मूल रूप से, योजना आयोग की स्थापना केवल एक विशेषज्ञ सलाहकार निकाय के रूप में की गई थी लेकिन समय बीतने के साथ योजना आयोग ने अपने लिए उच्च प्रतिष्ठा और प्रभावशाली प्रभाव का दर्ज बना लिया है। योजना आयोग की शक्तियों में भारी वृद्धि को देखते हुए इसे आर्थिक मंत्रिमंडल के रूप में जाना जाता है।

जनवरी 2015 में योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग की स्थापना की गई।

अथवा

1962 के भारत चीन युद्ध के लिए निम्नलिखित कारण ज़िम्मेदार थे।

भारत चीन युद्ध के लिए ज़िम्मेदार महत्वपूर्ण कारकों में से एक तिब्बत की समस्या थी। मानचित्र की समस्या भारत-चीन युद्ध का एक अन्य कारण थी।

भारती-चीन युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण कारण सीमा मुद्दा था। इस युद्ध ने भारत की स्थिति को किस प्रकार खराब किया।

(1) भारत को संकट से निपटने के लिए सैन्य सहायता के लिए अमेरिका और ब्रिटेन से संपर्क करना पड़ा।

(2) नेहरू सरकार के विरुद्ध लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पेश किया गया।

(3) नेहरू की छवि को ठेस पहुंची क्योंकि चीनी इरादों के बारे में उनके भोलेपन से आकलन और पहले से सैन्य तैयारी न करने के लिए उनकी कड़ी आलोचना की गई।

(4) रक्षा मंत्री श्री वी०के० मेनन को मंत्रिमंडल छोड़ना पड़ा।

30. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में नेताओं का एक समूह जिसे 'सिंडिकेट' के नाम से जाना जाता था। यह सिंडिकेट कांग्रेस पार्टी के संगठन को नियंत्रित करता था। इस समूह का नेतृत्व तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री और उस समय कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष के कामराज कर रहे थे। सिंडिकेट में आंध्र प्रदेश के एन० संजीव रेड्डी, बाम्बे के एस०के० पाटिल, पश्चिम बंगाल के अतुल्य घोष और मैसूर के एस० निगलिंगप्पा जैसे शक्तिशाली राज्य नेता शामिल थे। पं० लाल बहादुर शास्त्री की अचानक मृत्यु के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी को कांग्रेस संसदीय दल का नेता चुना गया और श्री मोरारजी दसाई को चुनाव हारना पड़ा। श्रीमती इंदिरा गांधी कांग्रेस पार्टी की नेता इसलिए बनीं क्योंकि उन्हें सिंडिकेट का पूरा समर्थन प्राप्त था श्रीमती गांधी की पहली मंत्रिपरिषद के गठन में सिंडिकेट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सिंडिकेट के नेताओं को उम्मीद थी कि श्रीमती इंदिरा गांधी उनकी सलाह मानेंगी। लेकिन श्रीमती इंदिरा गांधी ने धीरे-धीरे सरकार और पार्टी में अपनी स्थिति मज़बूत करनी शुरू कर दी। अंतत: उन्होंने सिंडिकेट को दरकिनार कर दिया। सिंडिकेट के सदस्यों ने स्वतंत्र, जनसंघ और एस०एस०पी के साथ गठबंधन करना शुरू कर दिया जो बाद में महागठबन्धन के रूप में सामने आया। कांग्रेस संसदीय बोर्ड में श्रीमती इंदिरा गांधी ने राष्ट्रपति पद के लिए चौधरी जगजीवन राम का नाम

© HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

प्रस्तावित किया, जिसका सिंडिकेट समूह ने विरोध किया, इसके बजाय श्री मोरारजी देसाई ने आधिकारिक कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में संजीव रेड्डी के नाम का प्रस्ताव रखा। कांग्रेस के आधिकारिक उन्मीदवार श्री वी०वी० गिरि के विरोध में, एक स्वतंत्र उम्मीदवार को भारत के राष्ट्रपति के रूप में चुना गया, क्योंकि उन्हें कांग्रेस के समर्थन की वजह से राष्ट्रपति पद के लिए चुना गया था। श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार के खिलाफ विद्रोह के परिणामस्वरूप कांग्रेस पार्टी में विभाजन हो गया।

अथवा

नक्सलवाद शब्द की उत्पत्ति पश्चिम बंगाल के नक्सलवाडी गाँव से हुई। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता चारू माजूमदार और कानू सान्याल ने 1967 में सत्ता के खिलाफ एक मशस्त्र आंदोलन शुरू किया। माजूमदार चीन के कम्यूनिस्ट नेता माओत्से तंग के बड़े प्रशसंक थे। इसी कारण नक्सलवाद को माओवाद भी कहा जाता है।

नक्सलवाद, नक्सलवादियों (या नक्सलियों) की साम्यवादी विचारधारा है, जो भारत के राजनीतिक और विद्रोही समूहों का एक समूह है। यह माओवादी राजनीतिक भावना और विचारधारा से प्रभावित है। माओवादियों द्वारा इस्तेमान किया जाने वाला बैनर, जिसमें हथोड़ा और परांती बनी हुई है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–7

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (घ) शॉक थेरेपी।
2. (ग) इज़राइल।
3. (ग) लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम को सार्क देशों का समर्थन प्राप्त था।
4. (घ) उपरोक्त सभी।
5. (ग) इस्लामाबाद में सातवें सार्क शिखर सम्मेलन में साफ्टां पर हस्ताक्षर किये गये।
6. (घ) नेपाल सदैव भारत की नीतियों का पालन करता है।
7. (ख) क्रूर हिंसा का उपयोग करके समाज में भय का माहौल पैदा करना।
8. (क) एक वर्ष।
9. (ग) (*i*), (*iii*) और (*iv*).
10. (ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
11. (क) कथन I और कथन II दोनों सत्य है।
12. (A) – (*iii*), (B) – (*i*), (C) – (*ii*), (D) – (*iv*).

खंड—ख

13. (*i*) सोवियत व्यवस्था साम्यवादी सिद्धांत पर आधारित थी।
    (*ii*) सोवियत शासन प्रणाली संघवाद पर आधारित थी।
14. (1) भूटान सरकार द्वारा देश में सक्रिय उत्तर पूर्वी भारत के गुरिल्लाओं और उग्रवादियों को बाहर निकालने के लिए किए गए प्रयास सराहनीय रहे हैं।
    (2) भारत-भूटान में जलविद्युत परियोजनाओं के माध्यम से भूटान की मदद कर रहा है और हिमालयी देश बना हुआ है। यह राज्य के विकास सहायता का सबसे बड़ा स्रोत है।
15. (1) वैश्वीकरण ने कुछ गतिविधियों को विनियमित करने की शक्ति सरकार से अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को स्थानांतरित कर दी है।
    (2) विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने सभी देशों के लिए नियम और कानून बनाए हैं। इसलिएस वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप अब बाज़ार किसी राज्य की सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताओं को निर्धारित करता है।
16. (1) राष्ट्रीय आंदोलन के नेता धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के आदर्श को मानते थे क्योंकि उनका मानना था कि भारत को सभी धर्मों के लोगों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए और किसी भी धर्म को अन्य धर्मों से श्रेष्ठ नहीं माना जाना चाहिए।
    (2) विभाजन के बाद भी 12% मुस्लिम भारत में शेष बचे।
17. (1) यह सरकार के लिए एक दिशात्मक और नीतिगत तंत्र ''थिंक टैंक'' के रूप में कार्य करता है और निजी क्षेत्र सहित अर्थव्यवस्था के लिए सुझाव प्रदान करता है।
    (2) यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों और अन्य भागीदारों के लिए ज्ञान नवाचार और उद्यमशीलता सहायता प्रणाली बनाता है।
18. दलबदल का अर्थ है अपनी पार्टी या नेता को छोड़ना, जिसके प्रतीक या नेतृत्व में किसी को विधायिका में जगह मिली है। सिद्धांत के आधार पर या पार्टी में विभाजन के कारण नहीं, बल्कि व्यक्तिगत शक्ति या व्यक्तिगत मोहभंग या घृणा की तलाश में।

खंड—ग

19. सुरक्षा परिषद के नए स्थायी और अस्थायी सदस्यों के लिए हाल के वर्षों में प्रस्तावित किन्हीं चार मानदंडों का वर्णन करें।

    संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के नए स्थायी और अस्थायी सदस्यों के लिए निम्नलिखित चार मानदंड प्रस्तावित किए गए हैं—
    (1) एक प्रमुख सैन्य शक्ति।
    (2) एक बड़ी आर्थिक शक्ति।
    (3) संयुक्त राष्ट्र के बजट में एक प्रमुख योगदानकर्ता।
    (4) बड़ी जनसंख्या की दृष्टि से एक बड़ा राष्ट्र।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(5) एक लोकतांत्रिक देश जिसमें बहुत सम्मान हो लोकतंत्र और मानवाधिकार।

अथवा

(1) भारत ने अपनी सैन्य शक्ति और क्षमताओं का निर्माण किया है।
(2) भारत ने अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों आदि को मज़बूत किया है।
(3) भारत ने मिज़ोरम, नागालैंड आदि के उग्रवादी समूहों अलगाववाद आदि से निपटने के लिए दृढ़ नीति अपनाई।
(4) सामाजिक-आर्थिक विकास पर निर्माण भारत की सुरक्षा प्रणाली का एक अन्य घटक है।

20. **1. पृथ्वी का निष्कर्षण—**

(*i*) खनिज उद्योग द्वारा मिट्टी का दोहन, रसायनों का प्रयोग जलमार्गों और भूमि का प्रदूषण, समुदायों का विस्थापन विश्व के विभिन्न भागों में आलोचना और प्रतिरोध को आमंत्रित करता रहा है।

(*ii*) फिलीपींस का एक उदाहरण जहां समूहों और संगठनों का एक विशाल नेटवर्क आास्ट्रेलिया स्थित बहुराष्ट्रीय कंपनी वेस्टर्न माइनिंग कॉरपोरेशन के खिलाफ़ अभियान चलाता है। अपने ही देश में कंपनी का बहुत विरोध होता है। ऑस्ट्रेलिया परमाणु विरोधी भावनाओं और ऑस्ट्रेलियाई स्वदेशी लोगों के मूल अधिकारों की वकालत पर आधारित है।

2. मेगा-बांध—

(*i*) आज, दुनिया में जहाँ भी कोई बड़ा बांध बनाया जा रहा है। वहाँ पर्यावरण आंदोलन उसका विरोधी करते हुए मिल ही जाएगा। 1980 के दशक की शुरुआत में उत्तर में पहला बांध विरोधी आंदोलन शुरू हुआ जिसका नाम था ऑस्ट्रोलिया में फ्रैलकिन नदी और उनके आसपास के जंगल को बचाने का अभियान।

(*ii*) भारत में बांध विरोधी और नदी समर्थक कुछ प्रमुख आंदोलन हुए हैं। 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' एक ऐसा आंदोलन है जो बांध विरोधी और नदी समर्थक आंदोलनों में से एक है। नर्मदा बचाओ आंदोलन एक सबसे प्रसिद्ध आंदोलन है।

अथवा

वैश्वीकरण के युग से पहले, राष्ट्र-राज्य सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान था। हालाँकि वैश्वीकरण राष्ट्र-राज्य से ग्लोबल कॉमन्स में स्थानांतरित हो गया है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप राज्य प्राधिकार का क्षरण हुआ है। दुनियाभर में बहु-कार्यात्मक कंपनियों के प्रवेश और बढ़ती भूमिका के कारण सरकार की स्वयं निर्णय लेने की क्षमता में कमी आई है। दुनिया के लगभग सभी देश आईएमएफ और डब्ल्यूटीओ की सर्वोच्चता में शामिल हो गए हैं या स्वीकार कर चुके हैं और इस प्रकार राज्यों की शक्ति कम हो गई है क्योंकि इन संस्थाओं द्वारा बनाए गए सभी नियम और कानून सदस्य-राज्यों पर बाध्यकारी है।

21. 14-15 अगस्त, 1947 को एक नहीं बल्कि दो राष्ट्र राज्य यानी भारत और पाकिस्तान अस्तित्व में आए लेकिन भारत का विभाजन सरल नहीं था बल्कि यह बहुत जटिल था। भारत के विभाजन की प्रक्रिया में निम्नलिखित मुख्य समस्याएं आईं—

(1) सबसे पहले, ब्रिटिश भारत में मुस्लिम बहुल क्षेत्रों का कोई एक क्षेत्र नहीं था मुसलमान मुख्य रूप से दो क्षेत्रों में केंद्रित थे, यानी एक पश्चिम में और दूसरा पूर्व में।
(2) दूसरे, सभी मुस्लिम बहुल क्षेत्र पाकिस्तान में शामिल होने के इच्छुक नहीं थे उदाहरण के लिए खान अब्दुल गफ्फार खान जिन्हें ''सीमांत गांधी'' के नाम से जाना जाता है और जो उत्तर पश्चिमी प्रांत के निर्विवाद नेता थे। वे दो-राष्ट्र सिद्धांत के सख्त खिलाफ थे। लेकिन उनकी आवाज़ को अनसुना कर दिया गया और NWFP को पाकिस्तान में मिला दिया गया।
(3) तीसरा, दो मुस्लिम बहुल प्रांत, यानि पंजाब और बंगाल में बहुत बड़े क्षेत्र थे जहाँ ग़ैर-मुस्लिम बहुसंख्यक थे इसलिए इन दोनों प्रान्तों का भी विभाजन कर दिया गया।
(4) चौथा, सीमा के दोनों और अल्पसंख्यकों की समस्या थी।

22. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन का औपचारिक उद्घाटन 1985 में हुआ था। दक्षिण एशियाई देशों के आर्थिक विकास के क्षेत्र में सार्क ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सार्क देशों के बीच आर्थिक सहयोग की दिशा में उठाए गए दो कदम साफ्टा है। सार्क देशों के बीच आर्थिक क्षेत्र में सहयोग का बहुत महत्व है।

(1) आर्थिक सहयोग दक्षिण एशिया के लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठाता है।
(2) इससे क्षेत्र में आर्थिक विकास की गति तेज़ होती है।
(3) आर्थिक सहयोग सार्क देशों को करीब लाता है और आपसी विश्वास को मज़बूत करता है।
(4) आर्थिक सहयोग दक्षिण एशिया के देशों के बीच सामूहिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है।
(5) अविश्वास और संघर्ष का क्षेत्र न्यूनतम हो जाता है।
(6) सार्क देशों के बीच आर्थिक सहयोग क्षेत्र में बाहरी ताकतों की भागीदारी को न्यूनतम करता है।
(7) आर्थिक सहयोग से क्षेत्र में जीवन स्तर में सुधार होगा।
(8) आर्थिक सहयोग से अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग बढ़ता है। जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि।

इस प्रकार, सार्क देशों के बीच मुख्य आर्थिक में सहयोग इस क्षेत्र के विकास का एक तरीका है सार्क देशों ने इस तथ्य को मान्यता दी है और सदस्य देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए SAPTA और SAFTA पर हस्ताक्षर किए हैं।

लेकिन राजनीतिक मतभेदों के चलते सार्क बहुत सफल नहीं हो पाया है। इसके अलावा, हमारे कुछ पड़ोसी देशों को डर है कि SAFTA भारत के लिए उनके बाज़ारों पर कब्ज़ा करने और आर्थिक गतिविधियों और व्यापार के जरिए उनके समाज और राजनीति को प्रभावित करने का एक तरीका है हालाँकि, सभी देश SAFTA से लाभ उठाते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

23. शीत युद्ध के बाद निम्नलिखित परिवर्तन हुए जिनके कारण संयुक्त राष्ट्र को बेहतर ढंग से कार्य करने के लिए सुधार की आवश्यकता पड़ी—

(*i*) सोवियत संघ के लुप्त होने के बाद अमेरिका एकमात्र महाशक्ति के रूप में खड़ा है।

(*ii*) 9/11 की आतंकवादी घटना ने संयुक्त राष्ट्र को शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए बेहतर काम करने के लिए मज़बूर किया।

(*iii*) चीन का एक बड़ी शक्ति के रूप में उबरना भी अमेरिकी नीति पर अंकुश था।

(*iv*) संयुक्त राष्ट्र भी विश्वव्यापी समस्याओं जैसे एड्स, आतंकवाद, परमाणु हथियार, पर्यावरण वैश्वीकरण, गृह युद्ध आदि से प्रभावित है।

(*v*) शीत युद्ध की समाप्ति के बाद कई नए स्वतंत्र देश उभरे।

(*vi*) शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत जैसे नए विकासशील राष्ट्र आर्थिक रूप से विकासशील राष्ट्र के रूप में उभरे और पूरी तरह से आर्थिक रूप से संयुक्त राष्ट्र पर निर्भर नहीं रहे।

खंड—घ

24. (क) महासागर तल। (ख) रियो-डी-जेनेरो।

(ग) यूएनईपी

(ख) सामान्य पर्यावरणीय एजेंडा पर आम सहमति का अभाव

25. (1) (B) छत्तीसगढ़, (2) (D) मणिपुर, (3) (A) केरल, (4) (E) त्रिपुरा, (5) (C) पंजाब।

26. (*i*) यह कार्टून चीन का है।

(*ii*) (1) 1978 में डेंग जियाओपिंग ने चीन में 'ओपन डोर' नीति और आर्थिक सुधारों को अपनाया।

(2) चीन ने 1982 में कृषि क्षेत्र में निजीकरण शुरू किया।

(*iii*) (1) उद्योग और कृषि दोनों सहित चीनी अर्थव्यवस्था तेजी दर से बढ़ी।

(2) चीन एशिया में आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरा।

खंड—ङ

27. पूर्व सोवियत गणराज्य में तनाव और संघर्ष के मुद्दे निम्नलिखित हैं—

(1) अधिकांश पूर्व सोवियत गणराज्य संघर्ष, गृहयुद्धों और विद्रोहों से ग्रस्त थे।

(2) मध्य एशिया में चेंचन्या और दागेस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन थे।

(3) अजरबैजान और जॉर्जिया के बीच गृह युद्ध हुआ।

(4) चेकोस्लोवाकिया दो भागों चेक और स्लोवाकिया में विभाजित हो गया।

(5) विशाल हाइड्रोकार्बन संसाधनों वाला मध्य एशिया बाहरी शक्तियों और तेल कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा क्षेत्र बन गया।

(6) 9/11 के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका मध्य एशिया के क्षेत्र में सैन्य अड्डे स्थापित करने का इच्छुक था।

(7) हालाँकि, रूस चाहता है कि वे स्टा रूसी प्रभाव में रहें।

(8) चीन ने भी अपनी सीमाओं (एनए) के आसपास बसना शुरू कर दिया और अपने तेल संसाधनों तक पहुंच हासिल करने के लिए व्यापार करना शुरू कर दिया है।

अथवा

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 1945 में हुई थी और अब इसकी संरचना में सुधार की आवश्यकता है और कुछ विद्वानों का मानना है कि संयुक्त राष्ट्र में सुधार का एक मतलब सुरक्षा परिषद् का पुनर्गठन करना है। मैं इस दृष्टिकोण से पूरा तरह सहमत हूँ। वास्तव में अगर हम संयुक्त राष्ट्र के सुधार करने में रुचि रखते हैं तो हमें सुरक्षा परिषद् में सुधार करना चाहिए। सुरक्षा परिषद् संयुक्त राष्ट्र के सबसे महत्त्वपूर्ण अंगों में से एक है। सुरक्षा परिषद् मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार है। सुरक्षा परिषद् सशस्त्र बलों के उपयोग से इतर उपायों पर निर्णय ले सकती है।

इसके निर्णय को प्रभावी बनाने के लिए अनुसरण और संघर्ष का उपयोग किया जाता है। सुरक्षा परिषद् वायु, थल या वायु सेना द्वारा ऐसी कार्रवाई कर सकती है जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने या बहाल करने के लिए आवश्यक है।

सुरक्षा परिषद् में 15 सदस्य होते हैं जिनमें से पाँच सदस्य होते हैं जो स्थायी सदस्य हैं। स्थायी सदस्यों को वीटो शक्ति प्राप्त है यदि हम संयुक्त राष्ट्र में सुधार करना चाहते हैं तो सुरक्षा परिषद् में सुधार किए जाने चाहिए क्योंकि यह संयुक्त राष्ट्र के सबसे शक्तिशाली अंगों में से एक है। सुरक्षा परिषद् 1945 की वैश्विक शक्ति संरचना को दर्शाती है। जब दुनिया के कोई देश अभी भी औपनिवेशिक शासन के अधीन थे। सुरक्षा परिषद् भौगोलिक रूप से असंतुलित है और इसका उचित प्रतिनिधित्व नहीं है। एक दशक से अधिक समय से संयुक्त राष्ट्र महासभा सुरक्षा परिषद् में सुधार के लिए बहस कर रही है। लेकिन सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों के बीच सहमति की कमी के कारण कोई सुधार नहीं किया गया है।

28. दक्षिण कोरिया कोरियाई प्रायद्वीप का एक महत्वपूर्ण देश है। इसे कोरिया गणराज्य कहा जाता है। कोरियाई प्रायद्वीप को दक्षिण कोरिया और उत्तरी कोरिया में विभाजित किया गया था। दक्षिण कोरिया 1991 में संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन गया। इस बीच दक्षिण कोरिया निम्नलिखित कारणों से तेजी से एक शक्ति केंद्र के रूप में उभरा।

(1) दक्षिण कोरिया 1960 से 1980 तक तेज़ी से एक आर्थिक शक्ति के रूप में विकसित हुआ जिसे ''हान नदी पर चमत्कार'' कहा जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(2) दक्षिण कोरिया 1996 में OCED का सदस्य बना।
(3) 2017 में दक्षिण कोरियाई अर्थव्यवस्था विश्व में 11वें स्थान पर है।
(4) दक्षिण कोरियाई की सैन्य व्यय विश्व में 10वें स्थान पर है।
(5) मानव विकास रिपोर्ट 2016 में दक्षिण कोरिया 18वें स्थान पर है।
(6) दक्षिण कोरिया ने सैमसंग, एल्जी और हुंडई जैसी कुछ प्रसिद्ध वस्तुओं का उत्पादन किया।

अथवा

वैश्वीकरण ने न केवल आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं को प्रभावित किया है बल्कि इसने समाज की संस्कृति को भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव इस प्रकार हैं—

(1) वैश्वीकरण ने सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाया है और उसने सार्वभौमिक भाईचारे के बंधन को मज़बूत किया है तथा सांस्कृतिक समरूपता या एकरूप संस्कृति को जन्म दिया है।
(2) वैश्वीकरण ने लगभग हर संस्कृति को समृद्ध किया है। इसने न तो कोई नई संस्कृति बनाई है और न ही किसी संस्कृति को नष्क किया है इसके हर संस्कृति के रीति-रिवाजों और फैशन में कुछ-न-कुछ वृद्धि की है। इसने किसी भी संस्कृति की बुनियादी विशेषताओं को नष्ट नहीं किया है।
(3) संस्कृतियाँ स्थिर नहीं होती बल्कि समय के साथ बदलती रहती हैं। वैश्वीकरण के कारण प्रत्येक संस्कृति ने अन्य संस्कृतियों को प्रभावित किया है।

29. भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग—स्वतंत्रता के बाद भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग की गई। स्वतंत्रता से पहले 1905 में बंगाल का विभाजन भाषा के आधार पर हुआ था। 1918 में सर मोंट फोर्ड की रिपोर्ट ने भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की आवश्यकता को स्वीकार किया, लेकिन यह इसके लिए उपयुक्त समय नहीं था। 1931 में भारतीय सांविधिक आयोग ने भी राज्यों के इस तरह के पुनर्गठन का समर्थन किया। नेहरू समिति की रिपोर्ट ने सुझाव दिया यहां प्रांतों को भाषाई आधार पर पुनर्गठित करना सबसे वांछनीय हो जाता है। भाषा एक नियम के रूप में संस्कृति, परंपराओं और साहित्य की एक विशेष विविधता के साथ मेल खाती है।

स्वतंत्रता के बाद राज्यों का एकीकरण एक बड़ी समस्या थी क्योंकि भारतीय राज्यों को स्वतंत्रता का अधिकार नहीं दिया गया था। सरदार पटेल ने इन राज्यों को पुन: संगठित किया।

उनके अथक प्रयासों से भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग ने ज़ोर पकड़ा। कांग्रेस जयपुर सम्मेलन की कार्यवाही के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के लिए एक समिति का गठन किया। पंडित नेहरू इस मुद्दे पर निष्पक्ष विचार-विमर्श के लिए 2 दिसंबर, 1953 को लोकसभा में इस आयोग के गठन की घोषणा की। इस आयोग की अध्यक्षता फज्जल अली ने की और एसडी पन्निकर तथा हृदय मठ कुंजरू इसके सदस्य थे। आयोग ने भाषा और संस्कृति के आधार पर भी राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की।

सिफारिशें—राज्य पुनर्गठन आयोग की मुख्य सिफारिशें निम्नलिखित थीं—

(1) एकभाषी राज्य में विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले अन्य समुदायों की सांस्कृतिक और संचार संबंधी आवश्यकताओं पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए।
(2) भाषाई अल्पसंख्यकों को अच्छी तरह से संरक्षित किया जाना चाहिए।
(3) हिंदी के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
(4) विश्वविद्यालयों और उच्च प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी होना चाहिए।
(5) अलग राष्ट्र के विचार को पूरी तरह से खारिज कर दिया जाना चाहिए।
(6) 'एक भाषा' 'एक प्रांत' के विचार को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। एक भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन राष्ट्रीय एकीकरण के लिए घातक साबित होगा।

राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट पर विचार करने के बाद केंद्र सरकार ने 1956 में लोकसभा में 'राज्य पुनर्गठन विधेयक' पेश किया, जिसे कुछ संशोधनों के बाद पारित कर दिया गया। राज्यों के पुनर्गठन के बाद भारतीय संघ में 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश शामिल हो गए। इसके बाद गुजराती और मराठी भाषाओं को लेकर आपसी लड़ाई हुई जिसके परिणामस्वरूप बॉम्बे-महाराष्ट्र और अल गुजरात का विभाजन 1961 में नागालैंड राज्य अस्तित्व में आया। श्रीरामुलु ने तेलुगु भाषा क्षेत्र के लिए आमरण अनशन किया और आंध्र प्रदेश अस्तित्व में आया।

मास्टर तारा सिंह और संत फतेह सिंह ने पंजाब सूबा की मांग को लेकर अनसन किया। अंतत: भाषाई आधार पर पंजाब का पुनर्गठन हुआ और हरियाणा की स्थापना हुई। चंडीगढ़ को केंद्र शासित प्रदेश घोषित किया गया और उसके बाद चंडीगढ़ की समस्या को सुलझाने के लिए दास आयोग की नियुक्ति की गई। दास आयोग के अनुसार चंडीगढ़ को हरियाणा को सौंप दिया जाना चाहिए, लेकिन केंद्र सरकार ने इसे अस्वीकार कर दिया। 1970 में श्रीमती गांधी ने घोषणा की कि चंडीगढ़ को पंजाब और फाजिल्का और अबोहर क्षेत्रों में मिला दिया जाएगा और हरियाणा को अपनी नई राजधानी बनाने के लिए 10 करोड़ का मुआवजा दिया जाएगा। लेकिन यह मुद्दा अभी भी लटका हुआ है। 25 जनवरी, 1971 को हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य घोषित किया गया।

अथवा

संयुक्त मोर्चा का गठन 1996 में हुआ था। 1996 में भाजपा 161 लोकसभा सीटों के साथ विजयी पार्टी के रूप में उभरी। लेकिन भाजपा बहुमत साबित करने में विफल रही और भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार केवल 12 दिनों तक ही चल सकी और 28 मई, 1996 को इस्तीफा दे दिया। भाजपा सरकार के इस्तीफे

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

के बाद, संयुक्त मोर्चे ने सरकार बनाने का दावा पेश किया। कांग्रेस और सीपीएम ने बाहर से समर्थन देने का फैसला किया जबकि सीपीआई संयुक्त मोर्चे की सरकार में शामिल हो गई। यह एक गठबंधन सरकार थी। इस सरकार का नेतृत्व पी.एम.एच.डी. देवेगौड़ा ने किया था। यह सरकार केवल 11 महीने ही चल पाई। क्योंकि यह प्रभावी रूप से काम करने में विफल रही।

अप्रैल, 1997 में प्रधानमंत्री एच.डी.देवेगौड़ा सरकार की जगह श्री आई.के गुजराल के नेतृत्व वाली संयुक्त मोर्चो सरकार आई। यह भी एक गठबंधन सरकार थी लेकिन यह सरकार भी कुछ महीने ही चल सकी क्योंकि कांग्रेस ने अपना समर्थन वापस ले लिया।

संयुक्त मोर्चा सरकार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) श्री एच.डी. देवेगौड़ा संयुक्त मोर्चा सरकार में प्रधानमंत्री बने।

(2) संयुक्त मोर्चा सरकार में श्री एच.डी. देवेगौड़ा के बाद श्री इंद्र कुमार गुजराल प्रधानमंत्री बने।

(3) संयुक्त मोर्चा सरकार को कांग्रेस पार्टी का बाहर से समर्थन प्राप्त था।

(4) इस सरकार में क्षेत्रीय दल अधिक शक्तिशाली हो गए।

30. भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। भारतीय संविधान के तहत भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारत का चुनाव आयेगा जनवरी, 1950 में स्थापित किया गया था। सुकुमार सेन भारत के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त थे। देश के पहले आम चुनाव 1952 में हुए थे। 1952 के पहले आम चुनाव की पूरी दुनिया में लोकतंत्र के इतिहास में मील का पत्थर माना जाता है।

(1) पहला आम चुनाव लोकतंत्र के इतिहास में एक मील का पत्थर था क्योंकि इसमें 17 करोड़ से अधिक मतदाता थे, जो पूरे विश्व में अपने आप में एक रिकार्ड था।

(2) लोकसभा की सदस्य संख्या 489 थी तथा भारत की सभी विधान-सभाओं के विधायकों की संख्या लगभग 3,200 थी। इन सदस्यों को एकल सदस्य निर्वाचन क्षेत्रों के आधार पर मतदाताओं द्वारा सीधे चुना जाता था।

(3) पहले आम चुनाव करने के लिए 3 लाख से अधिक अधिकारियों और मतदान कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

(4) पहला आम चुनाव एक गरीब और अशिक्षित देश में लोकतंत्र की पहली बड़ी परीक्षा भी थी। इससे पहले यूरोप और उत्तरी अमेरिका के समृद्ध और साक्षर देशों में चुनाव होते थे।

(5) पहले आम चुनाव सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर आयोजित किए गए थे जबकि यूरोप के कई देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। भारत में सभी वयस्क महिलाओं को मताधिकार प्राप्त था नागरिकों को वोट देने का अधिकार दिया गया।

इस प्रकार, 1952 का पहला आम चुनाव पूरी दुनिया में लोकतंत्र के इतिहास में एक बड़ी उपलब्धि थी।

अथवा

1. जम्मू-कश्मीर और 370—कश्मीर मुद्दा तनाव का एक बड़ा मुद्दा है जम्मू और कश्मीर का भारत में विलय 26 अक्टूबर 1949 को हुआ था जम्मू कश्मीर के लोगों की राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 को शामिल किया था। अनुच्छेद 370 जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा देता था जम्मू और कश्मीर राज्य का अपना संविधान, अलग झंडा और नागरिकता का अलग कानून है अनुच्छेद 370 जम्मू कश्मीर के लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

जम्मू और कश्मीर के लोगों की राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 को शामिल किया गया है। अनुच्छेद 370 जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा देता है सरदाल पटेल ने भारतीय संविधान सभा में घोषणा की जम्मू और कश्मीर सरकार के सामने मौजूदा कश्मीर के आधार पर संघ के साथ राज्य के संबंध के लिए विशेष प्रावधान किए है जम्मू और कश्मीर राज्य के पास एक संविदान है जिसके तहत जम्मू और कश्मीर के लोगों को विशेष दर्जा दिया गया है।

जम्मू-कश्मीर का अपना संविधान, अलग झंडा और नागरिकता का अलग कानून है। इसके अलावा, जम्मू कश्मीर राज्य पर केंद्र सरकार का नियंत्रण उतना प्रभावी नहीं है जितना कि अन्य राज्यों में है। अनुच्छेद 370 में बदलाव संसद् द्वारा किया जा सकता है लेकिन जम्मू-कश्मीर सरकार की सहमति से। 5-6 अगस्त, 2019 को भारतीय संविधान से अनुच्छेद 370 को हटा दिया गया। लद्दाख जम्मू-कश्मीर से अलग हो गया जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दोनों केंद्र शासित प्रदेश बन गए इस प्रकार अब भारत में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश है इसके लिए प्रश्न क्रामांक 2 भी देखें।

2. पूर्वोत्तर की समस्या—आज़ादी के बाद पूर्वोतर की राजनीति में तीन मूद्दे हावी रहे, स्वायत्तता की मांग, अलगाव के लिए आंदोलन और बाहरी लोगों का विरोध लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रंट (MNF) का गठन हुआ। 1966 में MNF ने आज़ादी के लिए सशस्त्र अभियान शुरू किया दो दशकों तक राजनीतिक हिंसा हुई। MNF ने गुरिल्ला युद्ध लड़ा। 1986 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी और लालडेंगा के बीच समझौता हुआ। इस समझौते के तहत मिज़ोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। नागालैंड में नागा नेशनल काउंसिल ने नागाओं की संप्रभुता के लिए सशस्त्र संघर्ष शुरू किया। असम में बाहरी लोगों के खिलाफ बड़ा आंदोलन हुआ। इस आंदोलन में कई दुखद और हिंसक घटनाएं हुई।

3. अलग राज्य के लिए आंदोलन—भारत में एक और तनाव यह था कि अलग राज्य के लिए विभिन्न आंदोलन चल रहे थे।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (R) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–8

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (ख) डेनमार्क और स्वीडन।
2. (क) (*i*) गलत है।
3. (घ) (*ii*) और (*iii*).
4. (ख) (*iii*), (*ii*), (*iv*), (*i*)
5. (ख) दो वर्ष।
6. (ग) यह बच्चों के स्वास्थ्य के लिए काम करता है।
7. (ख) आत्मविश्वास निर्माण।
8. (ख) 5 जून।
9. (घ) केवल (*i*)
10. (क) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।
11. (क) कथन I और कथन II सत्य है।
12. (A) – (*iv*), (B) – (*iii*), (C) – (*i*), (D) – (*ii*).

खंड—ख

13. यूरोपीय संघ की दो विशेषताएं हैं जो इसे एक प्रभावशाली संगठन बनाती हैं।
    (1) यूरोपीय संघ का आर्थिक, राजनीतिक कूटनीतिक और सैन्य प्रभाव है।
    (2) फ्रांस के पास संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट है।
14. विश्व बैंक के कार्य नीचे दिए गए हैं—
    (1) विश्व बैंक मानव विकास, कृषि एवं ग्रामीण विकास, पर्यावरण संरक्षण, बुनियादी ढांचे और सुशासन के लिए काम करता है।
    (2) यह सदस्य देशों को ऋण और अनुदान प्रदान करता है।
15. जून 1992 में पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन रियो डी जेनेरियो में आयोजित किया गया था ?
16. पहले तीन आम चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना में सहायक रहा। कई पार्टियों ने स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव की स्थिति में चुनाव लड़ा और फिर भी कांग्रेस लगातार चुनाव जीतने में सफल रही। यह स्थिति भारत में लोकतांत्रिक स्थिरता के लिए सहायक रही और इसके कारण कई अन्य राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना हुई।
17. क्षेत्रीय दलों के बढ़ते महत्त्व के लिए निम्नलिखित कारण ज़िम्मेदार हैं—
    1. **कांग्रेस की कमज़ोर स्तिति**—जब कांग्रेस संगठन और विचारधारा में मज़बूत थी तो धार्मिक क्षेत्रीय पार्टियाँ व्यावहारिक रूप से अस्तित्व में नहीं थी जैसे-जैसे कांग्रेस पार्टी कमज़ोर होती गई क्षेत्रीय पार्टियों को बढ़ावा मिला।
    2. **देश की सांस्कृतिक बहुलता**—भारत समाज में अनेक विशिष्ट सांस्कृतिक, जातीय, धार्मिक, भाषाई और जाति समूहों की उपस्थिति ने क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के विकास की प्रक्रिया में बहुत मदद की है।
18. सांप्रदायिकता का मतलब है सांप्रदायिक कट्टरता। धार्मिक समुदयों को दूसरे समुदायों और राष्ट्र के खिलाफ इस्तेमाल करना सांप्रदायिकता है। यह एक विचारधारा है जो अन्य समूहों के संबंध में एक धार्मिक समूह की अलग पहचान पर ज़ोर देती है और अकसर उनकी कीमत पर अपने हितों को बढ़ावा देने की प्रवृति होती है।

खंड—ग

19. (1) आसियान का मतलब एसोसिएशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशन्स है।
    (2) एफटीए का मतलब मुक्त व्यापार समझौता है।

    अथवा

    (1) श्रीलंका दक्षिण एशिया में अपनी अर्थव्यवस्था को उदार बनाने वाला पहला देश था।
    (2) श्रीलंका ने अपनी जनसंख्या वृद्धि को सफलतापूर्वक नियंत्रित किया।
    (3) श्रीलंका में राजनीतिक स्थिरता है।
    (4) श्रीलंका ने सदैव उच्च स्तरीय जी० डी० पी० बनाए रखी।
20. गठबंधन का मतलब है जब दो या दो से अधिक देश सुरक्षा और आर्थिक विकास के लिए एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे के साथ गठबंधन करते हैं। गठबंधन के निम्नलिखित लाभ हैं—

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(1) छोटे एवं अल्पविकसित राष्ट्र गंठबंधन या गठबंधनों द्वारा सुरक्षा प्राप्त करते हैं।

(2) गठबंधन के कारण अमित्र देश प्रतिद्वंद्वी पर हमला करने से हिचकिचाते हैं।

(3) कोई भी राष्ट्र गठबंधन के कारण अपने शत्रु का बहादुरी से सामना कर सकता है।

(4) गठबंधन के कारण जन एवं सामग्री की कमी हानि।

अथवा

संयुक्त राष्ट्र स्वदेशी जनसंख्या को उन लोगों के वंशजों के रूप में परिभाषित करता है जो किसी देश के वर्तमान भू-भाग में उस समय रहते थे जब एक अलग संस्कृति या जातीय मूल के लोग दुनिया के अन्य भागों से वहाँ पहुँचे और उन पर विजय प्राप्त की। आज के स्वदेशी लोग वे जो देश के निवासी हैं। उसकी संस्थाओं की अपेक्षा अपने विशेष सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुरूप जीवन जीते हैं।

स्वदेशी लोगों की समस्याएँ निम्नलिखित है—

(1) पूंजीपति और बहुराष्ट्रीय कंपनियां अवैध तरीकों से अपने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रही हैं।

(2) स्वदेशी लोगों के मानवाधिकारों को नष्ट करना और उनमें व्यवधान डालना।

(3) स्वदेशी लोगों की आजीविका में असुरक्षा और बेरोज़गारी का भय पैदा है।

(4) मूल निवासियों को भी अपने मूल स्थानों से प्रवास के लिए मज़बूत होना पड़ता है।

21. 1971 के चुनावों के दौरान इंदिरा गांधी की लोकप्रियता के निम्नलिखित कारण थे—

(1) करिश्माई व्यक्तिव— श्रीमती मैक्कार्थी इंदिरा गांधी अपने करिश्माई व्यक्तित्व के कारण बहुत लोकप्रिय हुईं। जैसे पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती भारत गांधी एक अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी थे। फ्रैंक मॉरिस के अनुसार 'श्रीमती गांधी न केवल कांग्रेस पार्टी की निर्विवाद नेता थीं बल्कि यह उनकी पार्टी थी और वह इस पर इस तरह से हावी हो सकती थी जैसा किसी और ने नहीं किया था। वह अपने सहयोगियों को चुनने के लिए स्वतंत्र थी जो उसके सहायक थे और उसकी उपस्थिति में काँपते थे और उसकी आज्ञा मानते थे। 1971 में हुए चौथी लोकसभा के चुनाव में लोगों ने कांग्रेस को इस कारण वोट दिया क्योंकि उसका नेतृत्व श्रीमती ए०के० कर रही थी इंदिरा गांधी।

(2) इंदिरा गांधी सरकार की समाजवादी नीतियाँ— इंदिरा गांधी की सरकार की समाजवादी नीतियों ने उन्हें जनता के बीच बहुत लोकप्रिय बना दिया। श्रीमती मैक्कार्थी इंदिरा गांधी ने सरकारी नीति को नई दिशा देने के लिए कई पहल शुरू की। इनमें से कुछ में बीमा, कोयला खदानों, तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण शामिल है। छोटे पैमाने के उद्योगों के लिए कई श्रम गहन उत्पादों को आरक्षित किया, आयत और निर्यात के साथ-साथ शहरी भूमि से संबंधित चीजों पर भी जांच रखी गई, भोजन का सार्वजनिक वितरण, भूमि सुधार और ग्रामीण गरीबों के लिए आवास का प्रावधान।

22. सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र का सबसे महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली अंग है। इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की कार्यकारी शाखा भी माना जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है। इसमें 15 सदस्य होते हैं जिनमें से पांच सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य होते हैं। स्थायी सदस्य अमेरिका, ब्रिटेन, चीन गणराज्य, फ्रांस और रूस हैं। दस सदस्य अस्थायी हैं। इन अस्थायी सदस्यों को महासभा द्वारा दो साल की अवधि के लिए चुना जाता है। कोई भी राज्य लगातार दो कार्यकाल के लिए निर्वाचित सदस्य नहीं हो सकता।

स्थायी और अस्थायी सदस्यों को दिए जाने वाले विशेषाधिकारों में प्रमुख अंतर—

(1) पांच सदस्य अमेरिका, रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, चीन स्थायी सदस्य हैं जबकि 10 अन्य अस्थायी सदस्य महासभा द्वारा दो वर्ष की अवधि के लिए चुने जाते हैं।

(2) पांचों स्थायी सदस्यों को वीटो पावर प्राप्त है लेकिन गैर स्थायी सदस्यों को यह विशेषाधिकार नहीं है।

23. अक्टूबर 1917 में रूस में पहली समाजवादी क्रांति हुई। लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक क्रांति हुई। जार का शासन उखाड़ फेंका गया और लेनिन के नेतृत्व में नई सरकार की स्थापना हुई। नया संविधान सबसे पहले 1918 में फिर 1924 में और फिर 1936 में बनाया गया। यूएसएसआर में सरकार की प्रणाली को आमतौर पर सोवियत सरकार प्रणाली के रूप में जाना जाता है। सोवियत अर्थव्यवस्था की प्रणाली एक नियोजित अर्थव्यवस्था थी और इसका प्रबंधन आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए राज्य की योजनाओं के आधार पर किया जाता था। सोवियत प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं—

(1) सोवियत प्रणाली साम्यवादी सिद्धांतों पर आधारित थी लेनिन और स्टालिन ने साम्यवादी दर्शन को देश की आवश्यकताओं के अनुरूप समायोजित किया सोवियत संविधान के पीछे मार्क्सवादी दर्शन मार्गदर्शक सिद्धांत था।

(2) सोवियत प्रणाली ने यूएसएसआर के राजनीतिक और संवैधानिक संगठन का आधार बनाया। सोवियत शब्द का अर्थ एक परिषद है जिसमें निर्वाचित प्रतिनिधि या प्रतिनिधि या कार्यकर्ता शामिल होते हैं।

(3) स्टालिन संविधान (1936) के पहले अनुच्छेद में सोवियत गणराज्य संघ को श्रमिकों और किसानों का समाजवादी राज्य बताया गया।

(4) यूएसएसआर एकदलीय राज्य था। कम्युनिस्ट पार्टी ने सोवियत संघ की सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान पर कब्जा कर लिया। कम्युनिस्ट पार्टी राज्य में सर्वोच्च मार्गदर्शक शक्ति थी। कम्युनिस्ट पार्टी यूएसएसआर में समाजवादी व्यवस्था की वास्तुकार और रक्षक होने के साथ-साथ लोगों की मार्गदर्शक और

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

शिक्षक भी थी। युएसएसआर में किसी अन्य पार्टी को अनुमति नहीं थी।

(5) सोवियत व्यवस्था 'लोकतांत्रिक केंन्द्रीयवाद' के सिद्धांत पर आधारित थी। बैशिस्की को उद्धृत करने के लिए ''सोवियत संघ राज्य लोकतांत्रिक केंद्रवाद के सिद्धांत पर बनाया गया है जो पूंजीवादी राज्य के नौकरशाही केंद्रवाद का तीव्र विरोध करता है''। इस सिद्धांत का अर्थ था कि प्रशासन के सभी निकाय लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर चुने और संगठित किए गए थे। सिद्धांत का यह भी अर्थ था निचला निकाय उच्च निकाय के प्रति उत्तरदायी था और उच्च निकायों का निर्णय निचले निकायों पर बाध्यकारी था।

(6) यूएसएसआर के नागरिकों को कर्त्तव्यों के साथ-साथ कई मौलिक अधिकार भी दिए गए। समाजवादी व्यवस्था को मज़बूत करने की दृष्टि से नागरिकों को अधिकार दिये गये। दूसरे शब्दों में अधिकार कामकाजी लोगों के हितों के अनुरूप होने चाहिए।

खंड—घ

24. (A) (क) 1967

(B) (ख) कांग्रेस पार्टी।

(C) (घ) 1967.

(D) (ग) 1967.

25.

प्रयुक्त जानकारी के लिए क्रमांक	वर्णमाला	राज्यों के नाम
(*i*)	(C)	केरल
(*ii*)	(D)	पश्चिम बंगाल
(*iii*)	(A)	बिहार
(*iv*)	(B)	तमिलनाडु

26. (*i*) विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों के कारण विश्व के तापमान में समग्र वृद्धि।

(*ii*) चिमनियाँ उद्योगों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो प्रदूषक और ज़हरीली गैसें छोड़ती हैं जो आसपास के वातावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक है।

(*iii*) लाइटर के रूप में दर्शाई गई दुनिया यह दर्शाती है कि पृथ्वी की प्राकृतिक संपदा की रक्षा के लिए दुनिया को सुधारात्मक उपाय करने की आवश्यकता है। पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों में पर्यावरणीय मुद्दों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

खंड—ङ

27. बांग्लादेश पाकिस्तान का एक हिस्सा था और इसे पूर्वी पाकिस्तान (1947 से 1971) के रूप में जाना जाता था। पाकिस्तान के नियमों के अनुसार पूर्वी बंगाल के साथ उचित व्यवहार नहीं किया गया और इसे वस्तुत: एक उपनिवेश बना दिया गया। इस क्षेत्र के लोग पश्चिमी पाकिस्तान के पतन और उर्दू भाषा को थोपने से नाराज़ थे। 1971 की शुरुआत में पाकिस्तान में हुए चुनाव में शेख मुजीब की अवामी लोग को पाकिस्तान संसद में बहुमत मिला। लेकिन शेख मुजीव को सरकार बनाने के लिए नहीं बुलाया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पूर्वी बंगाल ने स्वतंत्रता की घोषणा और पाकिस्तान के बीच युद्ध और युद्ध में पाकिस्तान की हार हुई। भारत मान्यता देने बांग्लादेश जनवादी गणराज्य के रूप में, बांग्लादेश ने अपना संविधान तैयार किया तथा लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद में पूर्ण आस्था व्यक्त की। शेख मुजीब बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति थे। 1975 में बांग्लादेश के संविधान में संशोधन किया गया और संसदीय सरकार के स्थान पर राष्ट्रपति शासन प्रणाली को अपनाया गया। शेख मुजीब ने अपनी पार्टी यानी अवामी लीग को छोड़कर सभी पार्टियों को समाप्त कर दिया। अगस्त 1975 में एक सैन्य विद्रोह में उनकी हत्या कर दी गई। सैन्य शासक जिया रहमान ने अपनी पार्टी बनाई और 1979 में चुनाव जीते। उनकी हत्या कर दी गई और लेफ्टिनेंट जनरल एच० एम० इरशाद बांग्लादेश के शासक बने। बाद में उन्हें बांग्लादेश का राष्ट्रपति चुना गया। राष्ट्रपति इरशाद ने 1990 में इस्तीफा दे दिया।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

अथवा

पर्यावरण प्रदूषण के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) **जनसंख्या में वृद्धि**—तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण के लिए ज़िम्मेदार प्रमुख कारक है। तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या के लिए आवासीय क्षेत्र की आवश्यकता होती है जिससे वनों की कटाई के लिए तेज़ी से बढ़ती आबादी प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन की ओर ले जाती है। संसाधनों की खपत उत्पादन से अधिक है पेट्रोलियम, कोयला और लोहा खनिज संसाधन भी तेज़ी से समाप्त हो रहे हैं। यह सही रूप से देखा गया है कि वनों की कटाई और रेगिस्तानीकरण के रूप में पर्यावरण विनाश का एक बड़ा हिस्सा तेज़ी से बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए मानव जाति के संघर्ष से जुड़ा हुआ है।

(2) **वनों की कटाई और मृदा अपरदन**—वन मानव जीवन को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन प्रकृति में संतुलन बनाते हैं। यह देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ ईंधन की लकड़ी, निर्माण सामग्री, स्वस्थ वातावरण और सांस लेने के लिए ताजी हवा प्रदान करते हैं लेकिन आबादी की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए और अधिक आवासीय क्षेत्र उपलब्ध कराने के लिए पेड़ों को काटा जा रहा है। ईंधन की लकड़ी की कमी से वनों की कटाई हो रही है। अधिक-से-अधिक पेड़ों के कटने से वायु प्रदूषण होता है क्योंकि पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को ऑक्सीजन में बदलने का एकमात्र स्रोत है जो जीवन की आवश्यकता है इस प्रकार वनों की कटाई के कारण हवा में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। वनों की कटाई से वर्षा पैटर्न पर भी प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा वनों की कटाई से मृदा अपरदन होता है। वनों की कटाई से वन्य जीवन प्रभावित होता है।

(3) **औद्योगीकरण**—तेज़ी से बढ़ते औद्योगीकरण ने पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ावा दिया है। जल संसाधनों में औद्योगिक अपशिष्टों के निर्वहन से जल प्रदूषण होता है।

28. सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र का सबसे महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली अंग है। इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की कार्यकारी शाखा भी माना जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है। इसमें 15 सदस्य होते हैं जिनमें से पांच सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य होते हैं। स्थायी सदस्य अमेरिका, ब्रिटेन, चीन गणराज्य, फ्रांस और रूस हैं। दस सदस्य अस्थायी हैं। इन अस्थायी सदस्यों को महासभा द्वारा दो साल की अवधि के लिए चुना जाता है। कोई भी राज्य लगातार दो कार्यकाल के लिए निर्वाचित सदस्य नहीं हो सकता।

अथवा

मुख्य रूप से सुरक्षा के दो प्रकार हैं—पारंपरिक और ग़ैर-पारंपरिक। पारंपरिक सुरक्षा मुख्य रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित है। पारंपरिक सुरक्षा केवल अत्यंत खतरनाक खतरों से संबंधित है जो पूरे देश के मूल मूल्यों को खतरे में डाल सकते हैं। सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणाएँ मुख्य रूप से सैन्य बल के उपयोग या उपयोग की धमकी से संबंधित है।

बाह्य सुरक्षा की पारंपरिक धारणा के दो घटक—

(1) शक्ति संतुलन पारंपरिक सुरक्षा का एक घटक है। शक्ति संतुलन बनाए रखने का सबसे अच्छा तरीका अपनी सैन्य शक्तियों का निर्माण करना है।

(2) गठबंधन निर्माण सुरक्षा का एक और पारंपरिक घटक है उदाहरण के लिए यूएसए द्वारा स्थापित नाटो और यूएसएसआर द्वारा बनाया गया वारसॉ संधि यह प्रणाली राज्यों के ज्ञात इतिहास जितनी पुरानी है। मोर्गेथाऊ के अनुसार ''एकाधिक राज्य प्रणाली के भीतर संचालित शक्ति संतुलन के कार्य के लिए गठबंधन आवश्यक है।''

29. भारत में अब तक 12 पंचवर्षीय योजनाएं पूरी हो चुकी हैं।

(1) **प्रथम पंचवर्षीय योजना—** प्रथम पंचवर्षीय योजना 1951 में लागू की गई थी। इस योजना में मुख्य जोर कृषि पर दिया गया।

(2) **द्वितीय पंचवर्षीय योजना—** द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1956 में क्रियान्वित की गई। इस योजना में उद्योग पर जोर दिया गया था।

(3) **तीसरी पंचवर्षीय योजना—** तीसरी पंचवर्षीय योजना 1961 में लागू की गई थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य उत्पादन में आत्मनिर्भर बनना था।

(4) **चौथी पंचवर्षीय योजना—** चौथी पंचवर्षीय योजना 1969 में लागू की गई थी। इस योजना का उद्देश्य स्थिरता के साथ विकास था।

(5) **पांचवी पंचवर्षीय योजना—** पांचवी पंचवर्षीय योजना 1974 में लागू की गई थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य गरीबी उन्मूलन था।

(6) **छठी पंचवर्षीय योजना—** यह योजना 1980 में क्रियान्वित की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य तीव्र औद्योगिकीकरण और रोजगार में वृद्धि था।

(7) **सांतवी पंचवर्षीय योजना—** यह योजना 1985 में क्रियान्वित की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की स्थापना करना था।

(8) **आठवीं पंचवर्षीय योजना—** यह योजना 1992 में लागू की गई ती इस योजना में मानव संसाधन के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी।

(9) **नौवीं पंचवर्षीय योजना—** इस योजना की अवधि 1997-2002 थी इस योजना का मुख्य उद्देश्य ''न्याय और समानता के साथ विकास'' था।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(10) **दसवीं पंचवर्षीय योजना—** इस योजना की अवधि 2002–2007 थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य अगले 10 वर्षों में भारत की प्रति व्यक्ति आय को दोगुना करना था।

(11) **ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना—** यह पंचवर्षीय योजना 2007 में लागू की गई। इसका विषय था ''तेज और अधिक समावेशी विकास''।

(12) **बारहवीं पंचवर्षीय योजना—** यह पंचवर्षीय योजना 2012 में लागू की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य सकल घरेलू उत्पाद को 9% तक बढ़ाना था।

अथवा

1950 से सर्वोच्च ने समय-समय पर संसद और राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विभिन्न कानूनों से जुड़े सैकड़ों मामलों का फैसला किया। इसने कई मामलों में न्यायिक समीक्षा की अपनी शक्ति का प्रयोग किया। मौलिक अधिकारों की संशोधनीयता का प्रश्न भारत के सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष शंकरी प्रसाद बनाम भारत संघ 91951) के मामले में आया। न्यायाधीशों का सर्वसम्मत दृष्टिकोण था कि मौलिक अधिकार चरित्र से निरपेक्ष नहीं है बल्कि अनुच्छेद 368 के तहत संविधान से संशोधन करने की संसद की शक्ति के अधीन है। लेकिन 1967 में गोलक नाथ के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया कि संसद के पास मौलिक अधिकारों ने प्रावधानों में संशोधन करने की कोई शक्ति नहीं है। 10 फरवरी 1970 को सुप्रीम कोर्ट ने बैंकिंग कंपनी अधिनियम 1969 को अवैध और असंवैधानिक घोषित कर दिया। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के प्रभाव को बेअसर करने के लिए 1971 में 24वें और 25वें संशोधन अधिनियम पारित किए गए और इन संशोधन अधिनियमों ने संसद को बैंकिंग कंपनी अधिनियम, 1969 के मध्य संशोधन करने की शक्तियाँ बहाल मौलिक अधिकार।

24वें, 25वें और 29वें संविधान संशोधन अधिनियमों को स्वामी केशवानंद भारती, केरल के धार्मिक प्रमुख और अन्य द्वारा सर्वोच्च न्यायलय में चुनौती दी गई थी। विभिन्न आधारों पर। इस मामले की सुनवाई सुप्रीम कोर्ट के 13 जजो की पूर्ण पीठ ने की सुप्रीम कोर्ट ने 24 अप्रैल 1973 की फैसला सुनाया और गोलक नाथ मामले के फैसले को पलटते हुए संसद के मौलिक अधिकारों सहित संविधान में संशोधन करने के अधिकार को बरकरार रखा। लेकिन संविधान के मूल ढांचे को नहीं।

9 मई, 1980 को मिनिवेरा मिल्स मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 42वें संशोधन अधिनियम 1976 की धारा 55 को निरस्त कर दिया, जो संसद को असीमित शक्तियाँ प्रदान करती थी। न्यायालय ने माना कि अधिनियम की धारा 55, जिसने अनुच्छेद 368 में उप-धारा (4) और (5) का पुन: सम्मिलित किया था संसद की संशोधन शक्ति से परे थी और शून्य थी क्योंकि इसने संविधान को संशोधित करने की संसद की शक्ति पर सभी सीमाओं को हटा दिया और उसे संविधान को इस तरह से संशोधित करने की शक्ति प्रदान की जिससे इसकी मूल या आवश्यक विशेषताएँ या इसका मूल ढांचा नष्ट हो जाए। न्यायलय ने संविधान के 42वें संशोधन अधिनियम की धारा 4 को भी निरस्त कर दिया जिसमें अनुच्छेद 31-सी में संशोधन करके राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों की मौलिक अधिकारों पर प्राथमिकता दी गई थी। न्यायालय ने कहा कि संसद चाहे कुछ भी करे, वह देश के मूल ढांचे को नष्ट नहीं कर सकती। परिणामस्वरूप, कोई भी कानून जो मूल ढांचें को मौलिक रूप से बदलने की कोशिश करता है उसे अमान्य घोषित किया जाना चाहिए। 42वें संशोधन के कुछ खंडों को संविधान के विरुद्ध घोषित करके न्यायालय ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सर्वोच्च न्यायालय संविधान का अंतिम निर्णायक और व्याख्याता है।

30. भारत और पाकिस्तान युद्ध 1947। उसी समय भारत का विभाजन हुआ और इसलिए पाकिस्तान अस्तित्व में आया। पकिस्तान ब्रिटिश शासकों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति का परिणाम था। पाकिस्तान भारत का पड़ोसी देश है और इसीलिए भारत-पाक संबंध महत्वपूर्ण है। भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध हमेशा अच्छे रहे हैं। विस्थापित संपत्ति, भारतीय राज्यों के संवैधानिक स्थान, सीमा रेखा के निर्धारण और जूनागढ़, हैदराबाद, कश्मीर पर विवादों के मुद्दों पर लगातार संघर्ष के कारण तनावपूर्ण कश्मीर समस्या को छोड़कर अन्य सभी विवाद हल हो गए हैं। कश्मीर मुद्दे पर दोनों देशों के बीच दो युद्ध हुए। पहले 1948 में और फिर 1965 में। सितंबर 1965 में पाकिस्तानी सेना ने भारत पर हमला किया। भारतीय सेना ने उन्हें करारी हार दी। 20 सितंबर 1965 को अपनाए गए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव ने भारत और पाकिस्तान से युद्ध विराम का आह्वान किया अंतत: U.S.S.R.R. ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई और ताशकंद घोषणा पर प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री और राष्ट्रपति अयूब खान ने 1966 में हस्ताक्षर किए।

अमेरिका ने पाकिस्तान का समर्थन किया जबकि रूस ने भारत का पक्ष लिया और वीटो का इस्तेमाल किया। श्रीमती गांधी ने 6 दिसंबर को संसद में बांग्लादेश गणराज्य की स्थापना की घोषणा की। जनरल नियाजी ने भारत के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए। लेकिन 16 दिसंबर, 1971 को आत्मसमर्पण कर दिया गया और एक लाख पाकिस्तान सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। श्रीमती इंदिरा गांधी ने 17 दिसंबर को सुबह 8 बजे एकतरफा युद्धविराम की घोषणा की और याह्या खान से युद्धविराम की अपील स्वीकार करने का अनुरोध किया। युद्ध में भारत की जीत ने उनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया और पाकिस्तान को बुरी तरह हतोत्साहित किया।

शिमला सम्मेलन—श्रीमती गांधी ने पाकिस्तान की हार का फायदा उठाए बिना दोनों देशों की समस्याओं पर चर्चा करने के लिए जून 1972 में शिमला में एक शिखर सम्मेलन

आयोजित किया। इस सम्मेलन में पाक राष्ट्रपति भुट्टो और भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भाग लिया। 3 जुलाई को श्रीमती इंदिरा गांधी और श्री भुट्टो के बीच समझौता हुआ और इसे शिमला समझौते के नाम से जाना जाता है।

शिमला समझौते के बाद द्विपक्षीय वार्ता के सिद्धांतों को प्रोत्साहित किया गया।

अथवा

1969 में राष्ट्रपति के चुनाव के समय महागठबन्धन की राजनीतिक शक्ति खुलकर सामने आ गई। कांग्रेस संसदीय बोर्ड में श्रीमती इंदिरा गांधी ने राष्ट्रपति पद के लिए जगजीवन राम के नाम का प्रस्ताव रखा जिसका सिंडिक समूह ने विरोध किया। इसके बजाय मि० मोरराजी देसाई ने संजीव रेड्डी का नाम प्रस्तावित किया जिसे चुन लिया गया। उन्होंने इस विकल्प को अस्वीकार कर दिया और यह कहते हुए गुस्से में बैठक छोड़ दी कि ''आपको इसका परिणाम भुगतना होगा।'' कांग्रेस के आधिकारिक उम्मीदवार वी०वी० गिरी के विरोध में स्वतंत्र उम्मीदवार श्रीमती इंदिरा गांधी के कारण भारत के राष्ट्रपति चुने गए। इसके कारण कांग्रेस पार्टी में विभाजन हो गया।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–9

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (ग) अमेरिका साम्यवाद को जड़ से उखाड़ने की योजना बना रहा है।
2. (ग) इस्लामाबाद में सातवें सार्क शिखर सम्मेलन में साफ्टा पर हस्ताक्षर किये गये।
3. (ख) आत्मविश्वास निर्माण।
4. (ख) 5 जून।
5. (क) जनवरी 2007 में नैरोबी।
6. (घ) राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक।
7. (ग) प्रौद्योगिकी की उन्नति।
8. (ख) अपनी संपत्ति बढ़ाने और लाभ कमाने के लिए।
9. (ग) हैदराबाद जूनागढ़ कश्मीर।
10. (ख) भारत के प्रधान मंत्री।
11. (ग) अभिकथन (A) गलत है, परन्तु कारण (R) सत्य है।
12. (A) – (*iii*), (B) – (*i*), (C) – (*iv*), (D) – (*ii*).

खंड—ख

13. कम्युनिस्ट पार्टी के कट्टरपंथियों ने 1991 में हुए तख्तापलट को बढ़ावा दिया क्योंकि वे कम्युनिस्ट पार्टी का पुरानी शैली का शासन नहीं चाहते थे।
14. (1) कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा।
    (2) अंग्रेजों द्वारा निभाई गई नकारात्मक भूमिका।
15. सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणा में किसी देश के लिए सबसे बड़ा खतरा सैन्य खतरों से होता है। सैन्य खतरा हमेशा दूसरे देश से होता है और सैन्य कारवाई देश की संप्रभुता और स्वतंत्रता के मूल मूल्यों को खतरे में डालती है। सैन्य कार्रवाइयों से लोगों की जान भी खतरे में पड़ती हैं।
16. (1) भारत के संविधान निर्माताओं ने संविधान में यह सुनिश्चित किया कि विकास और कल्याण पूरे समाज के लिए किया जाएगा न कि किसी विशेष वर्ग के लिए।
    (2) उन लोगों को विशेष सुरक्षा और संरक्षण प्रदान किया जाएगा जो सामाजिक या धार्मिक या सांस्कृतिक रूप से अल्पसंख्यक हैं।
17. राज्य स्वायत्तता शब्द का अर्थ है राजनीतिक शक्ति की वह न्यूनतम सीमा जो इकाइयों को उनके अपने साधनों और ज़रूरतों के अनुसार और अपने तरीके से अपने संसाधनों को विकसित करने के लिए पर्याप्त सुविधा देने के लिए दी गई है। वे इसे दूसरे तरीके से कहते हैं। प्रांतीय स्वायत्तता का अर्थ यथार्थवादी शब्दों में, किसी विशेष चुनाव कार्यक्रम पर राज्य विधानसभा में बहुमत से चुने गए राजनीतिक दल का अधिकार और क्षमता है उस कार्यक्रम को केंद्र द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बाधा डाले बिना क्रियान्वित करने और उसे सफल बनाना है।
18. मोदी सरकार ने प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत अभियान, जन धन योजना और दी दयाल उपाध्याय जैसी कल्याणकारी योजनाएं शुरू की। ग्रामीण योजना, किसान फसल बीमा योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, आयुष्मान भारत योजना।

खंड—ग

19. (1) यूरोपीय संघ यूरोपीय देशों का एक बहुत मज़बूत संगठन है। यूरोपीय संघ को यूरोपियन कॉमन मार्केट या यूरोपियन कॉमन कम्युनिटी भी कहा जाता है।
    (2) 2005 में 12 ट्रिलियन डॉलर से अधिक की जीडीपी के साथ यूरोपीय संघ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।
    (3) थोड़े ही समय में यह एक अत्यंत शक्तिशाली आर्थिक एवं राजनीतिक संगठन बन गया।
    (4) इसकी अपनी संसद, अपना झंडा, गान और अपनी मुद्रा है। यूरोपीय संघ राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव भी रखता है।

    अथवा

    मालदीव, आधिकारिक तौर पर मालदीव गणराज्य, दक्षिण एशिया में एक छोटा सा द्वीप राष्ट्र है जो हिंद महासागर के अरब सागर में स्थित है।

    श्रीलंका और भारत के पश्चिम में एशियाई महाद्वीप से लगभग 1000 किलोमीटर दूर-स्थित मालदीव दुनिया के सबसे भौगोलिक रूप से फल संप्रभु राज्यों में से एक है और साथ ही

HOLY FAITH INTERNATIONAL (R) LTD.

भूमि क्षेत्र और जनसंख्या के हिसाब से सबसे छोटा एशियाई देश है जिसकी आबादी लगभग 15,606 है। माले राजधानी है और सबसे अधिक आबादी वाला शहर है जिसे पारंपरिक रूप से किंग्स आइलैंड कहा जाता है। सभी नागरिकों को मुसलमान होना चाहिए और इस्लाम के अलावा किसी अन्य धर्म का पालन करना निषिद्ध है और धर्मांतरण की अनुमति नहीं है।

20. (1) आई०एल०ओ० पूरे देश में सामाजिक न्याय और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य श्रम अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए काम करता है।

(2) यह काम के घंटों और काम की स्थितियों से संबंधित नियम और विनियम बनाता है।

(3) यह पर्याप्त जीवन निर्वाह मज़दूरी का प्रावधान करता है।

(4) यह बीमारी, रोग और चोट से श्रमिकों की सुरक्षा के लिए नियम बनाता है।

अथवा

वैश्विक गरीबी मानव सुरक्षा के लिए एक और खतरा है। गरीब देशों में गरीबी बढ़ रही है और उनकी आबादी तेज़ी से बढ़ रही है। जबकि स्थिर आबादी वाले अमीर देश और अधिक अमीर हो रहे हैं। वैश्विक गरीबी गरीब देशों की सुरक्षा को प्रभावित कर रही है। उप-सहारा अफ्रीका में कई सशस्त्र संघर्ष हुए हैं जो दुनिया का सबसे क्षेत्र है।

आर्थिक असमानता कम करने के सुझाव—

(1) सभी राज्यों का समान विकास होना चाहिए।

(2) विश्व के प्रत्येक पुरुष एवं महिला को रोज़गार उपलब्ध होना चाहिए।

21. (1) प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि के विकास की प्राथमिकता दी गई। खाद्यान्न जूट और कपास के उत्पादन में वृद्धि का लक्ष्य मुख्य रूप से अधिक भूमि को खेती के अंतर्गत लाकर प्राप्त किया गया लेकिन दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61) में औद्योगिक नीति वक्तव्य 1956 के आधार पर समाजवादी पैटर्न ऑफ सोसाइटी की स्थापना को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई दूसरी योजना में बुनियादी और भारी उद्योगों पर जोर देकर औद्योगीकरण की प्रक्रिया को तेज़ करने पर मुख्य ज़ोर दिया गया।

(2) पहली पंचवर्षीय योजना की सफलता मुख्य रूप से योजना के अंतिम दो वर्षों में अच्छी फसल के कारण थी। दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान कीमतों में 30% की वृद्धि हुई जबकि पहली योजना के दौरान कीमतों में 13% की गिरावट आई थी।

22. वैश्वीकरण के मुख्य राजनीतिक परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) वैश्वीकरण ने कुछ गतिविधियों को विनियमित करने की शक्ति सरकारों से अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को स्थानांतरित कर दी है जो अप्रत्यक्ष रूप से दुनिया भर में फैली हुई है।

(2) विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन सभी देशों के लिए नियम और विनियम बनाते हैं।

(3) सरकारें कभी-कभी निजी क्षेत्रों के अनुरूप कानून और संविधान बदलने के लिए मज़बूर हो जाती हैं।

(4) कुछ सरकारें कुछ नियमों और विनियमों को खत्म करने के लिए मज़बूर हो जाती हैं जो कामकाजी लोगों और पर्यावरण अधिकारों की रक्षा करते हैं।

अथवा

वैश्वीकरण के खिलाफ जो तर्क दिए गए हैं वे इस प्रकार हैं—

(1) समकालीन वैश्वीकरण वैश्विक पूंजीवाद के एक विशेषचरण का प्रतिनिधित्व करता है जो अमीरों को अमीर बनाता है और गरीबों को गरीब बनाता है। यह तर्क वामपंथियों द्वारा दिया गया है।

(2) चूंकि वैश्वीकरण ने राज्य को कमज़ोर कर दिया है इसलिए वह गरीबों के हितों की रक्षा करने में असमर्थ है।

(3) वैश्वीकरण का विचार आत्मनिर्भरता और संरक्षणवाद के विपरीत है।

(4) वैश्वीकरण के कारण लोग अपने सदियों पुराने मूल्यों और तरीकों को खो देंगे।

(5) कुछ आलोचकों का मानना है कि वैश्वीकरण साम्राज्यवाद का ही दूसरा रूप है। विश्व सामाजिक मंच नव-उदारवादी वैश्वीकरण का विरोध करता है।

(6) वैश्वीकरण के कारण आर्थिक रूप से शक्तिशाली देशों द्वारा अनुचित व्यापार व्यवहार एक आम बात हो जाएगी। 1999 में सिएटल में WTO मंत्रिस्तरीय बैठक के दौरान इस पर प्रकाश डाला गया था।

23. (1) भारत ने अपनी सैन्य शक्ति और क्षमताओं का निर्माण किया है।

(2) भारत ने अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों को मज़बूत किया है।

खंड—ग

24. (*i*) (क) अटल बिहारी वाजपेयी (ख) चौ. चरण सिंह

(*ii*) मीसा आपातकाल के दौरान लागू आंतरिक सुरक्षा अधिनियम का रखरखाव।

(*iii*) (क) आपातकाल के दौरान अधिकता।

(ख) मीसा जैसे काले कानून लागू करना।

25. (*i*) D-तमिलनाडु (*ii*) E-केरल

(*iii*) B-उत्तर प्रदेश (*iv*) A-बिहार

(*v*) C-गुजरात।

26. (A) (क) वैश्वीकरण।

(B) (घ) राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक।

(C) (ग) मजबूत वैश्विक आर्थिक विकास।

(D) (ग) ग्राहकों की पसंद बढ़ गई है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

खंड—ङ

27. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, सोवियत संघ एक महाशक्ति बन गया और यूएसएसआर समाजवादी गुट का नेता बन गया। निम्नलिखित कारक थे जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ को महाशक्ति बनने में मदद की।

(1) यूएसएसआर में अर्थव्यवस्था की योजना बनाई गई थी और पूरी तरह से राज्य द्वारा नियंत्रित किया गया था।

(2) सोवियत संघ के पास पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन थे।

(3) इसमें परिवहन और दूरसंचार के आधुनिक साधन थे।

(4) सोवियत संघ के नागरिकों को जीवन के लिए आवश्यक सभी बुनियादी ज़रूरतें प्राप्त थीं।

(5) इसके पास एक शक्तिशाली और बड़ी सेना थी।

(6) उसके पास परमाणु हथियार थे और सोवियत संघ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य था।

अथवा

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ग्रह पृथ्वी को एक एकल इकाई माना जाता है जहां सामाजिक और लोगों के बीच आर्थिक संपर्क आधारित है। परस्पर निर्भरता पर दुनिया को एक माना जाता है। वैश्विक मुधों और समस्याओं से युक्त वैश्विक गांव वैश्विक प्रयासों और सहयोग के साथ बात की जानी चाहिए।

वैश्वीकरण ने न केवल आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं को प्रभावित किया है बल्कि इसने समाज की संस्कृति को भी प्रभावित किया है वैश्वीकरण के सकारात्मक परिणाम इस प्रकार हैं।

(1) वैश्वीकरण ने सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाया है और सार्वभौमिक भाईचारे के बंधन को मज़बूत किया है।

(2) वैश्वीकरण ने लगभग हर संस्कृति को समृद्ध किया है इसने न तो कोई नई संस्कृति बनाई है और न ही किसी संस्कृति को नष्ट किया है बल्कि हर संस्कृति के रीति-रिवाजों और फैशन में कुछ-न-कुछ वृद्धि की है।

(3) संस्कृतियां स्थिर नहीं होती बल्कि समय के साथ बदलती रहती है। वैश्वीकरण के कारण प्रत्येक संस्कृति ने अन्य संस्कृतियों को प्रभावित किया है।

(4) विभिन्न संस्कृतियों के बीच आपसी संवाद ने हमारी पसंद और नापसंद को बढ़ाया है उदाहरण के लिए वैश्वीकरण ने भारत में बर्गर और पिज्जा को ला दिया है।

28. 2003 के शिखर सम्मेलन में आसियान ने यूरोपीय संघ की तर्ज पर एक समुदाय स्थापित करने का निर्णय लिया। आसियान समुदाय में तीन स्तंभ शामिल हैं—

(1) आसियान सुरक्षा समुदाय (2) सदस्य आसियान समुदाय और (3) आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय

(1) **आसियान सुरक्षा समुदाय का उद्देश्य—**आसियान सुरक्षा समुदाय का मुख्य उद्देश्य यह है कि क्षेत्रीय विवाद सशस्त्र टकराव में न बदल जाएं।

(2) **आसियान आर्थिक समुदाय के उद्देश्य—**आसियान आर्थिक समुदाय का मुख्य उद्देश्य आसियान राज्यों के बीच एक साझा बाज़ार और उत्पादन क्षमता का निर्माण करना है।

(3) **आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय का उद्देश्य—**आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय का मुख्य उद्देश्य आसियान राज्यों के भीतर सामाजिक-संस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ाना है।

अथवा

स्वदेशी लोग किसके वंशज है मूल निवासी वे लोग हैं जो किसी विशेष क्षेत्र में तब से रह रहे हैं जब अलग-अलग संस्कृति या जातीय मूल के लोग दूसरे हिस्सों से आकर उस विशेष क्षेत्र पर कब्ज़ा कर रहे थे। संयुक्त राष्ट्र स्वदेशी आबादी को ऐसे लोग के वंशजों के रूप में परिभाषित करता है जो उस समय किसी देश के वर्तमान क्षेत्र में रहते थे जब दुनिया के दूसरे हिस्सों से अलग-अलग संस्कृतियों या जातीय मूल के लोग वहाँ पहुँचे और उन पर विजय प्राप्त की। स्वदेशी लोग अशिक्षित और गरीब थे। ज़मीन ही उनकी आय का एकमात्र स्रोत है। इस प्रकार ज़मीन के नुकसान का मतलब आर्थिक संसाधन आधार का नुकसान भी है। स्वदेशी लोगों को अस्तित्व के लिए दो खतरे निम्नलिखित हैं—

(1) गरीबी स्वदेशी लोगों के लिए एक महत्त्वपूर्ण खतरा है।

(2) वे पूरी तरह से संसाधनों पर निर्भर हैं और स्वदेशी लोगों के प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर कमी उनके जीवन के लिए एक और खतरा है।

29. 15 अगस्त, 1947 को सर्वोच्चता की समाप्ति के साथ भारतीय रियासतों को अपने भाग्य का फैसला खुद करने के लिए छोड़ दिया गया। वे चाहें तो किसी भी डोमिनियन (भारत या पाकिस्तान) में शामिल हो सकते थे या स्वतंत्र रह सकते थे। इस तथ्य को देखते हुए कि 565 राज्यों में से 10 को छोड़कर बाकी सभी उस क्षेत्र में थे जो अंतत: उससे अधिकार क्षेत्र में आता था, भारत के सामने एक कठिन चुनौती थी। इन राज्यों को ब्रिटिश सरकार ने भारत के बाकी हिस्सों में फैल रही राजनीतिक अशांति के खिलाफ सुरक्षा कवच के रूप में काम करने के लिए तैयार किया था। वे प्रतिक्रिया के गढ़ बन गए थे। निरंकुश शासन की उनकी परंपराओं ने स्वतंत्रता के लिए किसी भी आंदोलन को सिर उठाने की भी अनुमति नहीं दी। राष्ट्र निर्माण और देश एकता के लिए इन रियासतों को भारतीय संघ में शामिल करना आवश्यक था।

सरकार के विचार तीन बिंदुओं पर आधारित थे। सबसे पहले तो अधिकांश रियासतों के लोग भारत में विलय चाहते थे दूसरे सरकार का रुख बहुत लचीला था और तीसरे विभाजन की पृष्ठभूमि में भूमि के सीमांकन को लेकर विवाद सामने आया। जो भारतीय राष्ट्रीय एकता के पक्ष में नहीं था।

लेकिन, एक राजनेता के रूप में अपने श्रेय के लिए, राज्य मंत्रालय के निर्देशन प्रतिभावान सरदार वल्लभभाई पटेल ने एक साल के भीतर उनकी समस्या का समाधान कर दिया। इसके अलावा, कश्मीर और हैदराबाद के अपवादों को छोड़कर किसी की जान नहीं गई। सरदार पटेल एक मज़बूत और एकजुट भारत

बनाने के लिए दृढ़ थे इसलिए उन्होंने राज्यों को शेष भारत के साथ जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया। उन्होंने शासकों को मनाया, उन्हें बहलाया और अनिच्छुक लोगों को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी भी दी। लार्ड माउंटबेटन ने भी इस कठिन कार्य में उनकी मदद की।

सबसे पहले सरदार पटेल ने राजाओं से सहयोग की अपील की। उनसे देशभक्त की तरह व्यवहार करने की अपील की और उन्हें चेतावनी दी कि यह विकल्प उनके हित में नहीं होगा। उन्होंने राजाओं को उदार प्रिवी पर्स और पूर्ण स्वामित्व का आश्वासन दिया। सरदार पटेल ने अपने नागरिकों को भारत के नागरिकों के समान अधिकार, स्वतंत्रता और विशेषाधिकार की गारंटी भी दी। प्रतिक्रिया बहुत अच्छी थी। एक के बाद एक राजकुमारों ने विलय के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किया। 15 अगस्त, 1947 तक इसकी भौगोलिक सीमा के भीतर तीन राज्यों को छोड़कर सभी भारतीय प्रभुत्व में शामिल हो गए थे। जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर अपवाद थे।

अथवा

वैचारिक रूप से कांग्रेस ने एक पार्टी के रूप में नहीं बल्कि स्वतंत्रता और सुधार के लिए एक आंदोलन के रूप में जड़ें जमाईं और राजनीतिक सत्ता में आई। कांग्रेस पार्टी की स्थापना 1885 में अंग्रेजी बोलने वाले उच्च मध्यम वर्ग के लोगों द्वारा की गई। लेकिन असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन दोनों के साथ, कांग्रेस पार्टी का सामाजिक आधार व्यापक हो गया। विभिन्न हितों वाले सभी प्रकार के लोग कांग्रेस पार्टी के सदस्य बन गए। किसान और जमींदार उद्योगपति और मज़दूर, शहरी अभिजात वर्ग और ग्रामीण पूंजीपति और गरीब, उच्च जाति और निम्न जाति के लोग आदि सभी ''कांग्रेस सभी तरह के विचारों, समाज के सभी प्रमुख हित समूहों और वास्तव में सभी अन्य दलों का प्रतिनिधित्व किया, जिसमें वर्ग और जाति, धर्म और भाषा और विभिन्न हित शामिल हैं, अधिकतम विपक्षी राजनीतिक दल कांग्रेस में शामिल थे। कांग्रेस पार्टी के असंतुष्ट अभिजात वर्ग के लोग कांग्रेसियों के रूप में दो समान सामाजिक और बौद्धिक पृष्ठभूमि साझा करते हैं''।

30. जम्मू और कश्मीर की राजनीति हमेशा से ही एक राजनीतिक मुद्दा रही है। बाहरी और आंतरिक दोनों ही कारणों से यह विवादास्पद और संघर्षपूर्ण है। जम्मू-कश्मीर की समस्या हमेशा से ही राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी समस्या रही है पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर पर अपनी बहुसंख्या मुस्लिम आबादी के आधार पर दावा करता है जबकि चीन शक्सगाम घाटी और अक्साई चिन पर अपना दावा करता है बाहरी तौर पर कश्मीर विवाद मुख्य रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच एक क्षेत्रीय संघर्ष है जो 1947 में भारत के विभाजन के तुरंत बाद शुरू हुआ था। चीन ने कई बार इसमें छोटी भूमिका निभाई है भारत और पाकिस्तान ने कश्मीर को लेकर तीन युद्ध लड़े हैं जिनमें 1947 और 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध और 1999 कारगिल युद्ध शामिल है।

आंतरिक रूप से भारतीय संघ के भीतर कश्मीर की स्थिति के बारे में विवाद है कश्मीर को अनुच्छेद 370 द्वारा विशेष दर्जा दिया गया था जो उसे अधिक स्वतंत्रता देता है। भारत के अन्य राज्यों की तुलना में जम्मू-कश्मीर को स्वायत्तता दी गई है। इस अनुच्छेद के अनुसार राज्य का अपना संविधान है। भारतीय संविधान के सभी प्रावधान राज्य पर लागू नहीं होते है और संसद द्वारा पारिस कानून भी जम्मू-कश्मीर पर तभी लागू होते हैं जब राज्य सहमत हो। इस विशेष दर्जे ने दो तरह की प्रतिक्रियाएं पैदा की हैं। जम्मू कश्मीर के बाहर के एक वर्ग को लगता है कि अनुच्छेद 370 को खत्म कर देना चाहिए। जबकि कश्मीरियों का एक वर्ग मांग करता है कि अनुच्छेद 370 द्वारा गारंटीकृत विशेष संघीय दर्जा व्यवहार में नहीं दिया गया है तीसरा, राज्य के लोग कश्मीरी लोगों को अपना भविष्य तय करने की अनुमति देने के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष जनमत संग्रह की मांग करते हैं।

5-6 अगस्त, 2019 को भारतीय संविधान से अनुच्छेद 370 को हटा दिया गया। लद्दाख को जम्मू-कश्मीर से अलग कर दिया गया। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दोनों केंद्र शासित प्रदेश बन गए। इसलिए भारत में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं उसके लिए प्रश्न संख्या 2 भी देखें।

अथवा

1989 के बाद से भारतीय राजनीति में प्रमुख घटनाक्रम निम्नलिखित हैं—

1. राष्ट्रीय मोर्चा—नवंबर 1989 में 9वीं लोकसभा के लिए चुनाव हुए और किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। जनता दल, कांग्रेस (एस) और तीन क्षेत्रीय दलों यानी तेलुगु देशम, डीएम के और एजीपी से मिलकर बने पांच दलो के राष्ट्रीय मोर्चे ने भाजपा और वामपंथी दलों के बाहरी समर्थन से वी.पी. सिंह के नेतृत्व में सरकार बनाई।

2. कांग्रेस (I) सरकार—मई-जून, 1991 में 10वीं लोकसभा के लिए चुनाव हुए और लगातार दूसरी बार त्रिशंकु लोकसभा बनी। किसी भी एक पार्टी को लोक सभा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। कांग्रेस (आई) ने पी.वी. नरसिम्हा राव के नेतृत्व में सरकार बनाई।

3. नई आर्थिक नीति —1991 में नई आर्थिक नीति लागू की गई।

4. मंडल आयोग की रिपोर्ट—प्रधानमंत्री वी.पी सिंह ने 7 अगस्त, 1990 को संसद् में अचानक मंडल रिपोर्ट को स्वीकार करने की घोषणा की लेकिन वी.पी. सिंह के इस कदम से उनके वरिष्ठतम सहयोगियों की आलोचना हुई। मंडल रिपोर्ट के क्रियान्वयन के खिलाफ छात्र समुदाय ने पूरे देश में व्यापक आंदोलन चलाया।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–10

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (क) निरंकुश तानाशाही।

2. (घ) सोवियत संघ 1992 में विघटित हो गया।

3. (ग) ईरान।

4. (घ) नरेंद्र मोदी।

5. (ख) आसियान सदस्यों के बीच एक अनौपचारिक और सहयोगात्मक बातचीत है।

6. (ग) गैर-सरकारी संगठन।

7. (क) (*iii*), (*iv*), (*ii*), (*i*).

8. (ग) यह हथियारों के अधिग्रहण या विकास को नियंत्रित करता है।

9. (ख) 1952.

10. (घ) अभिकथन (A) सही है, परन्तु कारण (R) गलत है।

11. (A) – (*iv*), (B) – (*i*), (C) – (*ii*), (D) – (*iii*).

12. (ग) अभिकथन (A) गलत है, परन्तु कारण (R) सही है।

खंड—ग

13. (1) मार्शल योजना के तहत पश्चिमी यूरोपीय राज्यों को सहायता पहुंचाने के लिए 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना की गई थी।

(2) दिसंबर 1991 में सोवियत संघ के विघटन ने पश्चिमी यूरोपीय, देशों को क्षेत्रीय सहयोग के लिए आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

14. (1) एमनेस्टी इंटरनेशनल का पहला उद्देश्य पूरे विश्व में मानवाधिकारों की रक्षा करना है।

(2) यह मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा में उल्लिखित सभी मानव अधिकारों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है।

15. (1) आदिवासी लोग अशिक्षित और गरीब हैं। वे नहीं जानते कि अपने अधिकारों की रक्षा कैसे करें?

(2) ज़मीन ही उनकी आय का एकमात्र स्रोत है इस प्रकार ज़मीन के नुकसान का मतलब आर्थिक संसाधन आधार का नुकसान भी है।

16. चुनाव आयोग की स्थापना जनवरी, 1950 में हुई थी। सुकुमार सेन पहले मुख्य चुनाव आयुक्त थे।

17. (1) प्रमुख विवाद सीमा मुद्दे और हिमालय की तलहटी में 4,200 किलोमीटर लंबी सीमा के सीमांकन से संबंधित है।

(2) 20 अक्तूबर 1962 को भारतीय सीमा पर चीनी आक्रमण और भारतीय सीमाओं का निरंतर उल्लंघन।

18. आपातकाल से निम्नलिखित दो सबक सीखे गए—

(1) नौकरशाही स्वतंत्र होनी चाहिए। नौकरीशाही स्वतंत्र और निष्पक्ष होनी चाहिए। उसे सत्ताधारी पार्टी की विचारधारा और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होना चाहिए बल्कि नौकरशाही को संविधान के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। न्यायपालिका को कार्यपालिका के अधीन नहीं होना चाहिए। न्यायपालिका स्वतंत्र होनी चाहिए और उसे नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।

(2) सरकार को संविधान के प्रावधानों के अनुसार प्रशासन चलाना चाहिए। न्यायपालिका संविधान की संरक्षक है।

खंड—घ

19. वैश्वीकरण का प्रभाव भारत के लिए लाभकारी रहा है।

(1) भारत में आटोमोबाइल, सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के क्षेत्र में कई नई उत्पादन इकाइयाँ स्थापित की गई हैं।

(2) कई उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें कम हो गई हैं जैसे टी०वी०, रेडियो, एयर-कंडीशनर आदि।

(3) दूरसंचार क्षेत्र ने जबरदस्त विकास किया है। लोग कई टी०वी० चैनल देख सकते हैं। मोबाइल फोन हर जगह और आम लोगों तक पहुँच चुके हैं।

(4) विश्व में वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ी है।

अथवा

(1) चीनी ने अपना राजनीतिक अलगाव समाप्त कर दिया। पूंजीवादी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने शुरू किये। अमेरिका के सहयोग से चीन को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य

HOLY FAITH INTERNATIONAL (I) LTD.

बनाया गया। 1972 में चीन ने अमेरिका के साथ संबंध स्थापित किये।

(2) चीन के प्रधानमंत्री झोउ एनलाई ने 1972 में चार आधुनिकीकरण कृषि, उद्योग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और सैन्य का प्रस्ताव रखा। चार आधुनिकीकरण युग डेंग जियाओपिंग की प्रमुखता के उदय से जुड़े थे।

(3) डेंग जियाओपिंग ने 'ओपन डोर' नीति और चीन में आर्थिक सुधारों की घोषणा की।

(4) चीन ने 'शॉक थेरेपी' का रास्ता चुनने के बजाय 'ओपन डोर' नीति का पालन किया।

20. (1) दक्षिण एशिया के विभिन्न देशों जैसे भारत, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और पाकिस्तान में लोकतंत्र सफलतापूर्वक स्थापित है।

(2) दक्षिण एशिया के विभिन्न समुदायों, धर्मों और जातियों के लोग को पसंद करते हैं।

(3) दक्षिण एशिया के लोग किसी भी अन्य प्रशासन प्रणाली की तुलना में लोकतांत्रिक प्रणाली को पसंद करते हैं।

(4) दक्षिण एशिया के विभिन्न सर्वेक्षणों से यह सिद्ध होता है कि दक्षिण एशिया के लोग लोकतंत्र के प्रति समर्थन के साथ-साथ पक्षधर भी हैं।

अथवा

वीटो का मतलब है 'मैं मना करता हूं', यह एक तरह की शक्ति है जिसके जरिए किसी देश के अधिकारी किसी कानून को एकतरफा रोक सकते है। सबसे आम मामले में राष्ट्रपति या सम्राट किसी विधेयक को कानून बनने से रोकने के लिए उस पर वीटो लगता है। कई देशों में, देश के संविधान में वीटो शक्तियां स्थापित की जाती है।

सुरक्षा परिषद् में 15 सदस्य होते हैं, जिनमें से 5 सदस्य स्थायी और 10 सदस्य अस्थायी होते हैं। 5 स्थायी सदस्य हैं— (*i*) अमेरिका (*ii*) ब्रिटेन (*iii*) रूस (*iv*) फ्रांस और (*v*) पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ-चाइना। इन स्थायी सदस्यों को सुरक्षा परिषद् में वीटो का अधिकार प्राप्त है। इन बड़ी शक्तियों को वीटो पावर इसलिए दी गई क्योंकि इनके सहयोग में अंतर्राष्ट्रीय शांति कायम की जा सकती है। इसके अलावा, वीटो पावर के बिना, बड़ी शक्तियों की संयुक्त राष्ट्र में रुचि खत्म हो जाएगी और संयुक्त राष्ट्र एक अप्रभावी निकाय बन जाएगा।

21. पहले तीन आम चुनावों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दबदबा रहा। कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित कारक जिम्मेदार थे—

(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एशिया की सबसे पुरानी पार्टी है। कांग्रेस पार्टी की स्थापना 1885 में हुई थी।

(2) कांग्रेस पार्टी ने स्वतंत्रता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वास्तव में राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास कांग्रेस पार्टी का इतिहास है। कांग्रेस पार्टी के कई नेता और हज़ारों कार्यकर्ता वर्षों तक जेल में रहे।

(3) कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ० राजेंद्र प्रसाद, आचार्य जेपी, कृपालिनी, डॉ० पट्टाभि सीतारमैया आदि।

(4) पहली बार एक गरीब और अशिक्षित देश में आम चुनाव हुए जो लोकतंत्र की एक बड़ी परीक्षा थी। इसमें यूरोप और उत्तरी अमेरिका के समृद्ध और साक्षर देशों में सफलतापूर्वक चुनाव हुए थे।

22. आतंकवाद में वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ग़ैरकानूनी गतिविधियाँ शामिल हैं। आतंकवाद से तात्पर्य हिंसा से है जो जानबूझकर और अंधाधुंध तरीके से नागरिकों को निशाना बनाती है। बम विस्फोट, अपहरण, मानव बम हत्या आदि सभी आतंकवाद के कार्य हैं। आमतौर पर नागरिकों को जनता के बीच आतंक और सांप्रदायिक हिंसा पैदा करने के लिए निशाना बनाया जाता है। आजकल, न केवल नागरिक बल्कि सशस्त्र कर्मियों पर भी आतंकवाद हमला करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए बहुत गंभीर खतरा बन गया है। आतंकवाद का लोकतांत्रिक और संवैधानिक तरीकों में कोई विश्वास नहीं है। हथियारों के व्यापार और हथियारों के हस्तांतरण के प्रसार ने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के जन्म के लिए एक अच्छी ज़मीन प्रदान की।

आतंकवाद खतरे का नया स्त्रोत—

(1) आतंकवाद हिंसा का एक संगठित, योजनाबद्ध और जानबूझकर किया गया कार्य है।

(2) आतंकवाद ग़ैरकानूनी, अमानवीय और असंवैधानिक है।

(3) आतंकवाद का लोकतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों में कोई विश्वास नहीं है।

(4) आतंकवाद नागरिकों और सशस्त्र कर्मियों के विरुद्ध निर्देशित है।

(5) आतंकवाद राजनीति से प्रेरित हिंसा है अर्थात सरकार के विरुद्ध।

(6) आतंकवाद ब्लैकमेलिंग का एक हथियार है आतंकवादी सरकार को अपनी ग़ैरकानूनी मांगें मानने के लिए मज़बूर करते हैं।

23. वैश्विक शब्द का शाब्दिक अर्थ है ग्लोब से संबंधित होना जिसका तात्पर्य मानव जाति के प्राकृतिक आवास यानी वैश्विक ग्रह पृथ्वी से जुड़ा होना है। वैश्वीकरण को सामाजिक और आर्थिक संपर्क एक प्रक्रिया एक एकल इकाई माना जाता है जहाँ लोगों के बीच है जो अन्योन्याश्रितता पर आधारित हैं। दुनिया को वैश्विक गाँव माना जाता है जहाँ वैश्विक मुद्दे और समस्याएँ वैश्विक प्रयासों और सहयोग से हल की जा सकती है। वैश्वीकरण के रूप में भी समझाया जा सकता है। सरल शब्दों में वैश्वीकरण का अर्थ है राष्ट्रीय सीमाओं के पार वस्तुओं, सेवाओं, लोगों, पूंजी और संस्कृतियों का मुक्त प्रवाह इसने वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक संचार का निर्माण किया है। वैश्वीकारण एक कदम है।

विश्व को एक राष्ट्र बनाने तथा विश्व को मज़बूत बनाने के लिए वैश्वीकरण के लिए ज़िम्मेदार कारक—

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(1) वैश्वीकरण विश्व की बदलती परिस्थितियों और राष्ट्रों की आर्थिक परस्पर निर्भरता के कारण है।

(2) वैश्वीकरण ने विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा पर निर्भरता को कम करने के लिए भी प्रोत्साहित किया है।

(3) अधिक आर्थिक विकास और जनसंख्या के बड़े हिस्से के कल्याण के लिए वैश्वीकरण आवश्यक है।

आर्थिक वैश्वीकरण अपरिहार्य है और विकास की गति का विरोध करना बुद्धिमानी नहीं है।

खंड—घ

24. (A) (ख) 1975.

(B) (क) श्रीमती इंदिरा गांधी।

(C) (घ) 352.

(D) (क) आंतरिक अशांति का खतरा।

25.

प्रयुक्त जानकारी के लिए क्रमांक	वर्णमाला चिंतित	राज्यों के नाम
(*i*)	(C)	पंजाब
(*ii*)	(D)	कर्नाटक
(*iii*)	(A)	बिहार
(*iv*)	(B)	तमिलनाडु

26. (*i*) कार्टून में दाईं ओर दिखाए गए नेता भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल हैं।

(*ii*) कार्टून शासक और जनता के बीच क्रमशः स्वामी और दास के रूप में संबंध को दर्शाता है।

(*iii*) देशी रियासतों के मुद्दे को सुलझाने के लिए कार्टून के दाईं ओर के नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 500 से अधिक स्वतंत्र राज्यों को सफलतापूर्वक भारत में विलय कराया।

खंड—ङ

27. बांग्लादेश पाकिस्तान का एक हिस्सा था और इसे पूर्वी पाकिस्तान (1947 से 1971) के रूप में जाना जाता था। पाकिस्तान के नियमों के अनुसार पूर्वी बंगाल के साथ उचित व्यवहार नहीं किया गया और इसे वस्तुतः एक उपनिवेश बना दिया गया। इस क्षेत्र के लोग पश्चिमी पाकिस्तान के पतन और उर्दू भाषा को थोपने से नाराज़ थे। 1971 की शुरुआत में पाकिस्तान में हुए चुनाव में शेख मुजीब की अवामी लोग को पाकिस्तान संसद में बहुमत मिला। लेकिन शेख मुजीव को सरकार बनाने के लिए नहीं बुलाया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पूर्वी बंगाल ने स्वतंत्रता की घोषणा और पाकिस्तान के बीच युद्ध और युद्ध में पाकिस्तान की हार हुई। भारत मान्यता देने बांग्लादेश जनवादी गणराज्य के रूप में, बांग्लादेश ने अपना संविधान तैयार किया तथा लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद में पूर्ण आस्था व्यक्त की। शेख मुजीब बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति थे। 1975 में बांग्लादेश के संविधान में संशोधन किया गया और संसदीय सरकार के स्थान पर राष्ट्रपति शासन प्रणाली को अपनाया गया। शेख मुजीब ने अपनी पार्टी यानी अवामी लीग को छोड़कर सभी पार्टियों को समाप्त कर दिया। अगस्त 1975 में एक सैन्य विद्रोह में उनकी हत्या कर दी गई। सैन्य शासक जिया रहमान ने अपनी पार्टी बनाई और 1979 में चुनाव जीते। उनकी हत्या कर दी गई और लेफ्टिनेंट जनरल एच० एम० इरशाद बांग्लादेश के शासक बने। बाद में उन्हें बांग्लादेश का राष्ट्रपति चुना गया। राष्ट्रपति इरशाद ने 1990 में इस्तीफा दे दिया।

अथवा

पर्यावरण प्रदूषण के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) **जनसंख्या में वृद्धि**—तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण के लिए ज़िम्मेदार प्रमुख कारक है। तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या के लिए आवासीय क्षेत्र की आवश्यकता होती है जिससे वनों की कटाई के लिए तेज़ी से बढ़ती आबादी प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन की ओर ले जाती है। संसाधनों की खपत उत्पादन से अधिक है पेट्रोलियम, कोयला और लोहा खनिज

HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

संसाधन भी तेज़ी से समाप्त हो रहे हैं। यह सही रूप से देखा गया है कि वनों की कटाई और रेगिस्तानीकरण के रूप में पर्यावरण विनाश का एक बड़ा हिस्सा तेज़ी से बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए मानव जाति के संघर्ष से जुड़ा हुआ है।

(2) **वनों की कटाई और मृदा अपरदन**—वन मानव जीवन को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन प्रकृति में संतुलन बनाते हैं। यह देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ ईंधन की लकड़ी, निर्माण सामग्री, स्वस्थ वातावरण और सांस लेने के लिए ताजी हवा प्रदान करते हैं लेकिन आबादी की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए और अधिक आवासीय क्षेत्र उपलब्ध कराने के लिए पेड़ों को काटा जा रहा है। ईंधन की लकड़ी की कमी से वनों की कटाई हो रही है। अधिक-से-अधिक पेड़ों के कटने से वायु प्रदूषण होता है क्योंकि पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को ऑक्सीजन में बदलने का एकमात्र स्रोत है जो जीवन की आवश्यकता है इस प्रकार वनों की कटाई के कारण हवा में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। वनों की कटाई से वर्षा पैटर्न पर भी प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा वनों की कटाई से मृदा अपरदन होता है। वनों की कटाई से वन्य जीवन प्रभावित होता है।

(3) **औद्योगीकरण**—तेज़ी से बढ़ते औद्योगीकरण ने पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ावा दिया है। जल संसाधनों में औद्योगिक अपशिष्टों के निर्वहन से जल प्रदूषण होता है।

28. बांग्लादेश पाकिस्तान का एक हिस्सा था और इसे पूर्वी पाकिस्तान (1947 से 1971) के रूप में जाना जाता था। पाकिस्तान के नियमों के अनुसार पूर्वी बंगाल के साथ उचित व्यवहार नहीं किया गया और इसे वस्तुत: एक उपनिवेश बना दिया गया। इस क्षेत्र के लोग पश्चिमी पाकिस्तान के पतन और उर्दू भाषा को थोपने से नाराज़ थे। 1971 की शुरुआत में पाकिस्तान में हुए चुनाव में शेख मुजीब की अवामी लोग को पाकिस्तान संसद में बहुमत मिला। लेकिन शेख मुजीब को सरकार बनाने के लिए नहीं बुलाया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पूर्वी बंगाल ने स्वतंत्रता की घोषणा और पाकिस्तान के बीच युद्ध और युद्ध में पाकिस्तान की हार हुई। भारत मान्यता देने बांग्लादेश जनवादी गणराज्य के रूप में, बांग्लादेश ने अपना संविधान तैयार किया तथा लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद में पूर्ण आस्था व्यक्त की। शेख मुजीब बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति थे। 1975 में बांग्लादेश के संविधान में संशोधन किया गया और संसदीय सरकार के स्थान पर राष्ट्रपति शासन प्रणाली को अपनाया गया। शेख मुजीब ने अपनी पार्टी यानी अवामी लीग को छोड़कर सभी पार्टियों को समाप्त कर दिया। अगस्त 1975 में एक सैन्य विद्रोह में उनकी हत्या कर दी गई। सैन्य शासक जिया रहमान ने अपनी पार्टी बनाई और 1979 में चुनाव जीते। उनकी हत्या कर दी गई और लेफ्टिनेंट जनरल एच० एम० इरशाद बांग्लादेश के शासक बने। बाद में उन्हें बांग्लादेश का राष्ट्रपति चुना गया। राष्ट्रपति इरशाद ने 1990 में इस्तीफा दे दिया।

अथवा

भारत की सुरक्षा रणनीति की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं—

1. **सैन्य शक्ति और क्षमताओं को मज़बूत करना**—स्वतंत्रता के समय भारत को पड़ोसी राज्यों के साथ-साथ सांप्रदायिक हिंसा के कारण अपनी सुरक्षा के लिए खतरों का सामना करना पड़ा। भारत को अपनी सैन्य शक्ति और अपनी क्षमताओं का निर्माण करना होगा। भारत ने अपनी सुरक्षा को सुरक्षित रखने के लिए परमाणु परीक्षण करने की नीति अपनाई। भारत ने 1974 और 1998 में सफलतापूर्वक परमाणु परीक्षण किए।
2. **अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों और कानूनों को मज़बूत करना**—भारत ने अपने सुरक्षा हितों की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडो, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों आदि को मज़बूत किया है। भारत को संयुक्त राष्ट्र में पूर्ण विश्वास है और उसने हमेशा संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों का समर्थन किया है। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अतत: एशियाई एकजुटता उपनिवेशवाद निरस्त्रीकरण आदि के कारण का समर्थन किया। अधिक प्रभावी होने के लिए भारतीय नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र की संरचना और कार्यप्रणाली में कई सुधारों का सुझाव दिया है। भारत ने एक न्यायसंगत नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के लिए तर्क दिया : किसी भी ब्लॉक में शामिल होने के बजाय, भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन करना पसंद किया। भारत उन 160 देशों में शामिल हुआ जिन्होंने 1997 के क्योंटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर और पुष्टि की है। भारतीय सैनिकों को संयुक्त राष्ट्र के शांति रक्षा मिशन पर अन्य देशों में भेजा गया है।
3. **आंतरिक खतरों से निपटने की नीति**—भारत ने मिजोरम, नागालैंड, पंजाब, जम्मू और कश्मीर के आतंकवादी समूहों अलगाववादियों आदि से निपटने के लिए दृढ़ नीति अपनाई। अलगाववादियों ने भारत से अलग होने की कोशिश की है। उन्होंने देश की एकता और अखंडता को खतरा बताया। भारत सरकार ने अलगाववादियों से निपटने के लिए लोकतांत्रिक तरीका अपनाया, लेकिन उन्हें दृढ़ता से बताया कि देश की एकता और सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

29. यूरोपीय संघ (ईयू) यूरोपीय देशों का एक बहुत मज़बूत क्षेत्रीय संगठन है। यह विश्व राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यूरोपय संघ को यूरोपीय कॉमन मार्केट या यूरोपीय संघ भी कहा जाता है। सामान्य समुदाय थोड़े समय में ही यह एक बहुत शक्तिशाली आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रीय संगठन बन गया। वास्तव में यह एक सुपरनेशनल संगठन बन गया है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

यूरोपीय संघ की अपनी संसद, अपना झंडा, राष्ट्रगान और अपनी मुद्रा है। यूरोपीय संघ का मुख्याल ब्रुसेल्स (बेल्जियम) में है। यूरोपीय संघ की आधिकारिक भाषाओं में बल्गेरियाई, डेनिश, डच, इतालवी, रोमानियाई, स्पेनिश, पोलिश, स्वीडिश आदि शामिल हैं।

(1) **सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में यूरोपीय संघ—** यूरोपीय संघ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है जिसका सकल घरेलू उत्पाद 2003 तक 12 ट्रिलियन डॉलर से अधिक था, जो संयुक्त राज्य अमेरिका से थोड़ा बड़ा है। इसकी मुद्रा यूरो, अब अमेरिका डॉलर के प्रभुत्व के लिए खतरा पैदा करने की स्थिति में है। विश्व व्यापार में इसका हिस्सा संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में तीन गुणा अधिक है जो इसे अमेरिका और चीन के साथ व्यापार विवादों में अधिक मुखर होने की अनुमति देता है। अपनी आर्थिक शक्ति के कारण, यह अपने पड़ोसियों के साथ-साथ एशिया और अफ्रीका पर भी बहुत प्रभाव डालता है यह विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों में एक महत्वपूर्ण ब्लॉक के रूप में भी कार्य करता है।

(2) **यूरोपीय संघ का राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव—**यूरोपीय संघ राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव भी डालता है फ्रांस संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य है। यूरोपीय संघ के कई सदस्य सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य हैं। इस प्रकार, यूरोपीय संघ संयुक्त राष्ट्र की नीतियों के साथ-साथ अमेरिका पर भी बहुत प्रभाव डालता है।

(3) **यूरोपीय संघ का सैन्य प्रभाव—**यूरोपीय संघ की संयुक्त सशस्त्र सेना दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी है।

इस प्रकार यूरोपीय संघ एक सुपरनेशनल संगठन है और विश्व के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप कर सकते हैं।

यूरोपीय संघ की सीमाएँ हालाँकि, यूरोपीय संघ की कुछ सीमाएँ हैं।

(1) यूरोपीय संघ एक साझा संविधान अपनाने में विफल रहा है। प्रधानमंत्री चर्चिल का संयुक्त राज्य यूरोप का सपना साकार नहीं हो सका।

(2) यूरोपीय संघ की साझा मुद्रा को सभी सदस्य देशों द्वारा नहीं अपनाया जाता है।

(3) सदस्य देशों की अपनी विदेश और रक्षा नीतियाँ भी हैं जो कभी-कभी एक दूसरे से अलग होती हैं। उदाहरण के लिए जर्मनी और फ्रांस ने इराक पर आक्रमण करने के संयुक्त राज्य अमेरिका के फैसले का विरोध किया।

13 दिसंबर 2007 को यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों और सरकारों ने लिस्बास संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे उन्हें उम्मीद थी कि निर्णय लेने की प्रक्रिया और अधिक कुशल हो जाएगी। लिस्बास संधि ने यूरोपीय संघ के संस्थानों और निर्णन लेने के तंत्र में दूरगामी परिवर्तन किए है। इसने यूरोपीय परिषद् के दीर्घकालिक अध्यक्ष का पद बनाया। यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के पास संधि की पुष्टि करने के लिए एक वर्ष का समय था। यह जनवरी 2009 में योजना के अनुसार लागू हुआ।

अथवा

दक्षिण कोरिया कोरियाई प्रायद्वीप का एक महत्वपूर्ण देश है। इसे कोरिया गणराज्य कहा जाता है। कोरियाई प्रायद्वीप को दक्षिण कोरिया और उत्तरी कोरिया में विभाजित किया गया था। दक्षिण कोरिया 1991 में संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन गया। इस बीच दक्षिण कोरिया निम्नलिखित कारणों से तेजी से एक शक्ति केंद्र के रूप में उभरा।

(1) दक्षिण कोरिया 1960 से 1980 तक तेज़ी से एक आर्थिक शक्ति के रूप में विकसित हुआ जिसे ''हान नदी पर चमत्कार'' कहा जाता है।

(2) दक्षिण कोरिया 1996 में OCED का सदस्य बना।

(3) 2017 में दक्षिण कोरियाई अर्थव्यवस्था विश्व में 11वें स्थान पर है।

(4) दक्षिण कोरियाई की सैन्य व्यय विश्व में 10वें स्थान पर है।

(5) मानव विकास रिपोर्ट 2016 में दक्षिण कोरिया 18वें स्थान पर है।

(6) दक्षिण कोरिया ने सैमसंग, एल्जी और हुंडई जैसी कुछ प्रसिद्ध वस्तुओं का उत्पादन किया।

30. भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। भारतीय संविधान के तहत भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारत का चुनाव आयेगा जनवरी, 1950 में स्थापित किया गया था। सुकुमार सेन भारत के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त थे। देश के पहले आम चुनाव 1952 में हुए थे। 1952 के पहले आम चुनाव की पूरी दुनिया में लोकतंत्र के इतिहास में मील का पत्थर माना जाता है।

(1) पहला आम चुनाव लोकतंत्र के इतिहास में एक मील का पत्थर था क्योंकि इसमें 17 करोड़ से अधिक मतदाता थे, जो पूरे विश्व में अपने आप में एक रिकार्ड था।

(2) लोकसभा की सदस्य संख्या 489 थी तथा भारत की सभी विधान-सभाओं के विधायकों की संख्या लगभग 3,200 थी। इन सदस्यों को एकल सदस्य निर्वाचन क्षेत्रों के आधार पर मतदाताओं द्वारा सीधे चुना जाता था।

(3) पहले आम चुनाव करने के लिए 3 लाख से अधिक अधिकारियों और मतदान कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

(4) पहला आम चुनाव एक गरीब और अशिक्षित देश में लोकतंत्र की पहली बड़ी परीक्षा भी थी। इससे पहले यूरोप और उत्तरी अमेरिका के समृद्ध और साक्षर देशों में चुनाव होते थे।

(5) पहले आम चुनाव सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर आयोजित किए गए थे जबकि यूरोप के कई देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था।

HOLY PATH INTERNATIONAL (P) LTD.

भारत में सभी वयस्क महिलाओं को मताधिकार प्राप्त था नागरिकों को वोट देने का अधिकार दिया गया।

इस प्रकार, 1952 का पहला आम चुनाव पूरी दुनिया में लोकतंत्र के इतिहास में एक बड़ी उपलब्धि थी।

अथवा

1. **जम्मू-कश्मीर और 370—**कश्मीर मुद्दा तनाव का एक बड़ा मुद्दा है जम्मू और कश्मीर का भारत में विलय 26 अक्टूबर 1949 को हुआ था जम्मू कश्मीर के लोगों की राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 को शामिल किया था। अनुच्छेद 370 जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा देता था जम्मू और कश्मीर राज्य का अपना संविधान, अलग झंडा और नागरिकता का अलग कानून है अनुच्छेद 370 जम्मू कश्मीर के लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

   जम्मू और कश्मीर के लोगों की राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 को शामिल किया गया है। अनुच्छेद 370 जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा देता है सरदाल पटेल ने भारतीय संविधान सभा में घोषणा की जम्मू और कश्मीर सरकार के सामने मौजूदा कश्मीर के आधार पर संघ के साथ राज्य के संबंध के लिए विशेष प्रावधान किए है जम्मू और कश्मीर राज्य के पास एक संविदान है जिसके तहत जम्मू और कश्मीर के लोगों को विशेष दर्जा दिया गया है।

   जम्मू-कश्मीर का अपना संविधान, अलग झंडा और नागरिकता का अलग कानून है। इसके अलावा, जम्मू कश्मीर राज्य पर केंद्र सरकार का नियंत्रण उतना प्रभावी नहीं है जितना कि अन्य राज्यों में है। अनुच्छेद 370 में बदलाव संसद् द्वारा किया जा सकता है लेकिन जम्मू-कश्मीर सरकार की सहमति से। 5-6 अगस्त, 2019 को भारतीय संविधान से अनुच्छेद 370 को हटा दिया गया। लद्दाख जम्मू-कश्मीर से अलग हो गया जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दोनों केंद्र शासित प्रदेश बन गए इस प्रकार अब भारत में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश है इसके लिए प्रश्न क्रामांक 2 भी देखें।

2. **पूर्वोत्तर की समस्या—**आज़ादी के बाद पूर्वोतर की राजनीति में तीन मूद्दे हावी रहे, स्वायत्तता की मांग, अलगाव के लिए आंदोलन और बाहरी लोगों का विरोध लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रंट (MNF) का गठन हुआ। 1966 में MNF ने आज़ादी के लिए सशस्त्र अभियान शुरू किया दो दशकों तक राजनीतिक हिंसा हुई। MNF ने गुरिल्ला युद्ध लड़ा। 1986 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी और लालडेंगा के बीच समझौता हुआ। इस समझौते के तहत मिज़ोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। नागालैंड में नागा नेशनल काउंसिल ने नागाओं की संप्रभुता के लिए सशस्त्र संघर्ष शुरू किया। असम में बाहरी लोगों के खिलाफ बड़ा आंदोलन हुआ। इस आंदोलन में कई दुखद और हिंसक घटनाएं हुई।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–11

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा : 12वीं

राजनीतिक विज्ञान

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश—इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper-1 देखें।

खंड—क

1. (ख) रूस एक नई महाशक्ति के रूप में उभरा।
2. (ख) आसियान सदस्यों के बीच एक अनौपचारिक और सहयोगात्मक बातचीत है।
3. (ख) डेनमार्क और स्वीडन।
4. (घ) नरेंद्र मोदी।
5. (घ) नेपाल सदैव भारत की नीतियों का अनुसरण करता है।
6. (ख) (*iii*), (*ii*), (*iv*), (*i*).
7. (ख) न्यूयॉर्क।
8. (ग) प्रौद्योगिकी की उन्नित।
9. (ग) (*i*) और (*ii*).
10. (ख) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
11. (क) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
12. (A) – (*iii*), (B) – (*ii*), (C) – (*iv*), (D) – (*i*)

खंड—ख

13. गोर्बाचेव ने निम्नलिखित दो सुधार शुरू किए—

    (*i*) पेरेस्त्रोइका :- इसका अर्थ है पुनर्गठन

    (*ii*) ग्लासनोस्त :- इसका अर्थ है खुलापन।

14. दक्षिण एशिया के देशों के नाम—

    (1) दक्षिण एशिया में आमतौर पर बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका (साथ ही अफगानिस्तान) शामिल हैं।

    शांति और सहयोग बढ़ाने का एक तरीका—

    (2) शांति और सहयोग को बढ़ाया जा सकता है सार्क जैसे संगठनों और साफ्टा जैसे पहलों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

15. (1) वैश्वीकरण हमारे घर पर हमारे खाने-पीने, पहनने ओढ़ने और सोचने के तरीके को प्रभावित करता है।

    (2) वैश्वीकरण हमारी प्राथमिताओं को आकार देता है।

16. मुस्लिम लीग द्वारा प्रतिपादित द्वि-राष्ट्र सिद्धांत के अनुसार भारत को संस्कृति, राजनीति, धर्म, अर्थव्यवस्था और समाज के आधार पर दो समुदायों, हिंदू और मुस्लिम में विभाजित किया गया है। इस सिद्धांत के अनुसार मुसलमानों के लिए एक अलग देश, पाकिस्तान की मांग की गई थी।
17. विकास के दो मॉडल उदारवादी हैं—पूंजीवादी मॉडल और समाजवादी मॉडल। समाजवादी मॉडल को भारत ने अपनाया।
18. चौथे आम चुनाव (1967) के नतीजों ने कांग्रेस को राष्ट्रीय और राज्य दोनो स्तरों पर झटका दिया। हालाँकि कांग्रेस ने लोकसभा में बहुमत हासिल कर लिया। लेकिन 1952 के बाद से यह उसकी सबसे कम सीटें थी। कांग्रेस ने सात राज्यों में बहुमत खो दिया। दो अन्य राज्यों में दलबदल ने उसे सरकार बनाने से रोक दिया।

खंड—ग

19. पारंपरिक सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग की बहुत आवश्यकता है और यह बहुत आवश्यक भी है। अब यह लगभग स्वीकार किया जाने वाला तथ्य है कि युद्ध से बचना चाहिए। आत्मरक्षा के अलावा किसी को भी व्यर्थ में मारना या चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। सुरक्षा के पारंपरिक दृष्टिकोण निरस्त्रीकरण, शस्त्र नियंत्रण और विश्वास निर्माण की ओर ले जाते हैं शस्त्र नियंत्रण या निरस्त्रीकरण का अर्थ है कि सभी राज्य कुछ प्रकार के हथियारों को छोड़ दे। उदाहरण के लिए 1972 में BWC (जैविक हथियारों सम्मेलन) और 1992 में CWC (रासायनिक हथियार सम्मेलन) ने इन हथियारों के उत्पादन के साथ-साथ उनके कब्जे पर भी प्रतिबंध लगा दिया। 155 से अधिक राज्यों ने CWC और BWC के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। साथ ही पारंपरिक सुरक्षा के माध्यम से देश अपने प्रतिद्वंद्वियों के साथ विचारों और सूचनाओं को सांझा करते हैं और दूसरे प्रतिद्वंद्वियों को धमकाने के लिए युद्ध न करने के लिए विश्वास

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

निर्माण करते हैं। पारंपरिक सुरक्षा में बल शांति बनाए रखने और सुरक्षा प्राप्त करने दोनों के लिए होता है।

अथवा

(*i*) भारत ने अगस्त 2002 में 1997 के क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए और उसका अनुसमर्थन किया। जून 2005 में जी-8 बैठक में भारत ने बताया कि विकासशील देशों की प्रति व्यक्ति उत्सर्जन दर विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है।

(*ii*) विकसित देशों को विकासशील देशों को उनकी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में सहायता करनी चाहिए।

(*iii*) भारत प्राकृतिक गैस का आयात कर रहा है। स्वच्छ ईंधन नीति अपनाने को प्रोत्साहित कर रहा है।

20. वैश्वीकरण के खिलाफ जो तर्क दिए गए हैं वे इस प्रकार हैं—

(1) समकालीन वैश्वीकरण वैश्विक पूंजीवाद के एक विशेषचरण का प्रतिनिधित्व करता है जो अमीरों को अमीर बनाता है और गरीबों को गरीब बनाता है। यह तर्क वामपंथियों द्वारा दिया गया है।

(2) चूंकि वैश्वीकरण ने राज्य को कमज़ोर कर दिया है इसलिए वह गरीबों के हितों की रक्षा करने में असमर्थ है।

(3) वैश्वीकरण का विचार आत्मनिर्भरता और संरक्षणवाद के विपरीत है।

(4) जैसे कि यूएनएफसीसीसी में निहित है भारत सरकार पहले से ही कई कार्यक्रमों के माध्यम से वैश्विक प्रयासों में भाग ले रही है। 2003 का विद्युत अधिनियम अक्षय ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करता है।

अथवा

इसका अर्थ है मानव अधिकार के क्षेत्र में योगदान करना।

(1) मानव अधिकार वॉच एक ग़ैर-सरकारी संगठन है जो मानवाधिकारों पर अनुसंधान और वकालत में काम करता है।

(2) इसने वैश्विक मीडिया का ध्यान मानवाधिकार हनन की ओर आकर्षित किया है।

(3) इसने बारूदी सुरंगों पर प्रतिबंध लगाने के अभियान जैसे अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन बनाने में मदद की।

(4) यह बाल सैनिकों के प्रयोग को रोकता है तथा अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की स्थापना करता है।

21. 15 मई, 1999 को एकता और सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास में, भाजपा और उसके सहयोगी दलों जिसमें डीएमके और भारतीय लोकदल शामिल थे, ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए एक सांझा घोषणापत्र के साथ एक राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन बनाया। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने एक स्थिर, ईमानदार, पारदर्शी और कुशल सरकार देने का वादा किया जो सर्वांगीण विकास करने में सक्षम हो। 13वें लोकसभा चुनाव में एनडीए को 297 सीटें मिली। एनडीए ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी को अपना नेता चुना और उनके नेतृत्व में सरकार बनी। 14वें लोकसभा चुनाव में एनडीए को 186 सीटें मिली। 15वें लोकसभा चुनाव में एनडीए को 159 सीटें मिली। 2024 में 16वें लोक सभा चुनाव नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुए।

22. 14-15 अगस्त, 1947 को एक नहीं बल्कि दो राष्ट्र-राज्य अस्तित्व में आए, भारत और पाकिस्तान। यह ब्रिटिश भारत के भारत और पाकिस्तान में विभाजन के कारण हुआ था। भारत के विभाजन के परिणाम निम्नलिखित थे—

1. **जनसंख्या का स्थानांतरण और लोगों की हत्या—** विभाजन का पहला परिणाम मानव इतिहास में सबसे बड़ा अनियोजित और दुखद जनसंख्या स्थानांतरण था। सीमा के दोनों ओर बड़े पैमाने पर हत्याएं और अत्याचार हुए। धर्म के नाम पर एक समुदाय के लोगों ने दूसरे समुदाय के लोगों को मार डाला।

   अल्पसंख्यकों को अपने घर छोड़कर सीमा पार जाने के लिए मज़बूर होना पड़ा। यहां तक कि अपनी यात्रा के दौरान भी उन पर अकसर हमला किया गया, उन्हें मार दिया गया और लूट लिया गया। दोनों तरफ हज़ारों महिलाओं का बलात्कार किया गया, उनका अपहरण किया गया और हत्या कर दी गई।

   विभाजन के कारण लगभग 80 लाख लोगों को नई सीमा पार करनी पड़ी। विभाजन के कारण पांच लाख से अधिक लोग मारे गए।

2. **शरणार्थियों की समस्या—**विभाजन का एक और परिणाम ''शरणार्थियों की समस्या थी।'' सीमा पार करने वाले लोगों को पता चला कि उनके पास कोई घर नहीं है। लाखों लोगों के लिए आज़ादी का मतलब शरणार्थी शिविरों में जीवन जीना था भारतीय नेतृत्व और भारत सरकार को इस तात्कालिक और अप्रत्याशित समस्या का सामना करना पड़ा। शरणार्थियों की समस्या इतनी गंभीर थी कि सरकार को इसे सुलझाने में कई साल लग गए।

3. **संपत्ति और वित्तीय परिसंपत्तियों का बंटवारा—**बंटवारे का मतलब संपत्ति, देनदारियों और वित्तीय परिसंपत्तियों का बंटवारा भी था सरकार और रेलवे के कर्मचारियों को भी बांटा गया।

4. **अल्पसंख्यकों की समस्याएँ—**मुसलमानों के बड़े पैमाने पर पाकिस्तान चले जाने के बाद भी भारत की कुल आबादी में लगभग 12 प्रतिशत मुसलमान थे। भारत सरकार के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि मुस्लिम अल्पसंख्यकों और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों से कैसे निपटा जाए।

5. **व्यापारिक नेटवर्क में व्यवधान—**विभाजन के आर्थिक नुकसान के बारे में सभी जागरूकता और सभी एहतियाती उपायों के बावजूद भारत और पाकिस्तान के निर्माण ने मौजूदा व्यापारिक नेटवर्क को बाधित कर दिया। उदाहरण

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

के लिए विभाजन का प्रभाव जूट उद्योग के लिए विनाशकारी था।

6. **राज्यों का पुनर्गठन**—विभाजन के कारण बंगाल की पूर्वी बंगाल को (अब बांग्लादेश) और पश्चिम बंगाल में विभाजित किया गया। इस तरह, पंजाब को पश्चिम पाकिस्तान के पंजाब प्रांत और भारतीय राज्य पंजाब में विभाजित किया गया।

23. वैश्वीकरण के परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) इससे दुनिया के विभिन्न देशों में वस्तुओं, पूंजी, लोगों और विचारों का प्रवाह हुआ है जिससे आर्थिक विकास और लोगों की बेहतर भलाई हुई है।

(2) खान-पान की आदतें, पहनावे की आदत तथा संगीत और फिल्मों में रुचि में बदलाव आया है।

(3) उपग्रहों के उद्‌भव जैसी प्रौद्योगिकी के आविष्कार ने संचार में क्रांति ला दी है। विश्व के विभिन्न भागों के बीच समन्वय बढ़ रहा है।

(4) समरूप संस्कृति विकसित हो रही है।

(5) कुछ आलोचकों का तर्क है कि वैश्वीकरण के कारण सरकार की कार्य करने की क्षमता कम हो गई है और इस प्रकार कल्याणकारी राज्य का पतन हो गया है उनके अनुसार बाज़ार और बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वैश्वीकरण की शुरुआत कर दी है।

(6) विभिन्न देशों की स्वदेशी संस्कृति चुनौतियेम और खतरों का सामना कर रही है।

खंड—घ

24. (A) (ग) 1999.

(B) (ख) बी० जे० पी०।

(C) (घ) 296.

(D) (क) नरेंद्र मोदी।

25.

प्रयुक्त जानकारी की क्रम संख्या	मानचित्र में संबंधित वर्णमाला	देश/राज्य का नाम
(*i*)	C	चीन
(*ii*)	D	पाकिस्तान
(*iii*)	A	बांग्लादेश
(*iv*)	B	अरुणाचल प्रदेश

26. (*i*) शांति, मित्रता और सहयोग की भारत-सोवियत संधि, 1971.

(*ii*) शांति, मित्रता सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद भी भारत एक गैर-देश बना रहा

(*iii*) भारत सोवियत मित्रता पर हस्ताक्षर किये गये। भारत की प्रतिद्वंदी ताकतें जैसे पाकिस्तान।

खंड—ङ

27. 'आसियान मार्ग' आसियान सदस्यों के बीच अनौपचारिक और सहयोगत्मक बातचीत का एक रूप है।

आसियान समुदाय के स्तंभ : 2003 के शिखर सम्मेलन में आसियान ने यूरोपीय संघ की तर्ज पर एक समुदाय स्थापित करने का निर्णय लिया। आसियान समुदाय में तीन स्तंभ शामिल हैं—

(1) आसियान सुरक्षा समुदाय (2) सदस्य आसियान समुदाय और (3) आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय

(1) **आसियान सुरक्षा समुदाय का उद्देश्य**—आसियान सुरक्षा समुदाय का मुख्य उद्देश्य यह है कि क्षेत्रीय विवाद सशस्त्र टकराव में न बदल जाएं।

(2) **आसियान आर्थिक समुदाय के उद्देश्य**—आसियान आर्थिक समुदाय का मुख्य उद्देश्य आसियान राज्यों के बीच एक साझा बाज़ार और उत्पादन क्षमता का निर्माण करना है।

(3) **आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय का उद्देश्य**—आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय का मूख्य उद्देश्य आसियान राज्यों के भीतर सामाजिक-संस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ाना है।

आसियान विज़न 2020 के घटक

आसियान की स्थापना 1967 में इस क्षेत्र के पाँच देशों द्वारा की गई थी। आसियान का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास को गति देना था। आसियान तेज़ी से एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र संगठन के रूप में विकसित हो रहा है। इनके विजन 2020 ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में आसियान के लिए एक बाहरी भूमिका को परिभाषित किया है। अपने विजन 2020 में आसियान ने उम्मीद जताई है कि यह अर्थव्यवस्था में बहुत मज़बूत हो जाएगा और यह अंतर्राष्ट्रीय मामलों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम होगा। आसियान क्षेत्र में संघर्षों को हल करने के लिए बातचीत को प्रोत्साहित करेगा। यह सहयोग और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित करेगा। आसियान संप्रभु अधिकारों के सम्मान को प्रोत्साहित करेगा।

सदस्य देशों के बीच यह मध्यस्थ की भूमिका निभायेगा राज्यों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए आसियान कम्बोडियाई संघर्ष के अंत की चिंता में पूर्व पश्चिमी तिमोर संकट आदि।

अथवा

जलवायु परिवर्तन हमारे लिए एक खतरनाक समस्या बन गया है। जलवायु परिवर्तन का मतलब है तापमान और वर्षा जैसी औसत स्थितियों में बदलाव। किसी क्षेत्र में लंबे समय तक जलवायु परिवर्तन जलवायु परिवर्तन की वैश्विक घटना है। जो ग्रह के सामान्य जलवायु में तापमान वर्षा और हवा के संबंध में होने वाले परिवर्तनों की विशेषता है। जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप पृथ्वी का मौसम असंतुलित हो रहा है साथ-ही-साथ पृथ्वी का भविष्य भी खतरे में है। मानव जाति और

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिए जलवायु परिवर्तन के लिए कृपया प्रश्न संख्या 3 देखें।

28. सुरक्षा परिषद् संयुक्त राष्ट्र का सबसे महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली अंग है। इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की कार्यकारी शाखा भी माना जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है। इसमें 15 सदस्य होते हैं जिनमें से पांच सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य होते हैं। स्थायी सदस्य अमेरिका, ब्रिटेन, चीन गणराज्य, फ्रांस और रूस हैं। दस सदस्य अस्थायी होते हैं। इन अस्थायी सदस्यों को महासभा द्वारा दो साल की अवधि के लिए चुना जाता है। कोई भी राज्य लगातार दो कार्यकाल के लिए निर्वाचित सदस्य नहीं हो सकता।

(1) **आर्थिक रूप से मज़बूत**—संयुक्त राष्ट्र परिषद् के स्थायी सदस्य के लिए सदस्य राष्ट्र को आर्थिक रूप से समृद्ध और समृद्ध होना चाहिए।

(2) **सैन्य रूप से मज़बूत**—एक राष्ट्र जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता की इच्छा रखता है स्थायी सदस्य को सैन्य दृष्टि से मज़बूत होना चाहिए ताकि वह राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में निर्णायक भूमिका निभा सकें।

(3) तीसरा, इच्छुक राष्ट्र को संयुक्त राष्ट्र संघ के कामकाज के लिए अधिकतम बजट का भुगतान या योगदान करना चाहिए।

(4) जनसंख्या की दृष्टि से एक बड़ा राष्ट्र।

(5) लोकतांत्रिक देश जिसमें लोकतंत्र और मानवाधिकारों के प्रति बहुत सम्मान हो।

(6) किसी देश की परिषद् को भूगोल, आर्थिक प्रणाली और संस्कृति के संदर्भ में विश्व की विविधता का अधिक प्रतिनिधि बनाना होगा।

अथवा

आतंकवाद में वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ग़ैरकानूनी गतिविधियाँ शामिल हैं। आतंकवाद से तात्पर्य हिंसा से है जो जानबूझकर और अंधाधुंध तरीके से नागरिकों को निशाना बनाती है। बम विस्फोट, अपहरण, मानव बम हत्या आदि सभी आतंकवाद के कार्य हैं। आमतौर पर नागरिकों को जनता के बीच आतंक और सांप्रदायिक हिंसा पैदा करने के लिए निशाना बनाया जाता है। आजकल, न केवल नागरिक बल्कि सशस्त्र कर्मियों पर भी आतंकवाद हमला करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए बहुत गंभीर खतरा बन गया है। आतंकवाद का लोकतांत्रिक और संवैधानिक तरीकों में कोई विश्वास नहीं है। हथियारों के व्यापार और हथियारों के हस्तांतरण के प्रसार ने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के जन्म के लिए एक अच्छी ज़मीन प्रदान की।

आतंकवाद खतरे का नया स्रोत—

(1) आतंकवाद हिंसा का एक संगठित, योजनाबद्ध और जानबूझकर किया गया कार्य है।

(2) आतंकवाद ग़ैरकानूनी, अमानवीय और असंवैधानिक है।

(3) आतंकवाद का लोकतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों में कोई विश्वास नहीं है।

(4) आतंकवाद नागरिकों और सशस्त्र कर्मियों के विरुद्ध निर्देशित है।

(5) आतंकवाद राजनीति से प्रेरित हिंसा है अर्थात सरकार के विरुद्ध।

(6) आतंकवाद ब्लैकमेलिंग का एक हथियार है आतंकवादी सरकार को अपनी ग़ैरकानूनी मांगें मानने के लिए मज़बूर करते हैं।

29. क्षेत्रीय मांगों को समायोजित करना और भाषाई आधार पर राज्यों का गठन भी अधिक लोकतांत्रिक माना जाता था। इसी कारण स्वतंत्रता के बाद, भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग की गई। प्रधानमंत्री नेहरू ने इस मुद्दे पर निष्पक्ष विचार-विमर्श के लिए 2 दिसंबर, 1953 को लोकसभा में राज्य पुनर्गठन आयोग की नियुक्ति की घोषणा की। आयोग ने भाषा और संस्कृति के आधार पर भी राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की। राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट पर विचार करने के बाद केंद्र सरकार ने 1956 में लोकसभा में राज्य पुनर्गठन विधेयक पेश किया, जिसे कुछ संशोधनों के बाद पारित कर दिया गया। राज्यों के पुनर्गठन के बाद भारतीय संघ में 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश शामिल हो गए। इसके बाद गुजरात और मराठी भाषा को लेकर अंदरूनी कलह हुई जिसके परिणामस्वरूप बॉम्बे-महाराष्ट्र और गुजरात का विभाजन हुआ। 1961 में नागालैंड राज्य अस्तित्व में आया।

इस कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए गए हैं—

(1) सभी क्षेत्रों के क्षेत्रीय और भाषाई दावों को स्वीकार करने से विभाजन और अलगाव के खतरे कम हो जाएंगे।

(2) भाषाई पुनर्गठन ने राज्य की सीमाओं के निर्धारण के लिए एक समान आधार प्रदान किया। देश के विघटन के बजाय, इसने राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में मदद की।

(3) भाषाई राज्यों ने भी विविधता के सिद्धांत को स्वीकार किया। लोकतंत्र को अपनाने का मतलब है कि भारत ने मतभेदों के अस्तित्व को पहचानने और स्वीकार करने का विकल्प चुना। लोकतंत्र विचारों और जीवन के तरीकों की बहुलता से जुड़ा था।

अथवा

हमारे देश में लोकतांत्रिक राजनीति के पहले चरण में विपक्षी दलों की भूमिका काफ़ी अनोखी थी। तब भी भारत में कई अन्य बहुदलीय लोकतंत्रों की तुलना में बड़ी संख्या में विविध और जीवंत विपक्षी दल थे।

आज़ादी के बाद भारतीय राजनीति में कांग्रेस पार्टी का दबदबा रहा। पहले तीन चुनावों में कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा में दो तिहाई से ज़्यादा सीटें हासिल कीं। फिर भी लोकसभा में कई विपक्षी दल उभरें। हालाँकि लोकसभा में कोई आधिकारिक

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

और मान्यता प्राप्त विपक्ष नहीं था। फिर भी कई छोटे-छोटे विपक्षी दल थे जिन्होंने व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र की अहम् भूमिका निभाई। आज की लगभग सभी ग़ैर-कांग्रेसी पार्टियों की जड़ें 1950 के दशक की किसी-न-किसी विपक्षी दल पार्टी में देखी जा सकती है। यद्यपि विपक्षी दलों का लोकसभा में नाममात्र का प्रतिनिधित्व था फिर भी विपक्षी नेता अपनी स्थिति और व्यक्तित्व के कारण बहुत प्रभावी थे। विपक्षी दलों ने कांग्रेज पार्टी की नीतियों की आलोचना की और सत्तारूढ़ दल को नियंत्रण में रखा। विपक्षी दल स्वस्थ और सकारात्मक आलोचना में विश्वास करते हैं। इस प्रकार, विपक्षी दलों ने व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

30. 1979 से 1985 तक चला असम आंदोलन 'बाहरी लोगों' के खिलाफ आंदोलन का सबसे अच्छा उदाहरण है। इस आंदोलन के कुछ कारण इस प्रकार हैं—

(1) वे बंगालिया और अन्य बाहरी लोगों के सांस्कृतिक वर्चस्व के खिलाफ हैं।

(2) वे त्रुटिपूर्ण मतदाता रजिस्टरों के खिलाफ है जिनमें लाखों अप्रवासियों के नाम शामिल है।

(3) आंदोलन में विभिन्न तरीके अपनाए गए और असमिया जनता के सभी वर्गों को संगठित किया गया।

(4) 6 वर्षों की उथल-पुथल के बाद राजीव गांधी के नेतृत्व वाली सरकार ने 1985 में AASU नेताओं के साथ बातचीत की।

(5) इसके बाद, आसू ने खुद को मूल राजनीतिक दल के रूप में संगठित किया और उनकी समस्याओं को हल करने और 'स्वर्णिम असम' बनाने के वादे के साथ सत्ता में आया।

(6) उन्हें नौकरी छूटने और गरीबी फैलने का डर है।

अथवा

भारतीय राजनीति में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओ.बी.सी) का उदय एक महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम है जिसने देश के राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया है। ओबीसी सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित जातियों और समुदायों का एक विविध समूह है जिन्हें पारंपरिक रूप से राजनीतिक सत्ता और प्रतिनिधित्व से बाहर रखा गया है यहां तीन कारक दिए गए हैं जिनके कारण भारतीय राजनीति में ओबीसी का उदय हुआ।

1. **मंडल आयोग की रिपोर्ट**—भारत में सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों की पहचान करने और उनकी स्थिति में सुधार के उपायों को सिफारिश करने के लिए 1979 में मंडल आयोग का गठन किया गया था।
2. **कांग्रेस पार्टी का पतन**—भारतीय राजनीति पर हावी रही कांग्रेस पार्टी के पतन ने क्षेत्रीय और जाति-आधारित दलों के उदय के लिए जगह बनाई जो ओबीसी के हितों का प्रतिनिधित्व करते थे।
3. **सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन**—स्वतंत्रता के बाद भारत में हुए सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों, जैसे हरित क्रांति और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के विस्तार ने ओबीसी के लिए अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने के नए अवसर पैदा किए। ओबीसी इन अवसरों का लाभ उठाने में सक्षम थे और अधिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व और राजनीति में हिस्सेदारी की मांग करने लगे।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.